ओ३म्

पाक्षिक

परोपकारी

ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

परोपकारिणी

वर्ष - ५६ अंक - ११ महर्षि दयानन्द की स्थानापन्न परोपकारिणी सभा का मुखपत्र जून (प्रथम) २०१४

महर्षि दयानन्द सरस्वती

नवनिर्वाचित सांसद
स्वामी सुमेधानन्द जी
को समस्त आर्यजनों
की ओर से
हार्दिक बधाई

नवनिर्वाचित सांसद
डॉ. सत्यपाल सिंह जी
को समस्त आर्यजनों
की ओर से
हार्दिक बधाई

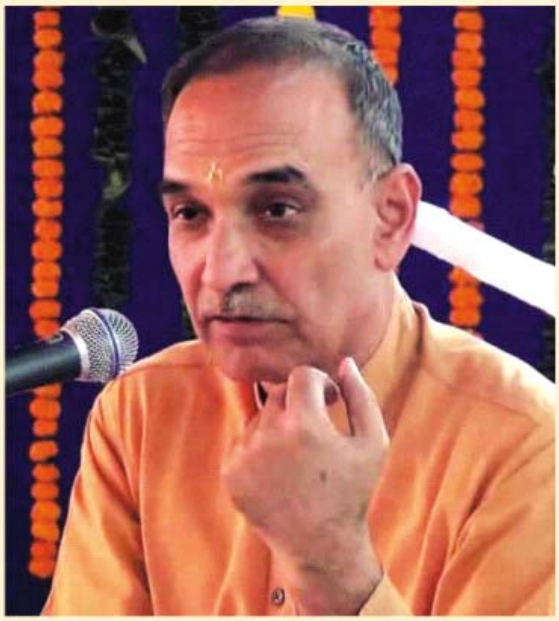

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा का मुख पत्र

वर्ष : ५६ अंक : ११
दयानन्दाब्द: १९०
विक्रम संवत्: ज्येष्ठ शुक्ल, २०७१
कलि संवत्: ५११५
सृष्टि संवत्: १,९६,०८,५३,११५

सम्पादक
प्रो. धर्मवीर

प्रकाशक-परोपकारिणी सभा,
केसरगंज, अजमेर- ३०५००१
दूरभाष: ०१४५-२४६०१६४

मुद्रक-श्री मोहनलाल तँवर
वैदिक यन्त्रालय, अजमेर।
दूरभाष : ०१४५-२४६०८३१

-परोपकारी का शुल्क-
भारत में
वार्षिक-२०० रु., **द्विवार्षिक**-३९० रु., **त्रिवार्षिक**-५८० रु., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-२००० रु.।

विदेश में
वार्षिक-५० यू.के. पाउण्ड/८० यू.एस. डालर, **द्विवार्षिक**-९५ पा./१५२ डा., **त्रिवार्षिक**-१४० पा./२२५ डा., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-५०० पा./८०० डा.।

वैदिक पुस्तकालय : ०१४५-२४६०१२०
ऋषि उद्यान : ०१४५-२६२१२७०

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र अजमेर ही होगा।

ओ३म्

विद्याविलासमनसो धृतशीलशिक्षा:,
सत्यव्रता रहितमानमलापहारा:।
संसारदु:खदलनेन सुभूषिता ये,
धन्या नरा विहितकर्म परोपकारा:।।

RNI. No. ३९५९ / ५९

अनुक्रम

१. भारतं उन्नय-यशो लभस्व	सम्पादकीय	०४
२. सुदृष्टि में कुदृष्टि व कुदृष्टि में सुदृष्टि	स्वामी विष्वङ्	०७
३. कुछ तड़प-कुछ झड़प	राजेन्द्र जिज्ञासु	१०
४. सृष्टि-हमारी दृष्टि में	गंगाप्रसाद उपाध्याय	१७
५. आर्य समाज द्वारा ऋषि निर्वाण...	संजय शास्त्री	२०
६. सम्बन्ध-कितने आत्मीय, कितने....	सुकामा आर्या	२४
७. हर्षिता और उसकी प्यारी नानी	उपासना सियांग	२६
८. भूत फैशन का	रमेश मुनि	२९
९. वैदिक पुस्तकालय के प्रकाशन		३१
१०. जिज्ञासा समाधान-६४	आचार्य सोमदेव	३३
११. पुस्तक - समीक्षा		३५
१२. संस्था-समाचार		३७
१३. आर्यजगत् के समाचार		४०

www.paropkarinisabha.com
email : psabhaa@gmail.com
- उपनिषद्, दर्शन, प्रवचन आदि सुनने हेतु बटन दबाएं -
www.paropkarinisabha.com → Daily Pravachan

सम्पादकीय

भारतं उन्नय-यशो लभस्व

भारत का मस्तक ऊँचा करो- यशस्वी बनो

इस देश के पहले हिन्दू प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी हैं। इस देश में प्रथम हिन्दू राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद थे। इस देश के एक हिन्दू गृहमन्त्री सरदार पटेल थे। इस देश के पहले प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी हैं जिनको अपने हिन्दू होने और कहलाने पर गर्व है। मोदी पहले व्यक्ति हैं जिन्होंने जीतने के बाद घोषणापूर्वक गंगा की आरती में भाग लिया, जहाँ पहले लोग दरगाह और मजारों पर चादर चढ़ा कर अपनी सफलता की आशा करते थे, वे लोग ऐसा समझते थे कि ऐसा करके अल्पसंख्यक मत पाकर ही सत्ता पाई जा सकती है। परन्तु मोदी ने सिद्ध कर दिया कि देश की बात करके, देशवासियों की बात करके ही इस देश का सम्मान बढ़ाया जा सकता है। देश का सम्मान बढ़ने से ही देशवासियों का सम्मान बढ़ेगा। संसद के केन्द्रीय कक्ष का दृश्य कौन भूल सकता है जब मोदी के सम्मान में आडवाणी जी ने कहा- उन्होंने कृपा करके पार्टी को विजय दिलाई है। मोदी का उत्तर इतिहास की पंक्तियों में अमर रहेगा। मोदी ने कहा- मेरे लिये यह शब्द कभी भी उचित नहीं हो सकता, मैं भारत माँ की सन्तान हूँ, कोई सन्तान माँ पर कृपा नहीं कर सकता, वह तो केवल समर्पित होकर सेवा कर सकता है। जैसे भारत मेरी माँ है, वैसे ही मेरी पार्टी भी मेरी माँ है। मैं उस पर कृपा नहीं समर्पण पूर्वक सेवा कर रहा हूँ। आज मैं ऊँचा हूँ तो अपने बड़ों के कन्धों पर बैठकर ऊँचा हुआ हूँ, यह उनकी कृपा है। मोदी ने संसद में प्रवेश करते समय संसद भवन की चौखट पर मस्तक झुका कर प्रणाम किया। यहाँ संसद में भारतीयता की आत्मा ने प्रवेश किया। कलतक जो मोदी से चाय की दुकान लगवा रहे थे, जो मोदी को गली का रामू-श्यामू बताकर उपहास कर रहे थे, सम्भवत: उन्हें देश के रामू-श्यामू की योग्यता का अनुमान नहीं था।

नरेन्द्र मोदी हैं जो इस देश की पूरी १२५ करोड़ जनता के हितों की बात करते हुए यह कहने का साहस करते हैं कि मैं अपने धर्म पर आचरण करता हूँ और सभी धर्मों का आदर करता हूँ। किसी को प्रसन्न करने के लिए पक्षपात नहीं करुँगा और दूसरे विचार को मानता हूँ इसलिए उसके साथ अन्याय नहीं होने दूँगा। इससे पहले बहुत प्रधानमन्त्री बने, हिन्दू भी थे, ईसाई भी। इस देश की सरकार में पहले ईसाई फिर वह कांग्रेसी, कम्युनिस्ट या कुछ और, इसी प्रकार कोई मुसलमान पहले अपने को मुसलमान मानता है फिर कांग्रेसी, कम्युनिस्ट समाजवादी या कुछ और, किन्तु हिन्दू की एक विडम्बना थी जब राजनीति या सत्ता में आता है तो कांग्रेसी, कम्युनिस्ट, समाजवादी, बहुजन समाजवादी कुछ भी बन जाता था परन्तु उसे अपना हिन्दू होने को छिपाने की इच्छा होती थी। भले ही मोदी के हिन्दूपन को अच्छा-बुरा कह सकते हैं पर हिन्दू होने के गर्व की प्रशंसा ही करनी पड़ेगी।

मोदी का हिन्दू होना इस देश के लिए अधिक महत्त्व की बात इसलिए है कि हमारा देश अन्तर्राष्ट्रीय षडयन्त्रों का केन्द्र बना हुआ है। सभी अन्तर्राष्ट्रीय देश भारत को तोड़ने के लिए यहाँ के समाज को तोड़ना चाहते हैं। समाज तोड़ने के लिए विचारधारा को तोड़ना होता है। अत: सारे प्रयासों का केन्द्र हिन्दू समाज बन गया है। सोनिया गाँधी और गाँधी परिवार ने नाम भले ही हिन्दू रखा हो परन्तु वे हैं ईसाई मतानुयायी और चर्च के आदेशों का सम्मान करने वाले हैं। सोनिया की सरकार ने इस देश में भी वही किया जो चर्च और विदेशी शक्तियाँ करना चाहती थीं। यदि यह चुनाव मोदी नहीं जीतते तो चर्च जीतता और अगले पाँच वर्ष में यह देश अपनी विचारधारा का देश नहीं रह पाता। यह चुनाव राजनीति में क्या अर्थ रखता है यह तो समाचार पत्र, संचार साधन और राजनीतिक लोग करेंगे परन्तु धार्मिक और सामाजिक बुद्धिजीवियों के लिए सन्तोष की बात है कि यह देश और हिन्दू समाज षड़यन्त्रों का शिकार होने से बच गया।

मोदी देश का आर्थिक विकास करेंगे। देश को नई तकनीक और सम्पन्नता देंगे, ऐसे लोगों के लिए प्रसन्नता का अवसर दूर है परन्तु जो लोग देश और समाज को बचाने के प्रयास में लगे थे, मोदी के रूप में वे अपने प्रयास में सफल हुए हैं, यह उनके लिए सन्तोष की बात है। दूसरा जो महत्त्वपूर्ण तथ्य है जब कुछ लोग सोचते हैं कि पता नहीं मोदी वह कर भी पायेगा या नहीं जिस आशा और विश्वास से इस देश की जनता ने मोदी को चुना है, उनके

लिए समझने की बात है जनता की शक्ति का जनता द्वारा सफलता पूर्वक उपयोग किया जाना, क्या यह कम महत्त्वपूर्ण बात है? एक बार यह मान भी लिया जाय कि जैसे पिछले बुरे थे वैसे ही अगले भी होंगे तो भी चोर की समझ में आ जायेगा कि सत्ता में रहने के लिए चोर होकर सत्ता में तभी रह जा सकता है जब जनता चाहेगी। चोर को यह अनुभव कराना की जनता की शक्ति कितनी बड़ी है, यह नये के लिए भी वैसी ही चेतावनी है।

आशा की है आशा करनी चाहिए कि देश का भविष्य उज्ज्वल है। आज एक ऐसा अवसर आया है जो हिन्दू प्रधानमन्त्री के लिए सन्देश देने के अवसर हैं, देश की धरोहर संस्कृत साहित्य में ये मूल्यवान पंक्तियाँ हैं जो इस देश की संस्कृति को अपनी संस्कृति मानता हो उसी के लिये बाणभट्ट ने कादम्बरी में चन्द्रापीड़ के बहाने से राजा के लिए लिखा था–

अवनमय द्विषतां शरांसि उन्नमय बन्धुवर्गम्। ....
पुनर्विजयस्व वसुन्धराम् आरुढ प्रतापो हि राजा
त्रैलोक्यदर्शीव सिद्धादेशो भवति।

अर्थात् देश का मस्तक ऊँचा हो, शत्रुओं की पराजय हो, भारत देश की पताका संसार में विजय को प्राप्त हो क्योंकि जिसका प्रताप होता है, उसके संकल्प भी स्वत: पूर्ण होते हैं।

आज स्वतन्त्र भारत के इतिहास में पहला अवसर है इस देश का नागरिक गर्व से सिर ऊँचा उठाकर चल सकता है। आज विदेशी शक्तियों को भी अनुभव हो रहा है कि उनसे इस देश के मूल्याकंन में भूल हुई है। जो प्रजातन्त्र का नाम जपते हुए भी घोर साम्प्रदायिक हैं और इसीकारण भारत का अहित करते हैं ऐसे लोगों को अपनी भूल समझ में आ रही है। आज यूरोप और इंग्लैण्ड ने इस बात को अनुभव किया और मोदी के दरवाजे पर प्रणाम करने की आवश्यकता समझी। आश्चर्य है अमेरिका जैसा देश विश्व को नेतृत्व देने की बात करता है, न्याय और मानवता की बात करता है, उसे अनुभव होगा कि उसका दावा कितना खोखला है। वह संसार के धर्मों में समानता की बात करता है दूसरी ओर अपनी सरकार से ईसाईयत की सुरक्षा और प्रचार के कार्य कराता है। अमेरिकी कानून में दो कानून उसके इस पाखण्ड से भरे हुए कार्यों को करने के लिए काम में आते हैं। एक है धर्म स्वातन्त्र्य विधेयक, इसकी आड़ में वह संसार में विभिन्न देशों की व्यवस्था में हस्तक्षेप करता है, वहाँ की सरकारों को दोषी ठहराता है। उसके आधार पर वह सरकारों को दण्डित भी करता है। उनका अनुदान रोकता है, किसी का वीजा रोकता है, विश्व में ऐसे लोगों को बदनाम करता है। विचार करने की बात है, अमेरिका अपने देश में अपने लोगों के साथ होने वाले न्याय-अन्याय का विचार करने का अधिकार रखता है परन्तु दूसरे देश की अखण्डता और स्वतन्त्रता का उल्लंघन कैसे कर सकता है, क्या भारत को ये अधिकार नहीं होना चाहिए कि किसी देश में धर्म व मानवता के अधिकार के हनन पर भारतीय कानून से विचार हो और ओबामा की सरकार को अपराधी बताया जाय? क्या अमेरिका ने धार्मिक सुरक्षा के नाम पर सीरिया में शासकों को कुछ कहने का साहस किया। दूसरे इस्लामिक और ईसाई देशों में हिन्दुओं और दूसरे धर्मों के मानने वालों पर हुए अन्याय के बारे में कार्यवाही नहीं की परन्तु भारत में कार्यवाही करते हुए इतनी सामान्य बात का भी विचार नहीं किया कि ऐसा करके अमेरिका पर पक्षपात और एक तरफा कार्यवाही का दोष लगेगा। इतना ही नहीं आज की परिस्थिति में उसे सिर झुकाना भी पड़ेगा क्योंकि उसने यह कदम केवल इसलिए उठाया था जिससे उस पर यह आरोप न लगे कि वह केवल ईसाई लोगों के लिए धर्म स्वातन्त्र्य की बात करता है। इस कार्यवाही से केवल मुसलमान प्रसन्न हो जायेंगे। न्याय का ढोंग कर मानवता की बात करना तथा दूसरे देश के मामलों में दखल देने के दिन आज मोदी के आने से समाप्त हो गये।

जो लोग राजधर्म के उपदेश की बात करते हैं, उन्हें पता होना चाहिए राजधर्म न तो अंग्रेजों को पता था न मुसलमानों को, भारत में राजधर्म की बात आज की नहीं हजारों वर्ष पुरानी है। इस पराधीन भारत में भी राजस्थान के भीलवाड़ा जिले का छोटा-सा राज्य था शाहपुरा, जहाँ के राजा नाहरसिंह जी स्वामी दयानन्द सरस्वती के शिष्य थे, उन्होंने अपने राज्य की ध्वजा पर मनु महाराज की एक पंक्ति अपने राज्य के लक्ष्य के रूप में अंकित की थी, आज भी वह उतनी ही सार्थक है। मनु महाराज ने राजा के धर्म के रूप में प्रजा का पालन करना ही राजा का धर्म बताया है और वे कहते हैं–

क्षत्रियस्य परोधर्म: प्रजानामेव पालनम्।

– मनु. ७/१४४

अच्छे दिनों के लिए प्रभु का धन्यवाद।

– धर्मवीर

सूक्तियाँ

मनुष्यों को उचित है कि परमेश्वर में ही मन बुद्धि को युक्त कर विद्वानों के सङ्ग से विद्या को पा सुखी हो अन्य मनुष्यों को भी इसी प्रकार आनन्दित करें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ५.१४

जैसे विद्वान् लोग ईश्वर की सृष्टि में विद्या से पदार्थों की परीक्षा करके कार्य्यों में उपयोग कर सुखों को प्राप्त करते हैं वैसे ही सब मनुष्यों को इस यज्ञ का अनुष्ठान कर सब सुखों को पहुँचना चाहिये।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ५.२२

मनुष्यों को ईश्वर की इस सृष्टि में विद्वानों का अनुकरण सदा करना और मूर्खों का अनुकरण कभी न करना चाहिये।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ५.२३

हे विद्वान् मनुष्य! जैसे सूर्य अपने प्रकाश से चोर, व्याघ्र आदि प्राणियों को भय दिखा कर अन्य प्राणियों को सुखी करता है वैसे ही तू भी सब शत्रुओं को निवारण कर प्रजा को सुखी कर।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ५.२४

मनुष्यों को परमेश्वर की उपासनायुक्त व्यवहार से शरीर और आत्मा के बल को पूर्ण कर के यज्ञ से प्रजा की पालना और शत्रुओं को जीतकर सब भूमि के राज्य की पालना करनी चाहिये।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ५.२५

हे मनुष्यों! आप लोग जैसे जगदीश्वर सत्य भाव से प्रार्थित और सेवन किया हुआ अत्युत्तम विद्वान् सब को सुख देता है वैसे यह यज्ञ भी विद्या गुण को बढ़ाकर सब जीवों को सुख देता है।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ५.२७

मनुष्यों को चाहिये कि जिन यज्ञ करने वाले यजमान की पत्नी और यजमान से तथा जिस यज्ञ से दृढ़ विद्या और सुखों को पाकर दु:खों को छोड़ें उनका सत्कार तथा उस यज्ञ का अनुष्ठान सदा ही करते रहें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ५.२८

जैसे सकल ऐश्वर्य का देने वाला जगदीश्वर है वैसे सभाध्यक्षादि मनुष्यों को होना चाहिये।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ५.३०

सब मनुष्यों को उचित है कि ईश्वर और विद्वान् का सत्कार करना कभी न छोड़ें क्योंकि अन्य किसी से विद्या और सुख का लाभ नहीं हो सकता है इसलिये इन को जानें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ५.३१

यू-ट्यूब पर वीडियो प्रवचन उपलब्ध

वेद एवं आर्ष साहित्य में रुचि रखने वाले आर्यजगत् एवं धार्मिक जनों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि अब यू-ट्यूब पर अनेक वैदिक आर्य विद्वानों के सैंकड़ों नये-नये प्रवचन उपलब्ध हैं। विश्व में कहीं पर भी इन्टरनेट से जुड़ कर ये प्रवचन नि:शुल्क सुने-देखे तथा डाउनलोड किये जा सकते हैं। आप जहाँ भी हैं, यदि आपको वैदिक आर्ष ज्ञान की पिपासा है, वेद एवं आर्ष ग्रन्थों के स्वाध्याय के साथ आप इन पर विद्वानों के प्रवचन भी सुनना चाहते हैं, तो इन्टरनेट से जुड़ कर सरलता से सुन सकते हैं।

इसके लिए you tube पर जाकर playlist of paropkarini sabha लिख कर सर्च करें, तो आपको अनेक प्लेलिस्ट मिलेंगी, यथा- वेद प्रवचन, योग दर्शन, ईशोपनिषद् आदि। इनमें इच्छानुसार जाकर लाभ उठाया जा सकता है। आप अपने परिचितों को यह सूचना देकर उन्हें भी लाभ उठाने को प्रेरित कर सकते हैं। भविष्य में अन्य भी नये-नये प्रवचन इस सूची में उपलब्ध कराये जाते रहेंगे।

आध्यात्मिक चिन्तन के क्षण.....

सुदृष्टि में कुदृष्टि व कुदृष्टि में सुदृष्टि

– स्वामी विष्वङ्

विचारों की उत्पत्ति में मुख्य कारण जानकारी या ज्ञान है। चाहे वह ज्ञान मिथ्या ज्ञान हो या तत्त्वज्ञान। बिना जानकारी के कोई भी विचार उत्पन्न नहीं हो पाता है। जो भी विचार उत्पन्न होता है, उस विचार के पीछे कोई न कोई पदार्थ-वस्तु विद्यमान रहती है। विचार वस्तु से सम्बन्धित ही होते हैं। वस्तुएँ दो प्रकार की हैं एक जड़ (अचेतन) वस्तुएँ, दूसरी चेतन वस्तुएँ हैं। मन में जो भी विचार उत्पन्न होते हैं, वे विचार या तो जड़ वस्तुओं से सम्बन्धित होंगे अथवा चेतन वस्तुओं से सम्बन्धित होंगे। विचार सुख देने वाला और दु:ख देने वाला होता है। सुख देने वाले विचार को सुविचार कहते हैं और दु:ख देने वाले विचार को कुविचार कहते हैं। योग की भाषा में सुविचार को अक्लिष्ट वृत्ति से और कुविचार को क्लिष्ट वृत्ति से कथन किया जाता है। सर्व साधारण लोगों को कैसे जानकारी हो कि सुविचार किसे कहते हैं और कुविचार किसे कहते हैं? इसका समाधान यह है कि जिस विचार के पीछे तत्त्वज्ञान-यथार्थ ज्ञान कार्य करता हो, उसे सुविचार समझ लेना चाहिए और जिस विचार के पीछे मिथ्या-ज्ञान कार्य करता हो, उसे कुविचार समझ लेना चाहिए। यह जानकारी कैसे होगी कि अमुक विचार के पीछे तत्त्वज्ञान कार्य कर रहा है और अमुक विचार के पीछे मिथ्याज्ञान कार्य कर रहा है? विचारों का विश्लेषण करने से जानकारी हो जाती है।

जब मनुष्य विचार करने लगता है तब उन विचारों में हिंसा का भाव अर्थात् किसी को मारने, पीटने, दु:ख देने का भाव या ईर्ष्या, द्वेष, असूया का भाव मन में उत्पन्न हो रहा हो, तो समझना चाहिए कि ये विचार कुविचार हैं। यहाँ पर बिना मिथ्याज्ञान के ऐसे भाव कभी उत्पन्न नहीं हो सकते। इसी प्रकार विचारों में असत्य-झूठ बोलने के भाव, चोरी करने के भाव, व्यभिचार करने के भाव, अनावश्यक वस्तुओं का संग्रह करने का भाव अर्थात् जिन वस्तुओं की आवश्यकता न होने पर भी संग्रह करके रखने के भाव, सामने वाले के मन को अशुद्ध समझने का भाव, अन्यों को अपने से न्यून (जानकार) समझने का भाव और अन्यों को ईश्वर से न डरने वाले हैं, ऐसा भाव रखना। ये सभी विचार कुविचार कहलाते हैं, क्योंकि इनका परिणाम दु:ख के रूप में प्राप्त होता है। जिन भावों के माध्यम से कुविचारों की जानकारी होती है, उसी प्रकार उन भावों के विपरीत भावों से अर्थात् अहिंसा-दया, करुणा, कृपा, प्रेम आदि का भाव, सत्य का भाव, अस्तेय-चोरी न करने का भाव, संयम-ब्रह्मचर्य का भाव, अपरिग्रह-संग्रह न करने का भाव, अन्यों को अपने जैसा अर्थात् उनके मनों को अपने मन के समान शुद्ध समझने का भाव, अन्यों को सन्तुष्ट समझने का भाव, अन्यों को तपस्वी समझने का भाव, अन्यों को स्वयं के तुल्य (जानकार) समझने का भाव और अन्य भी ईश्वर से डरते हैं, ऐसा भाव मन में रखना। ये सभी विचार सुविचार कहलाते हैं, क्योंकि इनका परिणाम सुख के रूप में प्राप्त होता है।

कोई मनुष्य सुविचार उत्पन्न करता है, तो वह केवल सुविचार ही उत्पन्न करता हो, ऐसा नहीं है और कोई मनुष्य कुविचार उत्पन्न करता है, तो वह केवल कुविचार ही उत्पन्न करता हो, ऐसा भी नहीं है। प्रत्येक मनुष्य (जिसे पूर्ण तत्त्वज्ञान नहीं हुआ हो, ऐसा मनुष्य) सुविचार और कुविचार दोनों प्रकार के विचार उत्पन्न करता है। कब कितना सुविचार या कुविचार उत्पन्न करता है, यह उस मनुष्य के तत्त्वज्ञान वा मिथ्याज्ञान की मात्रा पर और समय, परिस्थिति आदि के अनुसार निर्भर करता है। विचारों को बदलता रहता है कभी सुविचार और कभी कुविचार उत्पन्न कर लेता है। मनुष्य के मन पर इतना नियन्त्रण नहीं रह पाता है कि सुविचार उत्पन्न हो रहे हैं, तो निरन्तर सुविचारों को ही उत्पन्न करता रहे अथवा कुविचार उत्पन्न हो रहे हैं, तो निरन्तर कुविचारों को ही उत्पन्न करता रहे। ऐसा करना मनुष्य के नियन्त्रण में नहीं है, इसलिए मनुष्य विचारों को बदलता रहता है। सामान्य रूप से दो प्रकार के मनुष्य होते हैं। कुछ मनुष्य समाज की दृष्टि से अच्छे माने जाते हैं, क्योंकि वे अच्छे-सुविचार करने वाले हैं और कुछ मनुष्य समाज की दृष्टि से बुरे माने जाते हैं, क्योंकि वे बुरे-कुविचार करने वाले हैं। समाज में इन्हें सुदृष्टि वाले और कुदृष्टि वाले भी कहते हैं। सुदृष्टि वालों को सुदृष्टि वाले इसलिए कहते हैं, क्योंकि वे प्राय: अच्छी सोच रखते हैं और कुदृष्टि वालों को कुदृष्टि वाले इसलिए कहते हैं, क्योंकि वे प्राय: बुरी सोच रखते हैं। यहाँ पर प्राय: का अर्थ है अक्सर यानि जब भी विचारते हैं तब अच्छा विचारते हैं या बुरा विचारते हैं, परन्तु सदा नहीं। कभी-कभी विचारों में बदलाव आता है।

अच्छे विचारक कभी-कभी बुरा विचार करते हैं या बुरे विचारक कभी-कभी अच्छा विचार करते हैं, तो उस स्थिति में भी बदलाव करते हैं। मन पर नियन्त्रण न होने के कारण ही ऐसा बदलाव करते रहते हैं। जो मनुष्य अच्छा विचार करने वाला है, तो वह अच्छा विचार करता हुआ अचानक बीच में बुरा क्यों विचार करने लगता है। इसी प्रकार जो मनुष्य बुरा विचार करने वाला है, तो वह बुरा विचार करता हुआ अचानक बीच में अच्छा क्यों विचार करने लगता है? इसे सूक्ष्मता से अवश्य समझना चाहिए। मनुष्य का स्वभाव है विचार करना, जब विचार होता है तब उस विचार का मन में छाप (मुद्रण) हो जाता है। इस छाप को योग की भाषा में संस्कार कहते हैं। मनुष्य चाहे सुविचार उत्पन्न करता है अथवा कुविचार, सभी संस्कार मन में अंकित हो जाते हैं। इसलिए मन में सुविचारों और कुविचारों का संस्कार विद्यमान होने से कभी भी संस्कार प्रकट हो जाते हैं। मन में संस्कार प्रकट होने के लिए उद्यत हैं परन्तु कौन से (सुचिवारों या कुविचारों के) संस्कार प्रकट होने चाहिए इसका निर्धारण मनुष्य नहीं कर पाता है। इसी कारण सुविचारों के बीच में कुविचार उत्पन्न कर लेता है और कुविचारों के बीच में सुविचार उत्पन्न कर लेता है। इस बात को महर्षि वेद व्यास इस प्रकार लिखते हैं कि -

क्लिष्टप्रवाहपतिता अप्यक्लिष्टाः क्लिष्टच्छिद्रेष्वप्यक्लिष्टा भवन्ति। अक्लिष्टच्छिद्रेषु क्लिष्टा इति।

अर्थात् कभी-कभी मनुष्य के जीवन में ऐसा भी चमत्कार वाला परिवर्तन होता है कि दुःख देने वाले कुविचार चल रहे हों, तो उनके बीच में सुख देने वाले सुविचार भी उत्पन्न हो जाते हैं। इसी प्रकार सुख देने वाले सुविचार चल रहे हों, तो उनके बीच में दुःख देने वाले कुविचार भी उत्पन्न हो जाते हैं।

इसका आशय इस प्रकार समझ लेना चाहिए कि जब मनुष्य के ज्ञान का स्तर घट या बढ़ जाता है, तब मनुष्य सुविचार या कुविचार उत्पन्न कर लेता है। उदाहरण के लिए कोई मनुष्य प्रतिदिन हिंसा करता है, क्योंकि वह हिंसक प्रवृत्ति के स्वभाव वाला है। वह प्रतिदिन की भाँति हिंसा के विचार- मारने, काटने, पीटने, दुःख देने वा क्रोध, ईर्ष्या के कुविचार उत्पन्न कर रहा है। ऐसी स्थिति में अचानक हिंसा के विरुद्ध दया, करुणा, कृपा, प्रेम करने के विचारों को उत्पन्न कर लेता है। ठीक इसी प्रकार ऐसा भी होता है कि कोई मनुष्य स्वभाव से दयालु, कृपालु है और वह प्रतिदिन की भाँति दया, कृपा, प्रेम के सुविचार उत्पन्न कर रहा है। ऐसी स्थिति में अचानक दया, प्रेम आदि के विरुद्ध हिंसा के कुविचार उत्पन्न कर लेता है। इस प्रकार अनगिनत उदाहरण अलग-अलग विषयों के हो सकते हैं। इस परिवर्तन में कुछ ऐसे विशेष उदाहरण संसार में देखे जाते हैं, जो किसी-किसी विरले मनुष्यों में ही होता है। वह विशेष परिवर्तन इस प्रकार है कि कोई मनुष्य जीवन भर गलत सोच (विचार) अर्थात् कुविचारों को करता हुआ अनुचित कार्य (डाका डालने या चोरी करने आदि) करता आया है। परन्तु अचानक मन में सुविचार उत्पन्न हो गये और वह चोर या डाकू से सच्चा साधु, सन्त बन गया। इसी प्रकार कोई मनुष्य जीवन भर ईश्वर भक्ति की है और उसके मन में सुविचार ही उत्पन्न होते हैं परन्तु अचानक मन में कुविचार उत्पन्न हो गये और वह भक्ति छोड़ कर नास्तिक बन गया। इस प्रकार के उदाहरण इतिहास में और वर्तमान में भी देखे जा सकते हैं।

संसार में कोई मनुष्य डाकू से सन्त और सन्त से नास्तिक जो बनते हैं, वे ऐसे ही नहीं बनते हैं केवल कुछ परिवर्तन मात्र से नहीं बनते हैं। इसके पीछे बहुत विशाल कारण विद्यमान है। महर्षि वेद व्यास कहते हैं कि-

तथा जातीयकाः संस्कारा वृत्तिभिरेव क्रियन्ते संस्कारैश्च वृत्तय इति एवं वृत्तिसंस्कारचक्रमनिशमावर्त्तते।

अर्थात् मनुष्य जो भी विचार (सुविचार या कुविचार) उत्पन्न करता है, वे विचार उत्पन्न हो कर नष्ट नहीं होते बल्कि वे विचार संस्कारों (छाप) को उत्पन्न करके नष्ट हो जाते हैं। वह छाप रूपी संस्कार मन में निरन्तर बने रहते हैं। जब-जब मनुष्य के समक्ष अनुकूल परिस्थिति उत्पन्न होती है तब-तब वे संस्कार प्रकट हो कर मनुष्य को विचार करने में उकसाते हैं। जैसे-जैसे संस्कार मन में प्रकट होते हैं वैसे-वैसे विचारों को उत्पन्न करने के लिए उकसाते रहते हैं। इसलिए जिस प्रकार (सुविचार या कुविचार) के विचार उत्पन्न होते हैं उसी-उसी प्रकार के संस्कार मन में संचित होते रहते हैं। उन संचित संस्कारों से प्रेरित हो कर मनुष्य वैसा ही विचार उत्पन्न कर लेता है। इस प्रकार विचारों से संस्कार बन जाते हैं और फिर उन्हीं संस्कारों से विचार बन जाते हैं और यह विचार वा संस्कार दोनों एक दूसरे का कारण बनते हुए अनवरत (बिना रुके) निरन्तर उत्पन्न होते रहते हैं। विचारों एवं संस्कारों की एक लम्बी शृंखला चक्र के रूप में चल पड़ता है और यह चक्र जन्म-जन्मान्तरों तक चलता रहता है। यह चक्र न रात (रात्री) देखता है और न दिन देखता है, बस बिना रुके दिन-रात (रात-दिन) चलता ही रहता है।

वृत्तियों से संस्कार और संस्कारों से वृत्तियाँ सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर प्रलय तक चार अरब बत्तीस करोड़ वर्ष तक, वृत्ति-संस्कार रूपी चक्र अनवरत चलता रहेगा। क्या इस चक्र का सृष्टि के बीच में अन्त हो सकता है या नहीं? अथवा दुबारा सृष्टि बनेगी फिर वृत्ति-संस्कार रूपी चक्र चल पड़ेगा और यह परम्परा निरन्तर चलती रहेगी, तो इसका अन्त होगा या नहीं? इसका समाधान है कि वृत्ति-संस्कार रूपी चक्र का अन्त अवश्य होगा। कैसे? योग को जीवन में धारण करने से अर्थात् यम, नियम आदि योग के आठों अंगों को जीवन में धारण करना होगा। जिससे मनुष्य को जानकारी होगी कि मन का क्या स्वभाव है? मन का क्या कारण (किस तत्त्व से उत्पन्न होता है) है? मन की कितनी अवस्थाएँ (चंचल, मूढ़ आदि) हैं? और मन की कितनी प्रकार की वृत्तियाँ होती हैं? इन सब प्रश्नों का समाधान योग से हो जाता है। समाधानों को जान कर भी मनुष्य व्यवहार में नहीं उतारता है, तो भी दु:ख दूर नहीं हो पाता। इसलिए समाधानों को व्यवहार में उतारने के लिए साधक निरन्तर अभ्यास करता है और वह अभ्यास भी विवेक, वैराग्य (तत्त्वज्ञान) पूर्वक करने लगता है। जैसे-जैसे अभ्यास उन्नत होता रहता है, वैसे-वैसे मन पर नियन्त्रण आने लगता है। मनोनियन्त्रण के माध्यम से साधक वृत्तियों पर अंकुश लगाने लगता है। जिससे अनावश्यक वृत्तियाँ (विचार) उत्पन्न होना बन्द होने लगती हैं। जैसे-जैसे वृत्तियाँ न्यून (कम) होने लगती हैं, वैसे-वैसे संस्कार भी न्यून बनने लगते हैं।

जब साधक को यह अनुभूति होने लगती है कि मेरे मन में वृत्तियाँ न्यून बन रही हैं। तब साधक को उत्साह मिलता, प्रसन्नता होती है और योग के प्रति श्रद्धा बढ़ती है। ऐसी स्थिति में साधक और सावधान हो कर व्यवहार करने लगता है। जिससे कुविचार आने बन्द होने लगते हैं। साधक और अधिक श्रद्धापूर्वक योगाभ्यास करने लगता है। जिससे साधक मन की उत्कृष्ट एकाग्र अवस्था को पा लेता है और एकाग्र अवस्था में केवल सुविचारों को करता हुआ जड़ और चेतन के पृथकत्व को पूर्ण रूप से जान कर समाधि को प्राप्त कर लेता है। समाधि लगा-लगा कर संप्रज्ञात समाधि के सभी विषयों का साक्षात्कार कर लेता है। अब साधक का जानने योग्य केवल ईश्वर ही रह जाता है और कालान्तर में ईश्वर साक्षात्कार भी कर लेता है। इस प्रकार साधक मन के दोनों (भोग और अपवर्ग) प्रयोजनों को पूर्ण कर लेता है। मन के दो प्रयोजन थे, जो साधक ने पूर्ण किया। अब मन का कार्य (कर्त्तव्य) पूर्ण हुआ। ऐसी स्थिति में मन का क्या होगा अर्थात् मन का कार्य जब तक रहा तब तक कार्य करता रहा। अब कार्य पूर्ण हो गया है, फिर मन क्या करेगा? या मन रहेगा या नहीं रहेगा?

इसका समाधान महर्षि वेद व्यास करते हैं कि -

'तदेवं भूतं चित्तमवसिताधिकारमात्मकल्पेन व्यवतिष्ठते प्रलयं वा गच्छतीति।'

अर्थात् जब योग साधक योगाभ्यास के द्वारा बार-बार मन को रोक-रोक कर वृत्ति रहित बना लेता है। तब साधक का मन कार्यविहीन हो कर अर्थात् प्रयोजन को पूर्ण कराने वाला बन कर अपने अधिकार (भोग व अपवर्ग रूप अधिकार) को सम्पन्न कर लेने वाला हो कर रहता है। इस विषय में महर्षि वेद व्यास ने जीवात्मा का उदाहरण दिया है कि जिस प्रकार जीवात्मा शान्त स्वभाव वाला होने से शान्ति कि स्थिति में रह कर द्रष्टा बन कर केवल साक्षी भाव से रहता है। उसी प्रकार मन भी अपने निज रूप (सत्त्वगुण प्रधान वाला हो कर) में शान्त हो कर वृत्ति-रहित बना रहता है। जब जीवात्मा परमपिता परमेश्वर का साक्षात्कार करके अविद्या को तत्त्वज्ञान रूपी विद्या से नष्ट कर ईश्वरीय आनन्द को भोगने के लिए मुक्ति में जाता है। तब यह मन अपने कारण रूप सत्त्व-गुण, रजोगुण और तमोगुण में मिल जाता है।

यहाँ पर मन का प्रसंग होने के कारण मन को कारण में विलीन होने की बात कही गयी है। केवल मन ही कारण रूप प्रकृति में नहीं मिलता है बल्कि मन के साथ-साथ सत्रह तत्त्व (महतत्त्व, अहंकार, ज्ञानेन्द्रियाँ, कर्मेन्द्रियाँ, तन्मात्राएँ) भी मिल जाते हैं। स्थूल शरीर अन्त्येष्टि के माध्यम से पञ्चतत्त्वों में मिल जाता है।

जिस मनुष्य का लक्ष्य जितना बड़ा होता है, उसके कार्य भी उतने ही बड़े होते हैं। आत्मा और परमात्मा का साक्षात्कार करना मनुष्य का सबसे बड़ा लक्ष्य है। संसार में इस लक्ष्य से बड़ा लक्ष्य और कोई नहीं है। इसलिए यह सर्वोत्तम लक्ष्य कहलाता है। इतने बड़े लक्ष्य को पूर्ण करने के लिए अनेक जन्म लगते हैं। इस जन्म में हम कितना पुरुषार्थ कर सकते हैं, यह हमारे हाथ में है अर्थात् अपनी योग्यता को पहचानना और पहचान कर उसे और बढ़ाना विभिन्न उपायों को अपना कर मन को समझना चाहिए। जिससे वृत्तियों (विचारों- सुविचार व कुविचार) को समझ सकें। जब वृत्तियाँ समझ में आती हैं तब सुवृत्तियों के बीच में आने वाली कुवृत्तियों को पकड़ पायेंगे और कुवृत्तियों के बीच में आने वाली सुवृत्तियों को पकड़ पायेंगे। जिससे सुवृत्तियों को बनाये रख सके। ऐसा कर-करके ही धीरे-धीरे मुक्ति तक पहुँच पायेंगे।

- ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

कुछ तड़प-कुछ झड़प

– राजेन्द्र जिज्ञासु

प्रेरणा की ऊर्जा– सृष्टि के नित्य नियमों को समझने तथा उनका पालन करने से ही व्यक्ति तथा समाज की उन्नति तथा कल्याण सम्भव है। इसके साथ यह भी आवश्यक है कि मनुष्य को सत्प्रेरणा की ऊर्जा भी निरन्तर मिलती रहे। व्यक्ति तथा समाज के लिए ऊर्जा का एक अक्षय स्रोत परमात्मा का अनादि सत्योपदेश वेद ज्ञान और दूसरा इतिहास है। यजुर्वेद के प्रथम मन्त्र में ही परमात्मा से ऊर्जा की प्राप्ति की विनती की गई है। महर्षि दयानन्द जी ने उन्नीसवीं शताब्दी में सब प्रकार के अन्धविश्वासों तथा पाखण्डों को चुनौती देते हुए सब से बड़ी सच्चाई मानव समाज के सामने यह रखी कि ईश्वर, जीव व प्रकृति तीनों ही नित्य व अनादि हैं। इसके साथ दूसरा बड़ा सत्य जो मनुष्य समाज को दिया वह यह है कि ईश्वर के गुण, कर्म तथा स्वभाव भी नित्य तथा अनादि हैं।

उन्नीसवीं शताब्दी में विज्ञान के नाम पर विकासवाद नाम के सबसे बड़े अन्धविश्वास को चुनौती देने वाला एकमेव विचारक ऋषि दयानन्द ही था। विकासवाद की आड़ में ईसाईयत तथा इस्लाम दोनों ने वैदिक धर्म पर चढ़ाई की। दोनों का वैचारिक पराभव है। हमारे शास्त्रार्थ महारथियों की परम्परा के टूटने पर थोथेश्वर नामधारी योगेश्वर, योगाचार्य और कल्पित इतिहास गढ़ने वालों ने महर्षि की इस अपूर्व विजय का लाभ नहीं उठाया।

सारा वैज्ञानिक जगत् सृष्टि नियमों को नित्य तथा सार्वभौमिक स्वीकार कर रहा है। इन दो पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग महर्षि के साहित्य तथा व्याख्यानों में बहुत मिलता है। आधुनिक अंग्रेजी पठित भारतीय सुधारकों के साहित्य में ये दो शब्द खोजने पड़ते हैं। राजा राममोहनराय, केशवचन्द्र सेन, भण्डारकर, स्वामी विवेकानन्द आदि के लिए यह विचार पराया सा था।

विकासवाद को मानें तो जीवन का उद्देश्य ही कुछ नहीं रहता। मनुष्य पर आकर विकास क्यों रुक गया? आगे क्या होगा? इस पर चुप्पी क्यों? हर्ष का विषय है कि डार्विन के पुत्र ने पिताश्री के मत को झुठला दिया। महर्षि ने तो उससे बहुत पहले ही रुड़की नगर में विकासवाद का प्रतिवाद करके अंग्रेजी व अंग्रेज भक्तों को चौंका दिया।

सर सैय्यद अहमद खाँ ने पहली बार इस्लाम में ईश्वर के स्वभाव की नित्यता की बात स्वीकार की। इस्लाम में पहले विचारक आप ही हैं जिन्होंने 'अल्लाह की आदत' (ईश्वर के स्वभाव) शब्दों का प्रयोग किया। इनके पश्चात् 'अल्लाह की आदत' नाम से प्रथम पुस्तक डॉ. गुलाम जेलानी जी ने लिखकर इस्लाम को वैदिक धर्म के द्वार तक पहुँचा दिया, मानों इस्लाम वैदिक धर्म के रंग में रंगा गया। फिर डॉ. गुलाम जेलानी जी ने खुलकर विकासवाद को झुठलाते हुए लिखा कि धर्म नित्य है। ईश्वरीय ज्ञान (इलहाम) अनादि व नित्य ही होता है।

पूर्वजों ने लहू देकर, घोर तप से जो दिग्विजय प्राप्त की है। जैसे पं. लेखराम, स्वामी दर्शनानन्द, पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय, पूज्य देहलवी जी और पं. चमूपति जी ने जो ऊर्जा प्राप्त की है, उनसे प्रेरणा प्राप्त करनी चाहिए। फारसी में एक प्रसिद्ध पद्य है:-

गर ताजा खाही दाशतन ईं दागहाय सीना रा।
गाहे गाहे याद कुन ईं किस्साय पारीना रा।।

अर्थात् हृदय को हरा-भरा रखना चाहो तो इस गौरवपूर्ण रक्तरंजित इतिहास को याद करते रहो।

और वह चकित रह गये:- विचार टी.वी. चैनल के श्री धर्मेश जी मेरे इतिहास विषयक व्याख्यान रिकॉर्ड करने आये। उनकी परियोजना सुनकर मैंने कई ऐसी घटनायें व बिन्दू उनके सामने रखे जिन्हें सुनकर वह दंग रह गये। परोपकारी में भी कुछ समय-समय पर रखता रहा।

१. सन् १९३६ में 'प्रकाश' में पूज्य महाशय कृष्ण जी ने लिखा था कि आने वाला इतिहासकार त्यागमूर्त्ति पं. विष्णुदत्त जी एडवोकेट की अन्तर्जातीय विवाह के लिये चर्चा किया करेंगे। इन पंक्तियों के लेखक के अतिरिक्त किसने इस क्रान्ति की कभी चर्चा की। उनके परिवार के लोग दिल्ली के पंखा रोड समाज से श्री धर्मवीर जी को तथा लेखक को मिलने आये थे। श्री धर्मेश जी ने ऐसे-ऐसे परिवारों के पते मुझ से मांगे।

आर्यसमाज की स्थापना के वर्ष में ही सन् १८७५ में श्री श्यामजी कृष्ण वर्मा ने जाति बन्धन तोड़कर विवाह किया। यह आधुनिक युग का ऐसा पहला विवाह था। धन्य था वह करोड़पति भाटिया परिवार जिन्होंने एक मेधावी अनाथ युवक को अपनी पुत्री दे दी। गुजरात की धरती धन्य-धन्य हो गई।

पातूर (लातूर नहीं) विदर्भ के धर्मवीर ठाकुर श्री

हरगोविन्द जी ने अपनी पुत्री पंजाब के कश्मीरी युवक पं. विष्णुदत्त से ब्याह दी। परिवार को बहिष्कार के वार का शिकार होकर पंजाब में पलायन करके आना पड़ा। किसने इस घटना से ऊर्जा प्राप्त करने की प्रेरणा दी?

२. आर्यसमाज के इतिहास में श्री पं. त्रिलोकचन्द जी शास्त्री एकमेव ऐसे व्यक्ति हुए हैं जो पूरा परिवार लेकर आर्यसमाज के लिए जेल में गये। धर्मेश जी ने उनके परिवार का पता पूछा। मैंने कहा उनका सुयोग्य चरित्रवान् आर्य पुत्र भारत का नामी डॉक्टर ऋषिकुमार आर्य जालन्धर में है। पहले व्यक्ति धर्मेश हैं जिन्होंने हमारे श्रद्धेय पण्डित जी के परिवार से मिलने की इच्छा प्रकट की।

३. मैंने पूरी घटना बताते हुए उन्हें बताया कि मेरे माता जी भी उन्हीं के जत्था में जेल गईं। मैं पहले ही जेल में था। मेरे तो छूटने की तब कोई आशा ही नहीं थी। माँ चाहती थी कि दूसरा पुत्र यशपाल जेल में छूट जावे तो मैं जेल जाऊँगी परन्तु ऐसा भी न हुआ। मेरी माँ अपने जत्थे के साथ जब एक द्वार से कारागार में प्रविष्ट हुई तभी दूसरे द्वार से मेरे ज्येष्ठ भ्राता श्री यशपाल को जेल से छोड़ा गया। उसने दूर से माता जी को नमस्ते कही। तब हमारी माता पुत्र के सिर पर हाथ धर कर प्यार भी न दे सकी। धर्मेश जी ने यश जी से मिलना चाहा। मैंने कहा, वह करनाल हैं।

४. पं. शान्तिप्रकाश जी का विवाह संस्कार हो रहा था। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी का तार पहुँचा कि अविलम्ब लाहौर में शास्त्रार्थ करने के लिये पहुँचे। पं. बुद्धदेव जी ने तार पढ़कर सुनाया। संस्कार सम्पन्न होते ही पं. लेखराम का रणबाँकुरा नवविवाहिता पत्नी को अपने परिवार के संग घर भेजकर रणभूमि में लाहौर पहुँच गया। हमारा यह दृढ़ मत है कि गुरुदेव स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी ने शिष्य को बलिदान का पाठ पढ़ाने के लिये जान बूझकर ऐसा आदेश दिया। महाशय चिरञ्जीलाल जी प्रेम, स्वामी वेदानन्द जी, स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी आदि कई पूज्य विद्वान् लाहौर में थे जो शास्त्रार्थ करने में पूरे-पूरे समर्थ थे। यह प्रसंग सुनकर धर्मेश जी ने पण्डित जी के परिवार से मिलने की इच्छा जताई।

५. झोकोतरा डेरा गाजीखाँ के एक बहुत बड़े भूमिपति के धर्मच्युत होने की घटना को रोकने तथा उसके कारण सहस्रों हिन्दुओं को विधर्मी बनने से बचाने के लिए सनातन धर्म सभा के मन्त्री के साथ रात-रात चलकर उन्हें बचाने में कैसे इतिहास रचा, यह घटना सुनकर आपने सनातन धर्म सभा के उस मन्त्री का पता पूछा तो उन्हें बताया गया कि पं. शान्तिप्रकाश के तप को नमन करके तत्काल आर्यसमाज का संस्थापक मन्त्री बन गया। अब कोसी पलवल के पास ही रहता है।

६. पसरूर (पाकिस्तान) के अमरीकन चर्च का पादरी ब्राण्डण, चर्च के वार्षिकोत्सव की तिथियाँ निश्चित करने से पहले वहाँ के आर्यसमाज को कहता था कि पं. गणपति शर्मा जी से पता करके दो कि वे किन तिथियों पर यहाँ आ सकते हैं। वह सर्वधर्म सम्मेलन उनके बिना करना नहीं चाहता था। ऐसे-ऐसे ये रत्न इस समाज के पास। ऐसा गौरवपूर्ण इतिहास दोहराने के लिए ऊर्जा के स्रोत बन्द नहीं होने चाहिये।

७. भूमण्डल प्रचारक मेहता जैमिनि ईसाई होते-होते कैसे बच गये? यह रोमांचकारी इतिहास आज कौन सुनाता है। अनुभवहीन युवक गुरुदत्त विद्यार्थी के सामने वयोवृद्ध पौराणिक पण्डित को शास्त्रार्थ में पिटते जब देखा तो मेहता जैमिनि ने प्रथम बार आर्यसमाज का नाम सुना। यह घटना उनके जीवन का ऐसा मोड़ सिद्ध हुई कि वह आर्य जाति के प्रथम भूमण्डल प्रचारक बनकर एक इतिहास बना गये। ऊर्जा के इन स्रोतों से हम लाभान्वित हों।

डॉ. वेदप्रताप जी वैदिक का प्रश्नः- श्री डॉ. वेदप्रताप जी वैदिक राष्ट्रभाषा हिन्दी के पक्के व सच्चे भक्त रहे हैं। मैं दिल्ली से गाड़ी में बैठा तो आपका चलभाष मिला। आपने पूछा कि अंग्रेजी बोलने के विरुद्ध हिन्दी बोलने की पुष्टि करने वाला ऋषि दयानन्द जी का कोई वाक्य बतायें। चलती ट्रेन में शोर से बात ठीक-ठीक सुनी नहीं जा सकती। प्रश्न तो महत्त्वपूर्ण है ही। मैंने कहा, कल जाकर प्रमाण दे दिया जावेगा। प्रमाण तो तभी मेरे ध्यान में आ गया परन्तु अबोहर पहुँचकर श्री धर्मेश जी के साथ कार्य में इतना व्यस्त हो गया कि डॉ. वेदप्रताप जी से सम्पर्क करना ही भूल गया। सबके कल्याणार्थ इस प्रश्न का सप्रमाण उत्तर दिया जाता है।

महर्षि ने स्पीडिंग महोदय के निवेदन पर मुरादाबाद छावनी में व्याख्यान दिया। व्याख्यान राजधर्म विषय पर था। व्याख्यान के पश्चात् वहाँ पर श्री कालीप्रसन्न वकील किसी से अंग्रेजी में वार्तालाप कर रहे थे। ऋषि जी ने उन्हें टोकते हुए कहा कि यह चोरी जैसी बात है। अंग्रेजी भाषा जानने के अभिमान पर उन्हें लताड़ा। पत्र व्यवहार में भी एक से अधिक पत्रों में अंग्रेजी भाषा के प्रचार पर आपने रक्तरोदन किया है। स्वभाषा की प्रतिष्ठा व प्रचार के लिए महर्षि के उद्योग पर कुछ अधिक कहने की आवश्यकता

नहीं। मुरादाबाद की उपरोक्त घटना श्रद्धेय लक्ष्मण जी के ग्रन्थ के दूसरे भाग में पृष्ठ संख्या ३०६ पर दी गई है।

ऐसे कुशल मिशनरी हों:- विश्व पुस्तक मेले में इस बार आर्यसमाज की उपस्थिति गत वर्षों की तुलना में कुछ अच्छी थी। सन्तोषजनक तो नहीं कही जा सकती। परोपकारिणी सभा ने अंग्रेजी हिन्दी सत्यार्थप्रकाश तथा पं. इन्द्र जी लिखित ऋषि जीवन सहस्रों को नि:शुल्क वितरित किया। दिल्ली सभा ने सत्यार्थप्रकाश का खूब वितरण किया। ऋषि उद्यान से गये ब्रह्मचारियों ने अपने पण्डाल से बाहर निकलकर भी अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश के स्वाध्याय की प्रेरणा देने का सोत्साह प्रचार किया। मेले में प्रतिदिन दो चार प्रमुख आर्य विद्वानों की उपस्थिति हो जाय करे तो विशेष लाभ हो। श्री डॉ. धर्मवीर जी ने समय देकर अपना कर्त्तव्य निभाया। श्री राजवीर जी, डॉ. अशोक आर्य जी तथा श्री लक्ष्मण जी मेरे साथ तीन दिन मेले में जाते रहे।

एक दिन हम सब एक इस्लामी स्टॉल पर गये। कुछ पुस्तकें लेने लगे तो वहाँ उपस्थित मुस्लिम युवक पुस्तकों के चयन को देखकर समझ गये कि यह कोई साधारण पुस्तक प्रेमी नहीं। उन्होंने प्रबल प्रेरणा देते हुए कहा, 'यह पुस्तक आपके बड़े काम की है। यह भी लें। यह भी लें।' बात यह थी कि मैं समझता था कि उनमें श्री पं. लेखराम जी का उल्लेख हो सकता है। मैंने कहा, 'कुछ क्रय करूँगा और ये दो आप भेंट में दे दो।'

उन्होंने कहा, 'यह क्रय कर लो आपके लिये पठनीय हैं और हम आपको दो और पुस्तकें भेंट करेंगे।' राजवीर जी से मेरी बातें सुनकर वे समझ गये कि हम इस्लामी साहित्य के कुछ जानकार हैं। मैंने जो पुस्तकें क्रय कीं उनमें से एक में पं. लेखराम जी का उल्लेख पाकर मुझे प्रसन्नता हुई।

फिर ईसाई प्रचारकों से भेंट हुई। वे बाइबिल बांट रहे थे। मैंने कहा कि मुझे तो बड़े टाईप में बाइबिल दो। वे एक ऐसी प्रति ले आये और कहा कि इसका तो मूल्य देना पड़ेगा। उस संस्करण को देखते ही मैं उसकी विशेषता समझ गया। तभी श्री राजवीर जी ने एक प्रश्न पूछ लिया। हमारा संवाद सुनकर वे समझ गईं कि हम दोनों कुछ जानने वाले हैं। हमने कुछ साहित्य क्रय किया परन्तु उस बाइबिल को नि:शुल्क देने के लिये उनको प्रीतिपूर्वक प्रेरित किया। उनमें से एक युवती बहुत दक्ष मिशनरी थी। उसने हमारी दुर्बलता ताड़ ली। कहा, 'यह प्रति नि:शुल्क नहीं। मूल्य देकर ले लें।' राजवीर जी ने अपने लिये तथा मेरे लिये एक-एक प्रति का मूल्य चुका दिया। हमारे कार्यकर्ताओं में भी ग्राहक की पहचान होनी चाहिये।

हिमाचल से आया वैदिक साहित्य:- हिमाचल से स्वामी रामस्वरूप जी के वेद मन्दिर का स्टॉल वहाँ देखकर हम गद्गद् हो गये। आर्यसमाज के भी हिमाचल में कई डेरे व भव्य भवन हैं परन्तु वेद-प्रचार का वैदिक साहित्य का ठोस कार्य तो श्री रामस्वरूप जी कर रहे हैं। श्रीयुत् रामस्वरूप महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित वैदिक सिद्धान्तों पर लिखते व बोलते हैं। उनकी वेद विषयक एक अंग्रेजी पुस्तक के पाँचों भाग श्री लक्ष्मण जी ने क्रय किये। हम तो पाँचों भाग नहीं चाहते थे। स्टॉल वाले हमारी वेद भक्ति को समझ गये सो पाँचों भाग लेने की प्रबल प्रेरणा दी।

मैंने एक बार चलभाष पर इन महात्मा जी से बातचीत की। उनका चित्र तथा चित्र में हावभाव देखकर मैं समझता हूँ कि वह मेरे कुमार अवस्था के घनिष्ठ मित्र हैं परन्तु सुना है कि उन का जन्म पंजाब का नहीं है। कभी मिलने पर ही रहस्य खुलेगा। विहंगम दृष्टि से उनका साहित्य जितना देखा है उससे उनके आर्यत्व तथा वेदनिष्ठा को जानकर हमें हर्ष हुआ। श्री लक्ष्मण जी अब अधिक जानकारी देंगे। वेद-वाटिका फूले फले हमारी यही कामना है।

शेष भाग अगले अंक में.....

आर्यो! धर्म रक्षा-धर्म प्रचार के लिये अब आगे आओ।

परोपकारिणी सभा अपने सर्व सामर्थ्य से ऋषि मिशन की सेवा में जुटी है। आर्यधर्म पर वार करने वालों का उत्तर देने के लिए परोपकारिणी सभा हर घड़ी तैयार रहती है। स्वामी स्वतन्त्रानन्द पीठ की स्थापना करके सुयोग्य विद्वान् को अरबी उर्दू के विद्वान् तैयार करने के लिये नियुक्त कर दिया। अब सभा के पास पढ़ाने वाले हैं। लगनशील सुयोग्य युवक तथा सेवानिवृत्त अनुभवी आर्य विद्यार्थी यहाँ तीन-तीन मास, छ:-छ: मास तथा वर्ष-दो वर्ष रहकर अरबी आदि पढ़कर पं. धर्मभिक्षु जी, पं. रामचन्द्र देहलवी जी तथा पं. शान्तिप्रकाश जी के रिक्त स्थान की भरपाई करें। इस पुण्य कार्य में दानी तथा समाजें सभा को उदारता से दान देकर सहयोग करें।

(परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित)

योग–साधना शिविर (द्वितीय स्तर)

दिनांक १५ से २२ जून २०१४

आज समाज के अनेक क्षेत्रों में अनेक प्रकार से लोग साधना के लिए प्रयासरत हो रहे हैं। अनेक प्रशिक्षकों द्वारा इस विषयक ज्ञान–विज्ञान भी प्रदान किया जा रहा है। फिर भी साधकों को साधना की सन्तुष्टिदायक स्थिति प्राप्त नहीं हो पा रही है। इसका कारण है कि साधना के विषय **साध्य, साधन, साधक व अन्य साधकों–बाधकों** के ज्ञान का वैदिक परम्परा से दूर होना। इस योग–साधना शिविर में इन्हीं विषयों का वैदिक–दर्शनों के द्वारा ज्ञान करवाया जायेगा, उससे सम्बन्धित जिज्ञासाओं का समाधान व आत्मनिरीक्षण के द्वारा अपनी उन्नति का मापदण्ड बताया जायेगा। यह शिविर अवश्य ही आपकी साधना की उन्नति में विशेष साधन बनेगा, जिससे कि मानव जीवन के मुख्य व चरम लक्ष्य की प्राप्ति उत्तरोत्तर काल में आप अपने निकट अनुभव करने लगेंगे। साथ ही पढ़ाये गये विषयों की लिखित परीक्षा व आपके द्वारा पालन किये गये शिविर के अनुशासन का भी आंकलन किया जायेगा, इसी आधार पर प्रमाण–पत्र भी दिये जायेंगे। इस दिशा में अब तक दो शिविरों के माध्यम से प्राथमिक स्तर पर सफल प्रयास किया गया है। **इस द्वितीय स्तर के शिविर में वे ही भाग ले सकेंगे, जिन्होंने प्राथमिक स्तर वाले शिविर में भाग लिया है।** इस शिविर में प्राथमिक स्तर वाले शिविर की अपेक्षा अधिक सूक्ष्मता से विषयों का अनुभव करवाया जाएगा और वैसा ही सूक्ष्मता से, कठोरता से नियम व अनुशासन होगा।

प्रार्थियों हेतु नियम व अनुशासन

१. प्रत्येक प्रार्थी के लिए पूर्ण मौन अनिवार्य होगा।
२. दिनचर्या के कुछ भाग में आकृति मौन भी अनिवार्य होगा।
३. प्रार्थी की न्यूनतम दसवीं के स्तर की योग्यता अनिवार्य है। इस हेतु प्रमाण–पत्र की प्रतिलिपि लाना आवश्यक है।
४. शिविर के काल में किसी साधक के द्वारा नियम व अनुशासन भंग करने पर उसे शिविर के मध्य में ही शिविर छोड़ने के लिए बाध्य किया जा सकता है।
५. शारीरिक व मानसिक सात्विकता के लिए यथासम्भव भोजन की मात्रा निश्चित होगी।
६. पूरे शिविर में साधक के द्वारा किसी भी माध्यम से बाह्य–सम्पर्क करना निषिद्ध रहेगा।
७. शिविर काल में किसी भी साधक को ऋषि उद्यान परिसर से बाहर जाने की अनुमति नहीं होगी।
८. साधकों की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति ऋषि–उद्यान परिसर में ही की जायेगी।
९. बाह्य–वृत्ति उत्पादक साधनों जैसे समाचार–पत्र पढ़ना, आकाशवाणी श्रवण व दूरदर्शन देखना, पर पूर्ण प्रतिबन्ध रहेगा।
१०. किसी प्रकार का शारीरिक रोग यथा सर्दी, खाँसी, जुकाम अथवा अन्य कोई ध्वनि उत्पादक रोग वाले को प्रवेश नहीं दिया जायेगा।
११. बच्चों को साथ लाये जाने पर प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जाएगा।
१२. किसी भी मादक द्रव्य, चाय–कॉफी आदि का सेवन निषिद्ध होगा।
१३. शिविर के प्रारम्भ दिन से लेकर समापन–सत्र पर्यन्त पूर्ण रूप से शिविर में भाग लेना अनिवार्य होगा।
१४. नियम व अनुशासन के पालन को आवेदन में ही लिखित स्वीकार करना होगा।

उपरिलिखित किसी भी नियम व अनुशासन का पालन करने में असमर्थ व अयोग्य प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जायेगा।

प्रार्थियों के लिए सूचनाएँ–मन्त्री परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर (राज.) से संपर्क कर शिविर से

पूर्व शुल्क जमा करवा कर अपने नाम का पंजीयन करा लें। शिविर में माता-बहिनें भी भाग ले सकती हैं। पुरुषों एवं महिलाओं के आवास की सामूहिक व्यवस्था पृथक्-पृथक् की जाती है। पृथक् कक्ष चाहने वालों को अतिरिक्त शुल्क १००० से २००० रु. देय होता है। पृथक् कक्ष की व्यवस्था पूर्व सूचना व उपलब्धता के अनुसार की जाती है। ऋषि उद्यान में दरी, गद्दे, तकिए एवं बर्तन उपलब्ध हैं शेष दैनिक उपयोग की वस्तुएँ यथा मंजन, ब्रश, साबुन, तेल, दवाएँ, बिछाने-ओढ़ने की चादरें, लिखने के लिए संचिका (नोटबुक), लेखनी, करदीप (टार्च) आदि को साधक अपने साथ लाएँ। वस्त्र सादगी एवं शिष्टाचार के अनुकूल हों, आभूषणों एवं सुगन्धित द्रव्यों का उपयोग न हो। आपके पास योगदर्शन हो तो साथ लाएँ अन्यथा यहाँ भी क्रय किया जा सकता है। सतर्कता की दृष्टि से कीमती वस्तुएँ साथ न लायें। यदि आपको कोई संक्रामक रोग, तेज खांसी, दमा, मिर्गी आदि मानसिक रोग, वायु विकार या अन्य गंभीर रोग हो, तो कृपया शिविर में आना स्थगित रखें। यदि अपने कार्य स्वयं न कर सकते हों तो सहायक साथ में लायें। अजमेर या निकटवर्ती स्थल (पुष्कर) देखना चाहें, तो शिविर से पूर्व या पश्चात् अतिरिक्त समय निकाल कर आयें। लौटने का रेल-आरक्षण शिविर में आने से पूर्व करवा लें। अजमेर पहुँचने की सूचना घर पर देनी हो तो शिविर स्थल में प्रवेश से पहले दे देवें। खाने पीने की वस्तुएँ साथ न लावें।

यह शिविर परोपकारिणी सभा, अजमेर के सौजन्य से आयोजित किया जा रहा है। शिविर शुल्क १००० रु. मात्र जमा करना होगा। शिविर में भाग लेने वालों को शिविर के प्रारंभ दिनांक को सायं चार बजे तक शिविर स्थल ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर में पहुँच जाना आवश्यक है क्योंकि इसी दिन शाम को शिविर के अनुशासन एवं विभिन्न व्यवस्थाओं संबन्धी महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ दी जाएँगी। शिविर का समापन अन्तिम दिन दोपहर एक बजे तक होगा। शिविर समाप्ति से पूर्व जाने की अनुमति नहीं दी जायेगी।

शिविर से आपका जीवन श्रेष्ठतर व पवित्रतर बने, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

मंत्री, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर दूरभाष : ०१४५-२४६०१६४
email:psabhaa@gmail.com

: मार्ग :

ऋषि उद्यान शिविर स्थल पर पहुंचने के लिए फॉयसागर की ओर जाने वाली सिटी बस या ऑटो-रिक्शा, रेल्वे स्टेशन व बस स्टेण्ड से (वाया-आगरा गेट/फव्वारा चौराहा) सर्वदा सुलभ रहते हैं।

-संयोजक

परोपकारिणी सभा द्वारा आयोजित आगामी कार्यक्रम

१५ से २२ जून, २०१४- **योग-साधना शिविर (द्वितीय स्तर),**

सम्पर्क- ०१४५-२४६०१६४

विशेष- परोपकारिणी सभा द्वारा आयोजित पूर्व दो ध्यान-प्रशिक्षक-प्रशिक्षण शिविरों में प्रथम व उच्च प्रथम श्रेणी प्राप्त प्रशिक्षकों के लिए भी योग साधना शिविर (द्वितीय स्तर) में भाग लेने का अवसर रहेगा।

ऋषि मेला - ३१ अक्टूबर तथा १, २ नवम्बर २०१४

ध्यान प्रशिक्षण योजना

ध्यान का महत्त्व सदा से रहा है। आज के तनाव व प्रतिस्पर्धा के वातावरण में यह अधिक आवश्यक हो गया है। नई पीढ़ी यज्ञादि कर्मकाण्ड की अपेक्षा–ध्यान में अधिक रुचि व आकर्षण रखने लगी है। प्रौढ़ों व वृद्धों की आध्यात्मिक उन्नति की चाह ध्यान के माध्यम से पूरी हो सकती है। समाज सुधार व उन्नति के इच्छुक व इसमें प्रयत्नशील आर्यों को ध्यान प्रशिक्षण का उपाय सार्थक लगेगा। ऐसी इच्छा वाले सज्जन अपने यहाँ किसी भी आर्यसमाज, आर्य संस्था, विद्यालय, महाविद्यालय, गुरुकुल, सार्वजनिक स्थान आदि में 'ध्यान–प्रशिक्षण' करवाना चाहते हों, तो कृपया अपने व कार्यक्रम–स्थान, समय आदि की पूरी सूचना के साथ सम्पर्क करें।

परोपकारिणी सभा द्वारा प्रशिक्षित अनेक ध्यान–प्रशिक्षक इस कार्य में सेवा के लिए तैयार हैं। ये ध्यान–प्रशिक्षक आपके जनपद के निकट भी उपलब्ध हो सकते हैं। आयोजकों को कार्यक्रम हेतु स्थान, बैठक–व्यवस्था, आवश्यक हो तो माईक आदि की व्यवस्था, प्रशिक्षक के निवास, भोजन, आवागमन यात्रा आदि की व्यवस्था करनी होगी।

सम्पर्क–संयोजक, ध्यान प्रशिक्षण योजना, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर, ३०५००१, दूरभाष–०१४५–२४६०१६४, ईमेल–psabhaa@gmail.com

अतिथि यज्ञ के होताओं से अनुरोध

अतिथि यज्ञ के होताओं से उनकी वैवाहिक वर्षगांठ अथवा जन्मदिन व विभिन्न अवसरों पर ५१०० रु. प्रतिवर्ष सभा को प्राप्त होते रहते हैं। जो महानुभाव संकल्प के साथ इस पुनीत कार्य से जुड़े हुए हैं, उनसे हमारा अनुरोध है कि वे अपनी राशि भेजते समय जन्म तिथि/वैवाहिक वर्षगांठ आदि व दूरभाष संख्या सूचित करना न भूलें। साथ ही यह भी अवश्य सूचित करा देवें कि पहले से भिजवा रहे हैं अथवा नया शुरू किया है। आप अपनी राशि सभा के बैंक खाते में नगद अथवा चैक द्वारा जमा करा सकते हैं।

धनराशि भेजने हेतु सूचना

चैक, ड्राफ्ट, धनादेश (मनीआर्डर) द्वारा राशि भेजने वाले उस पर '**मन्त्री परोपकारिणी सभा**' अवश्य लिख दें। दानी महानुभाव ऑनलाइन भी राशि जमा करवा सकते हैं। भारतीय स्टेट बैंक में एक सहस्र तक की राशि जमा कराने वाले **२५ रु. बैंक सेवा शुल्क के रूप में अतिरिक्त** जमा करवाने की कृपा करें। कृपया राशि निम्नांकित बैंकों में ऑनलाइन भिजवाकर, जमा कराई गई स्लिप के साथ उद्देश्य लिखकर सभा कार्यालय को सूचित करवाने का कष्ट करें।

खाताधारक का नाम – परोपकारिणी सभा, अजमेर

१. बैंक खाता संख्या–091104000057530 बैंक का नाम–आई.डी.बी.आई. बैंक, पावरहाउस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर।
IFSC - IBKL0000091

२. बैंक खाता संख्या –10158172715 बैंक का नाम – भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।
IFSC - SBIN0007959

।। ओ३म् ।।

अलग-अलग स्तरों में योग-साधना शिविर

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि-उद्यान, अजमेर में वर्षों से अब तक योग्य आचार्यों द्वारा योग-साधकों का निर्माण करने के लिए वर्ष में दो बार योग से सम्बन्धित व ध्यान से सम्बन्धित शिविरों का आयोजन किया जाता रहा है और साधकों के सर्वांगीण विकास के लिए प्रयास किया जाता रहा है। समाज में और अधिक योग्य व आदर्श साधकों की आवश्यकता अनुभव करते हुए इस वर्ष जून मास के शिविर में नवीन पाठ्यक्रम की विधि अपनाकर इस दिशा में एक नया मोड़ दिया गया है।

परोपकारिणी सभा द्वारा ऋषि उद्यान में योग-साधना शिविर (प्राथमिक स्तर) के दो शिविर लगाये जा चुके हैं। यह शिविर ध्यान से सम्बन्धित, ईश्वर-जीव-प्रकृति के वास्तविक स्वरूप को जानने से सम्बन्धित, योगदर्शन व सांख्यदर्शन के कुछ प्रमुख विषयों के सूत्रों के माध्यम से प्राथमिक स्तर पर योगदर्शन व सांख्यदर्शन को जानने-समझने से सम्बन्धित, आत्मनिरीक्षण में कुछ नये विषयों को सूक्ष्मता से समझने से सम्बन्धित, दिनचर्या को अनुशासित व सात्त्विक बनाने से सम्बन्धित तथा विभिन्न सैद्धान्तिक व व्यावहारिक विषयों के ज्ञान से सम्बन्धित प्रारम्भिक स्तर के योग के इच्छुक साधकों के लिए लगाया गया। इस योग-साधना शिविर को आगामी वर्षों में चतुर्थ स्तर तक लगाने की योजना बनाई गई है। प्रारम्भिक स्तर से लेकर द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ स्तर तक के शिविरों में पूर्व सूचित पाठ्यक्रमित विषयों में अधिक से अधिक सूक्ष्मता, दिनचर्या में और अधिक अनुशासन व सात्त्विकता, आहार-शुद्धि से लेकर मन, आत्मा की शुद्धि पर्यन्त अनुभवात्मक स्तर पर योग-साधकों को ज्ञान करवाया जाएगा। प्रत्येक स्तर के साधकों को उनके सैद्धान्तिक व व्यावहारिक ज्ञान से सम्बन्धित तथा उनके व्यक्तिगत आचरण व अनुशासन को दृष्टि में रखते हुए परीक्षा-पद्धति के माध्यम से प्रथम-श्रेणी व उच्च प्रथम-श्रेणी के प्रमाण-पत्र दिए जायेंगे। इस प्रकार की विधि से योग्य साधकों को समाज में सम्मान मिलेगा तथा वे और अधिक उत्साह से समाज व देश के कल्याण के लिए कार्यरत होंगे, उन्हें देखकर अन्य साधक भी प्रेरित होंगे।

परोपकारिणी सभा व गुरुकुल ऋषि उद्यान के योग्य आचार्यों व संयोजकों द्वारा नवनिर्मित इस योजना के प्राथमिक स्तर में पर्याप्त उपलब्धि हुई है। भविष्य में इस योजना में आप सब के सहयोग की आवश्यकता है।

लेखकों से निवेदन

परोपकारी में उन लेखों, कविताओं, रचनाओं को दिया जाता है, जो **मौलिक व अप्रकाशित** हों। अत: सभी लेखकों से निवेदन है कि वे अपनी उन्हीं रचनाओं को भेजें जो मौलिक व अप्रकाशित हों।

अनेक लेखक मौलिक व अप्रकाशित रचना तो भेजते हैं, किन्तु उसे एक साथ **अनेक पत्रिकाओं को भेजते हैं।** अत: लेखकों से यह भी निवेदन है कि वे कृपया परोपकारी को वे ही रचना भेजें, जो अन्य पत्रिकाओं के लिए न भेजी हो। परोपकारी में छपने के बाद यदि अन्यत्र भेजना चाहें तो यह उनकी इच्छा पर निर्भर करता है।

कृपया लेख के अन्त में अपना **पूरा पता व चल-दूरभाष संख्या अवश्य लिखें।** लेख के स्वीकृत-अस्वीकृत होने की सूचना चल-दूरभाष पर संक्षिप्त संदेश द्वारा प्रेषित कर दी जायेगी। **परोपकारिणी सभा द्वारा रचनाओं के लिए किसी प्रकार का भुगतान नहीं किया जाता है।**

रचयिता अपनी रचना की एक प्रति कृपया अपने पास रखकर भेजें, क्योंकि **अस्वीकृत रचनायें डाक द्वारा लौटाई नहीं जाती हैं।** स्वीकृत रचना परोपकारी के किसी आगामी अङ्क में देखी जा सकती है। रचना के प्रकाशन में छ: माह या अधिक समय भी लग सकता है, अत: कृपया तब तक रचना को अन्यत्र न भेजें।

-संपादक

सृष्टि–हमारी दृष्टि में

– पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय

पिछले अंक का शेष भाग.....

७. स्वप्न आता है रोगी को– वे लोग जो संसार को एक स्वप्न के रूप में देखते हैं, वे सुसंगत रीति से (विथ कन्सीटेन्सी) यह नहीं मान सकते कि सृष्टि–कर्त्ता एक सर्वज्ञ व सर्वशक्तिमान् सत्ता है। जागृत अवस्था के आरम्भ होते ही स्वप्न विलुप्त हो जाता है और स्वप्न के टूटते ही स्वप्न का ताना बाना बुनने वाला एजन्ट भी नहीं रहता। एक मनुष्य कब स्वप्न देखता है? जब तक कोई जागता, तब तक स्वप्न नहीं देख सकता। वह तभी स्वप्न देखता है जब उसके अंग इतने थक टूट जाते हैं कि वह बाह्य जगत् से अपना सम्बन्ध नहीं रख सकते और मन भी इतना अधिक थका होता है कि वह गहरी निद्रा नहीं ला सकता। एक स्वस्थ मनुष्य तो बिस्तर पर जाते ही गहरी निद्रा में डूब जाता है। वह कोई स्वप्न नहीं देखता। स्वप्न तो स्वास्थ्य में किसी विकार का चिन्ह हैं। वेदान्त दर्शन में एक सूत्र आता है:–

'वैधर्म्याच्च न स्वप्नादिवत्'।[१]

स्वप्न में कुछ भी व्यवस्था नहीं– संसार स्वप्न के समान मिथ्या नहीं है। यदि स्वप्न भी जागृत अवस्था जैसे ही क्रमबद्ध व व्यवस्थित होते तो दोनों अवस्थाओं में कोई भेद न होता। कल्पना कीजिये कि आपके घर में एक अंधेरा कमरा है जिसमें एक छोटी सी खिड़की दे रखी है। जो कुछ भी आप बाहर से घर पर लाते हैं, बिना किसी उचित व्यवस्था के इसमें फेंकते जाते हैं। आप एक कोट लाए और इस कमरे में फेंक दिया फिर आप आम लाए। वे भी उसी प्रकार वहीं फेंक दिये गए। तत्पश्चात् आप तेल लाए, वह भी वहीं फेंक दिया फिर आपने कुछ कागज प्राप्त किए उनकी भी वही गति हुई। इस प्रकार कमरा असंख्य वस्तुओं से भरा पड़ा है। अब कल्पना करो कि आप इस अस्त व्यस्त कमरे से कुछ लेना चाहते हैं। आप की बड़ी विचित्र दशा होगी। आप की घबराहट की तब कोई सीमा ही नहीं होगी। आप एक टोपी को खोजेंगे परन्तु आपके हाथ जुराबों की एक जोड़ी लगेगी। आप एक आम चाहेंगे और एक चूहा हाथ में आयेगा। यही घबराहट एक स्वप्न द्रष्टा की होती है। वह प्रयाग में सोता है और देहली के स्वप्न लेता है। उसक सिर उसके कंधों पर ठीक ठाक होता है परन्तु वह स्वप्न देखता है कि उसका कटा हुआ सिर उसके हाथ में है। यह गडबड़ या अव्यवस्था स्वप्नों का एक चिन्ह है। यदि जगत् भी स्वप्न समान ही होता तो इसके रचियता को सर्वज्ञ व सर्वशक्तिमान् कोई न कहता। यदि परमात्मा भी इतना चञ्चल, अस्थिर और क्रमहीन होता तो उसके उपासक व्यवस्था का पाठ कभी सीख ही नहीं सकते।

बिना बीज के कोई सा फल पाओ– स्वप्न में तो आम का वृक्ष इमली का फल दे सकता है। जो लोग स्वप्नवत् मिथ्या जगत् के रचयिता की पूजा करते हैं वे एक आम या पत्थर बोकर इमली की प्राप्ति की आशा कर सकते हैं। वे बिना किसी बीज के बोये भी इमली की आशा कर सकते हैं। कुछ लोग इस बात में भी सन्तोष कर सकते हैं कि व्यवहारिक जगत् कुछ और है और परम सत्य कुछ और ही है। यह विश्वास रखो कि जैसे यह सत्य है परन्तु ये लोग यह भूल जाते हैं कि हमारा सम्पूर्ण व्यवहार हमारी सोच व चिन्तन से प्रभावित होता है। यदि स्वप्न की मान्यता हमारे मनों में गहराई से घुसी है तो फिर हम किसी भी व्यवहारिक कार्य में अपना ध्यान नहीं लगा सकते। यह ठीक है कि खाने–पीने सरीखे अनभिप्रेत (अनिच्छत) कार्य समय पाकर स्वत: ही होते जाते हैं। इनके लिये चाहना या निश्चय नहीं करना होता परन्तु जब तक हमारा मानसिक दृष्टिकोण ठीक न हो हम वह लक्ष्य या वस्तु नहीं प्राप्त कर सकते जिसके लिए परिपक्व निर्णय व दृढ़ विश्वास की आवश्यकता होती है। यूरोप विज्ञान में तब तक कोई उन्नति न कर सका जब तक वह इस दोष युक्त मानसिकता का शिकार था। भारत में भी स्वप्न की मान्यता ने जागने वाले लोगों को थपथपा कर सुला दिया।

यह विश्वास करना कि संसार एक स्वप्न है और यह भी मानना कि एक परमात्मा उसका संचालन करता है– इन दोनों मान्यताओं में कोई तालमेल नहीं। भारत में ऐसे लाखों साधु सन्त हैं जो यह मानते हैं कि संसार मात्र एक स्वप्न है। वे गीता का पाठ करके व माला के मनके फेर कर ही सन्तुष्ट हैं। संसार के बारे में उनके दृष्टिकोण का ही यह परिणाम है।

८. केवल एक अनादि सत्ता?– कुछ आस्तिक यह मानते हैं कि परमात्मा ब्रह्माण्ड का उत्पत्ति कर्त्ता और स्वामी है। परन्तु और कोई स्वतन्त्र व अनादि सत्ता नहीं है।

सृष्टि उत्पत्ति से पूर्व परमात्मा के अतिरिक्त कुछ भी नहीं था। उसने जगत् को रचा। उसने संसार को क्यों बनाया? यह कोई नहीं जानता। एक उत्पत्ति-कर्त्ता का यह अधिकार है कि वह जो चाहे सो बनावे। हमें परमात्मा के प्रति आज्ञाकारी होना चाहिए। वह हमारा स्वामी है और हम उसी द्वारा निर्मित खिलौने हैं जगत् तो केवल एक कठपुतलियों का नाच है। कठपुतलियाँ स्वयं नहीं नाचा करतीं प्रत्युत किसी और के संकेत करने या नचाने से नाचती हैं। इस सत्ता को हम परमात्मा कहते हैं। इस प्रकार की मानसिकता मनुष्य को सृजन व परिश्रम करने में सहायक नहीं होती। होगा वही जो परमात्मा चाहेगा। फिर अपने हाथ पैर क्यों हिलाने?

हमारे प्रयत्नों से कुछ बनने बनाने वाला नहीं। यदि परमात्मा चाहेगा तो वह हमें सब कुछ देगा चाहे कोई भी काम न करें। यदि वह ऐसा नहीं चाहेगा तो फिर चाहे कितना भी परिश्रम क्यों न कर लें, हम कुछ भी नहीं पा सकते महात्मा मलूकदास जी ने कहा है:-

अजगर करे न चाकरी, पंछी करे न काम।
दास मलुका कह गये, सबके दाता राम।।

खेल व खिलौना?- प्रत्येक घटना के घटित होने पर हम पुकार उठते हैं, ''यह ईश्वर की क्रीड़ा है।'' इस 'क्रीड़ा सिद्धान्त' को मानने वालों ने परमेश्वर को एक खिलाड़ी और मनुष्य को एक खिलौना बनाकर रख दिया है। खिलौना तो खिलौना ही होता है। दुर्भाग्य से यह खिलौना एक मूर्ख लड़के के हाथों में है, किसी विचारशील मनुष्य के हाथों में नहीं है। एक बुद्धिमान् व्यक्ति जो कुछ भी करता है वह एक अच्छी परियोजना व प्रयोजन का प्रकाश या प्रदर्शन करता है। क्रीड़ा तो केवल मनोरंजन के लिए है इसका और कोई प्रयोजन नहीं है तो वह प्रभु जैसा चाहे इसको खिलावे। इस क्रीड़ा में मानवीय स्फूर्ति-चाह, उत्साह या निर्णय के लिए कोई स्थान नहीं है। अधिकांश भक्त इसी श्रेणी में आते हैं इसलिये भक्ति व कर्म में कोई सन्तुलन नहीं है। पुरुषार्थी पुरुषों का भक्ति व आस्तिक्य में कोई विश्वास ही नहीं रहा। वास्तव में इस असंगति का (ताल मेल न होने का) कारण भक्ति नहीं है प्रत्युत भ्रमित और कपोल कल्पित भक्ति है। जो निठल्ला, कर्महीन व्यक्ति केवल भगवान् का नाम रटता रहता है उसे उसका सबसे अच्छा उपासक समझा जाता है।

९. संसार एक कारागार?- कुछ आस्तिक यह मानते हैं कि संसार एक कारागार है। पूर्व जन्म में हमने कोई घोर पाप किया जिसके फल स्वरूप हमें इस पीड़ादायक जगत् में रख दिया गया है। जब हम इस दण्ड से मुक्त होते हैं तो हमें आनन्द की अनुभूति होती है। यहाँ से फिर हम कहाँ जायेंगे? स्वर्ग में। स्वर्ग कहाँ है और उसका स्वरूप क्या है? इसका कुछ भी पता नहीं परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि स्वर्ग इस जगत् से तो बहुत अच्छा ही होगा। आओ इस संसार को छोड़ने का यत्न करें क्योंकि यहाँ सिवाय दु:ख के कुछ भी नहीं है।

यह एक बन्दी की मानसिकता है। कारगार की मान्यता ने तो मनुष्य को एक शुद्ध व सीधा सादा बन्दी बना कर रख दिया है। कोई बन्दी अपने लिए तो कुछ भी नहीं करता और न ही स्वेच्छा से कुछ करता है। वह करेगा भी क्यों? क्या वह एक बन्दी के सिवा कुछ है? उसे तो वही रूखी सूखी रोटी मिलेगी भले ही वह अनाज पीसे अथवा गालीचा बुने। उसका भोजन तो निश्चित है । उसे अपने परिश्रम के अनुपात से कुछ नहीं मिलता। ऐसे व्यक्तियों से किसी स्वतन्त्र कार्य की आशा करना निरर्थक है। उनका मस्तिष्क तो बन्दियों के समान उसी डगर में घूमता है।

प्रश्न यह है कि क्या कारागार का यह सिद्धान्त हमारे स्वरूप के अनुरूप है? वेद का घोष है:-

जीवेम शरद: शतम्।[२]

आओ। हम सौ वर्ष तक जियें। जब कोई हमें प्रणाम करता है तो हम उसे आशीष देते हुए यह कामना करते हैं, ''ईश्वर आपको चिरायु करें।'' हम अपने लिए सौ वर्ष के कारागार जीवन की क्यों कामना करें? और हम अपने प्रियजनों के लिये एक दीर्घ कालीन जेल-जीवन की क्यों चाहना करें। यदि मैं एक कारागार में बन्दी के रूप में बन्द हूँ और यदि मुझे यह पता चल जाए कि मेरे पुत्र को भी उसी कारागार में ठूँस दिया गया है, तब मेरी यह स्वाभाविक इच्छा होगी कि यदि मैं स्वयं नहीं तो भी मेरा पुत्र तो तत्काल कारागार से छूटना चाहिए।

जन्म पर हर्ष क्यों ओर मरण पर शोक क्यों?

क्या कोई ऐसा चाहता है? पुत्र के पैदा होने पर एक माता कितनी प्रसन्न होती है। आप इस हर्ष की क्या व्याख्या करेंगे? यदि वह स्वयं कारागार में है तो क्या वह यह चाहेगी कि उसका पुत्र भी उस कारागार-जीवन की पीड़ायें भोगे? हम अपने स्वजनों के जन्म-दिवस क्यों मनाते हैं और हम उनकी मृत्यु पर शोक क्यों प्रकट करते हैं? क्या जेल में आना कोई अच्छी बात है? क्या कारावास से मुक्ति कोई बुरी बात है? परन्तु मनुष्यों में अनेक ऐसे हैं जो

जीवन को निरन्तर एक कारागार के रूप में ही देखते हैं और अपना समय रोने धोने में ही बिताते हैं। उनके लिए संसार सुख से शून्य है। न तो वे आप आनन्दपूर्वक जीते हैं और न ही दूसरों को सुखपूर्वक जीने देते हैं। हमारा समस्त जीवन रोने धोने में ही व्यर्थ जाता है। रोना, रोना और कुछ नहीं बस रोना यही जीवन है। यह दर्शन कितना भयानक है, जेल-जीवन का दर्शन। देखने में यह आस्तिकों का दर्शन है। परन्तु इससे आस्तिकवाद की गरिमा कोई बढ़ती नहीं, घटती ही है। सामान्य रूप से जो कुछ हम यमदूत-मृत्यु के देव के बारे में सोचते हैं, वही कुछ हम परमेश्वर के बारे में भी सोचते हैं। वह चोर जिसे कारागार में डाला जाए, वह अपने जेल-अधिकारी (जेलर) को धन्यवाद नहीं देता। वह तो उसे केवल कोसता है। इसी प्रकार जो यह समझते हैं कि वे एक प्रकार के कारागार में हैं, वे सच्ची भक्ति भावना से युक्त नहीं हो सकते। उनमें ईश्वर के लिए सच्चा स्नेह नहीं हो सकता।

अच्छा। यदि आस्तिकों का यह दृष्टिकोण भ्रान्ति मूलक है, तो क्या फिर हम एक आस्तिक्य विरोधी व्यवहार से उन्नति कर सकते है? आईये। इस बिन्दु पर विचार करें। यदि यह जगत् ज्ञान-शून्य व चेतना विहीन जड़ है, और यदि जीवन जौ आदि के उफान के परिणाम स्वरूप पैदा होने वाली एक क्षणिक विस्फोट से अधिक कुछ भी नहीं तो फिर जगत् की उन्नति का कुछ भी अर्थ नहीं रहता। एक जड़ पदार्थ की उन्नति का कुछ भी अर्थ ही क्या है? एक ईंट को इससे क्या कि यदि उसे एक घर के छत पर लगाया जाए अथवा फर्श में? एक वीर सैनिक अपने देश पर जीवन निछावर करने के लिए तैयार है। यदि उसका जीवन-मृत, जीवन-शून्य प्रकृति में एक क्षणिक उफान से अधिक कुछ भी नहीं तो फिर जीवन देने व जीवन लेने का मूल्य ही क्या है? यदि देश से हमारा अभिप्राय केवल जड़ प्रकृति का एक पिंड मात्र है तो फिर इसकी स्वतन्त्रता और बन्धन में कोई विशेष अन्तर नहीं है। इसका भी कोई विशेष महत्त्व नहीं है यदि लाखों जन मरते हैं या लाखों जीते हैं। इस मानसिकता ने जीवन का मूल्य घटा दिया है। मनुष्य का मूल्य एक मशीन के पुर्जे जितना भी नहीं है। एक जीवन शून्य-जगत् में अहिंसा और हिंसा का क्या अर्थ है? 'औचित्य' शब्द का क्या अर्थ है? और अनौचित्य क्या है? जीवन तो मात्र एक लहर है, जल के तल पर वायु का एक झटका है। कुछ लहरें बड़ी होती हैं और कुछ छोटी। एक लहर है क्या? यह जल के मुख पर वायु का एक थप्पड़ मात्र है और कुछ भी नहीं। इसे शीघ्र या विलम्ब से विलुप्त होना ही है। सच कहें तो कहीं कुछ है ही नहीं। भारत के एक प्रसिद्ध पुरातन नास्तिक मत चारवाक ने सुखी जीवन का एक सूत्र प्रस्तुत किया था-

यावज्जीवेत्सुखं जीवेदृणं कृत्वा घृतं पिबेत्।
भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुतः।।[३]

अर्थात् जब तक आप जियें सुख से जियें। ऋण लेकर भी मौज मारो। जब शरीर भस्मीभूत हो जाएगा तो फिर किसने आना और किसने जाना। ऋण लेकर सुख उपभोग करो। जब आप मर जायेंगे तो यही आपका अन्त है फिर यह ऋण आपसे कौन प्राप्त करेगा। बहुत से ऐसे आस्तिक हैं जो इस सिद्धान्त पर आचरण करते दिखाई देते हैं। जहाँ तक नास्तिकों का सम्बन्ध है, वे अपने ऐसे व्यवहार के लिए न्यायसंगत ही हैं, क्योंकि वह वैसा ही करते हैं जैसा उनका विश्वास है। परन्तु यदि यह नास्तिकपन वाला दृष्टिकोण और फैलेगा तो फिर विश्वास का सर्वथा लोप हो जायगा तथा ऋण प्राप्त करना भी असम्भव होगा।[३] आप सुख कैसे भोगेंगे? जगत् का क्या बनेगा? और इसके निवासियों का कैसा व्यवहार होगा?

शेष भाग अगले अंक में.....

वेदगोष्ठी का आयोजन

प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष पर २७वीं वेदगोष्ठी का आयोजन ऋषि मेले के साथ ही दीपावली के पश्चात् ३१ अक्टूबर तथा १, २ नवम्बर २०१४, शुक्र, शनि, रविवार को किया जा रहा है। इस वेदगोष्ठी का विषय 'भारतीय मत सम्प्रदाय और वेद' रखा गया है। इससे पूर्व वर्ष में कुछ विचार ग्यारहवें समुल्लास के सम्बन्ध में विचार किया गया था। इस वर्ष की गोष्ठी में ऋषि दयानन्द के पश्चात् प्रचलित मत सम्प्रदायों के सिद्धान्त और उद्देश्यों पर विशेष चर्चा होगी। किन विशेष सम्प्रदायों को विचार के लिए लिया जायेगा, इसकी सूचना आगे के अङ्क में दी जा सकेगी।

श्रेष्ठ निबन्ध के लिए प्रथम ६१००, द्वितीय ४१००, तृतीय पुरस्कार ३१०० रुपये रखे गये हैं। गत वर्ष के श्रेष्ठ निबन्धों को आगामी ऋषि मेले के अवसर पर पुरस्कृत किया जायेगा।

- संयोजक

आर्य समाज द्वारा ऋषि निर्वाण उत्सव

- संजय शास्त्री

फेसबुक पर महर्षि दयानन्द सरस्वती के ''निर्वाण उत्सव'' के लिये ''दिल्ली की समस्त आर्य समाजों व आर्य संस्थाओं'' की ओर से एक निमन्त्रण को देखकर मेरे एक परम स्नेही मित्र ने ''आर्य समाज द्वारा ऋषि निर्वाण उत्सव'' शीर्षक से कुछ ऐसी प्रतिक्रिया दी:-

''निर्वाण पर उत्सव नहीं हुआ करते। उत्सव का सम्बन्ध प्रसन्नता से है। यहाँ निर्वाण उत्सव के स्थान पर ''निर्वाण कार्यक्रम'' या ''निर्वाण सभा'' लिखा जाना चाहिये था। निर्वाण उत्सव तो यह सम्भवत: पौराणिकों के लिये हो। आर्यसमाजियों के लिये यह कोई उत्सव नहीं। आश्चर्य होता है विद्या के व्यसन की समृद्ध परम्परा का वाहक आर्यसमाज सामान्य भाषा सम्बन्धी त्रुटियों को दूर करने के लिये भी उदासीन नजर आता है।''

जैसा कि स्पष्ट है, मेरे प्रबुद्ध मित्र के विचार में ''निर्वाण'' मृत्यु का समानार्थक है और ''निर्वाण उत्सव'' का अर्थ ''मृत्यु उत्सव'' भी समझा जा सकता है, जो सामान्य जीवन-व्यवहार में न केवल अटपटा लगता है, अपितु ''मृत्यु उत्सव'' मनाने वाले के निष्करुण निर्मोहीपन और अकृतज्ञता को भी व्यक्त करता है। इसे पढ़कर मेरे विचार भी विचलित हो उठे और मैं जिज्ञासावश स्वामी दयानन्द के सत्यार्थप्रकाशादि ग्रन्थों और आर्य समाज के इतिहास के अन्वीक्षण में लग गया। जो कुछ मिला उसे सुधी जनों के विचारार्थ यथामति प्रस्तुत करता हूँ।

इस लेख को समझने के लिये ''निर्वाण'' शब्द और उसके अर्थ को समझना आवश्यक है। पाणिनीय संस्कृत व्याकरण परम्परा के अनुसार निर्वाण का अर्थ निर्वृत्ति या ''शान्त हो जाना'' है, और उसके उदाहरण है: ''**निर्वाणो दीप:, निर्वाणो भिक्षु:।**'' अर्थात् दीपक बुझ गया, भिक्षु का निर्वाण हो गया। लेकिन इसके दार्शनिक अभिप्रायों में भेद है। अमरकोष के अनुसार निर्वाण का मुख्य अर्थ मोक्ष है : ''**मुक्ति: कैवल्यनिर्वाणश्रेयोनि:श्रेसामृतम्। मोक्षोऽपवर्ग:** (१.५.६), और दूसरा अर्थ शान्त हो जाना या बुझ जाना भी है ''**निर्वाणो मुनिवहन्यादौ**'' (३.१.९६)।[१]

इससे एक बात स्पष्ट हो जाती है कि ऋषि दयानन्द के अनुयायी ''निर्वाण उत्सव'' मनाते हैं क्योंकि उनके विचार में ऋषि दयानन्द की प्राकृत मृत्यु नहीं हुई थी, अपितु उनको मोक्ष प्राप्ति हुई थी। इसका कारण सम्भवत: ऋषि दयानन्द का देह-विसर्जन काल में प्रभु-इच्छा में समर्पण ही था। ''किञ्चित् काल पर्यन्त समाधिस्थ रहे, पुन: आँखें खोली और अपने अन्तिम उद्गार व्यक्त किये- ''हे दयामय सर्वशक्तिमन् परमेश्वर! तेरी यही इच्छा है, तेरी यही इच्छा है, तेरी इच्छा पूर्ण हो, अह, तूने अच्छी लीला की।'' उस समय महाराज सीधे लेटे थे, करवट बदली और श्वास को रोक कर एक बार ही बाहर निकाल दिया। दयानन्द का अमर आत्मा पाञ्चभौतिक देह का परित्याग कर सर्वात्मा से जा मिला।''[२] महाभारत और गीता में भी निर्वाण का अभिप्राय यही है, और इसको ''परम सुख'' माना गया है।[३] परम पुरुषार्थ मोक्ष और ''परम सुख'' की उपलब्धि को उत्सव के रूप में ही मनाया जा सकता है, मुहर्रम मना कर नहीं और ऋषि दयानन्द की मान्यताओं से आहत पौराणिक लोग तो यह कभी मान ही नहीं सकते कि देहान्त के उपरान्त ऋषि दयानन्द को मोक्षावस्था प्राप्त हुयी थी।

ऐसा भी नहीं है कि लोक व्यवहार में ''मृत्यु उत्सव'' न मनाया जाता हो। यद्यपि बन्धु-बान्धव अपने प्रियजन के देहावसान पर अति दु:ख का अनुभव करते हैं जो अदम्य मृत्युविलाप के रूप में अभिव्यक्त होता है, तथापि स्वधर्म (वर्णाश्रम धर्म) का संस्तुत्य पालन करते हुए जीवन-सन्ध्या में देह-विसर्जन करने वाले सुजनों के प्रति एक विशेष आश्वासन-भाव भी रहता है। गृहस्थ-परम्परा में ऐसा पौत्र-प्रपौत्रादि के माध्यम से वंश-परम्परा के चलते रहने की सुनिश्चितता होने पर होता है और कई बार तो शवयात्रा गाजे-बाजे के साथ निकलती है और संन्यासी के जीवन में शिष्य-परम्परा अथवा सद्विचार-प्रचार की प्रतिष्ठा होने पर होता है। गृहस्थ-परम्परा में पितृ-ऋण और संन्यासी परम्परा में ऋषि-ऋण से अनृण होने पर ऐसा होता है, और इस उपलब्धि को प्रणाम होता है उत्सव।

किन्तु ''निर्वाण'' शब्द का ऋषि दयानन्द की मोक्ष प्राप्ति के प्रसंग में प्रयोग भी विचारणीय है। यद्यपि यह सत्य है कि निर्वाण का अर्थ मोक्ष, मुक्ति, अपवर्गादि है, तथापि यह भी सत्य है कि निर्वाण पद का आधुनिक प्रयोग गीता या संस्कृतकोष के अनुसार नहीं, अपितु बौद्धदर्शन परम्परा के अनुसार ''शून्यरूप'' अर्थ में होता है, जिसके अनुसार मोक्षावस्था या निर्वाणावस्था का अर्थ ''शून्यरूप''

अवस्था है, अर्थात् मरने वाले का शरीर और आत्मा दोनों ही नि:शेष हो जाते हैं, न शरीर बचता है और ना ही आत्मा बचती है। ऋषि दयानन्द ने भी इसका यही अर्थ समझा है: ''पूर्वोक्त 'भावनाचतुष्टय' अर्थात् चार भावनाओं से सकल वासनाओं की निवृत्ति से शून्यरूप 'निर्वाण' अर्थात् मुक्ति मानते है।''[४] सामान्यजन भी निर्वाण का यही अर्थ समझते हैं। जीवात्मा को अनादि-अनन्त मानने वाले ऋषि दयानन्द की मोक्षविषयक मान्यता बौद्धों के इस ''शून्यरूप'' निर्वाण से सीधे विरोध में खड़ी है। मुझे आश्चर्य नहीं होगा यदि ऋषि दयानन्द के प्रसंग में निर्वाण शब्द का प्रयोग बौद्ध परम्परा से ही आया हो। इस शब्द का प्रयोग कब और किसने किस भावना से सबसे पहले किया यह तो गवेषणा का विषय है, लेकिन श्री भवानीलाल भारतीय द्वारा लिखित ऋषि दयानन्द की प्रतिष्ठित और अनेक ऐतिहासिक प्रमाणों से संसिद्ध जीवनकथा ''नवजागरण के पुरोधा: दयानन्द'' में बौद्ध परम्परा के अन्य शब्दों का प्रयोग किया गया है। जैसे कि एक अध्याय का नाम ही है ''महाभिनिष्क्रमण'', जो ऐसे आरम्भ होता है: ''यह था मूलशंकर का महाभिनिष्क्रमण। अढ़ाई हजार वर्ष पूर्व कपिल वस्तु का राजकुमार सिद्धार्थ भी युवती पत्नी यशोधरा तथा दुध मुंहे बालक राहुल को छोड़, दु:खों का निदान तलाशने हेतु राजप्रासाद का त्याग कर इसी प्रकार साधना पथ का पथिक बन गया था'' (पृष्ठ २१)। यद्यपि निर्वाण शब्द का प्रयोग मुझे ''नवजागरण के पुरोधा: दयानन्द'' में नहीं मिला, लेकिन डॉ. सत्यप्रकाश सरस्वती इसी ग्रन्थ की प्रस्तावना ''द्वे वचसी'' के अन्त में लिखते हैं: ''स्वामी दयानन्द की निर्वाणशती के अवसर पर'' (पृष्ठ ४)। श्री राजवीर शास्त्री ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों में किसी भी तरह के परिवर्तन से विरोध जताते हुए ''सत्यार्थप्रकाश'' की भूमिका में लिखते हैं: ''किसी लेखक ने अपने मूल ग्रन्थ में किसी अन्य को पाठ परिवर्तन तथा टिप्पणियों में पाठ के विरुद्ध उल्लेख करने का अधिकार आज तक नहीं दिया तो फिर ऋषि दयानन्द के निर्वाण के पश्चात् उन की अनुपस्थिति में इस प्रकार की अनधिकार चेष्टा करना क्या आत्मविरुद्ध आचरण नहीं है।''[५]

निर्वाण का अर्थ मोक्ष मुक्ति आदि है और इसका प्रयोग ऋषि दयानन्द के प्रसंग में करने से भी कोई अर्थ संकट नहीं होगा, किन्तु ऋषि दयानन्द की विचारधारा और मान्यता को ध्यान में रखते हुए ''निर्वाण'' के स्थान पर ''मोक्ष'' या ''मुक्ति'' जैसे शब्दों का प्रयोग प्रशस्य होगा और इससे कोई भ्रान्ति भी नहीं होगी। उचित शब्दों का प्रयोग न होने से शब्दों और उनके अर्थों से जुड़ी मान्यताओं से संकर (घालमेल) होने का भय रहता है और फिर ऋषि दयानन्द तो मोक्ष विषय पर अपने दोनों ही प्रमुख ग्रन्थों सत्यार्थप्रकाश और ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में विस्तार से चर्चा करते हैं, इसलिये यह भी नहीं माना जा सकता की शब्द-विचार-दारिद्र्य के कारण निर्वाण पद का प्रयोग ऋषि दयानन्द के देहावसान या मोक्षावस्थाप्राप्ति के प्रसंग किया गया हो।

टिप्पणियाँ

१. यद्यपि ऋषि दयानन्द ने अमरकोष को अपाठ्य ग्रन्थों में गिना है तथापि संस्कृतविदों में अमरकोष की प्रतिष्ठा के कारण और अन्य कोष के अभाव में इसका आश्रय लिया है। वाचस्पत्यम् और शब्दकल्पद्रुम जैसे विशाल कोषों में भी निर्वाण का अर्थ प्राकृतजन प्रसिद्ध ''मृत्यु'' नहीं दिया है, वहाँ भी मोक्ष और तत्तुल्य अर्थ ही लिखा है। अमर कोष:, राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्, दिल्ली, २००३

२. नवजागरण के पुरोधा: दयानन्द, वैदिक यन्त्रालय, पृष्ठ ५४३-५४४

३. एक बार तो महाभारत में इसका वर्णन ऋषि दयानन्द के अन्तिम व्यवहार से कुछ मिलता है: **विहाय सर्वसंकल्पान्बुद्धा शारीरमानसान्। शनैर्निर्वाणमाप्नोति निरिन्धन इवानल:** (महाभारत १४.१९.१२)। अर्थात् शारीरिक और मानसिक सभी संकल्पों का बुद्धि से परित्याग (समर्पण?) कर (योगी) इन्धनरहित अग्नि के समान शान्त हो जाता है।

४. सत्यार्थप्रकाश द्वादशसमुल्लास:, पृष्ठ ३८७। इस लेख में उद्धरण वैदिक यन्त्रालय द्वारा १९८३ में प्रकाशित सत्यार्थप्रकाश से लिये गये हैं ।

५. सत्यार्थप्रकाश, आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट्, दिल्ली, प्रकाशकीय पृष्ठ ६-७

- केनडा

योगी लोग मधुर प्यारी वाणी से योग सीखने वालों को उपदेश करें और अपना सर्वस्व योग ही को जानें तथा अन्य मनुष्य वैसे योगी का सदा आश्रय किया करें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ७.११

अतिथि यज्ञ के होता बनें

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा आर्य जगत् की एक मात्र ऐसी संस्था है जो सामूहिक सहयोग से ऋषि द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति हेतु कृत संकल्प है।

सभा निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। निरंतर अबाध गति से ऋषि उद्यान को आकर्षक एवं जन उपयोगी बनाने हेतु नव निर्माण करा रही है, वेद प्रचार पूरे देश में संचालित कर रही है, वेदों का एवं ऋषि ग्रंथों का प्रकाशन निरंतर जारी है।

प्रातः एवं सायं दैनिक यज्ञ– प्रवचन, वेद–पाठ, उपनिषद्, दर्शनादि शास्त्रों की कथा द्वारा वैदिक धर्म का कार्य नियमित रूप से आश्रम में चलता है। ***गुरुकुल***– आर्ष पद्धति से संचालित गुरुकुल में पढ़ रहे ब्रह्मचारी जो साधना एवं समाज सुधार का लक्ष्य लेकर अध्ययनरत हैं उनकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति निःशुल्क की जाती है। ***अतिथि सेवा***– अतिथियों को यथोचित सुविधा प्रदान करने हेतु सभा पूर्ण रूपेण प्रयासरत है एवं सभी सुविधाएँ आवास, प्रातराश, भोजन की व्यवस्था निःशुल्क की जाती है। ***गोशाला***– गोशाला में चालीस के लगभग पशु हैं। इससे अधिक का स्थान नहीं है। आश्रमवासियों को गोशाला में उत्पादित दुग्ध का निःशुल्क वितरण किया जाता है। ***वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम***– वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम में रहकर साधनारत वानप्रस्थियों एवं संन्यासियों की सभी प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति सभा द्वारा निःशुल्क की जाती है। स्वाध्याय एवं साधना की व्यवस्था है। ***विशाल पुस्तकालय***– इसमें दुर्लभ ग्रंथों का संग्रह है, सभा द्वारा शोध कर्ता छात्रों को शोध कार्य हेतु ग्रंथ निःशुल्क प्रदान किए जाते हैं जिनका लाभ स्वाध्यायशील व्यक्ति भी उठा सकते हैं। ***व्यायामशाला***– योग्य शिक्षक द्वारा नगर के युवाओं को ऋषि उद्यान में निःशुल्क व्यायाम प्रशिक्षण दिया जाता है। सभा द्वारा नियुक्त व्यायाम शिक्षक आसपास के गांवों से भी आर्यवीर दल का प्रशिक्षण शिविरों में प्रदान करते हैं।

ये सभी क्रियाकलाप आपके पावन उदार सहयोग से ही संभव हैं। जैसा कि सर्वविदित है कि सभा का आधार ही आकाशीय दानवृत्ति है। आपको प्रतिदिन अतिथि मिलना संभव नहीं फिर अतिथि यज्ञ कैसे किया जाय इसका उपाय है, कुछ राशि प्रतिदिन अतिथि यज्ञ के नाम से निकाल ली जाये और उसको एकत्र कर अतिथि सत्कार में गुरुकुल में भोजन आदि के सहयोग में दे दी जाय।

सभा के धार्मिक क्रियाकलापों एवं आवासीय स्थल ऋषि उद्यान में उपर्युत पावन क्रियाकलाप लम्बे समय तक अबाध चलते रहें इसके लिए सभा की योजना है कि प्रतिदिन १० रुपये अथवा प्रतिवर्ष ५ हजार की राशि प्रदान करने वाले उदार यशस्वी दानदाताओं का नाम अतिथि यज्ञ के स्थायी सदस्यों में अंकित किया जाता है ऐसे सज्जनों के नाम का परोपकारी में प्रकाशन भी किया जाता है।

अनेक 'अतिथि यज्ञ के होता' सदस्यों का आग्रह है, निश्चित तिथि जन्मदिन, विवाह वर्ष गांठ या विशेष अवसर पर वे अपनी ओर से संस्था में भोजन कराना चाहते हैं। ऐसे महानुभावों से निवेदन है कि वे अतिथि यज्ञ के होता के रूप में एक दिन के भोजन व्यय की राशि पाँच हजार एक सौ रुपये भेजते हुए इच्छित दिन का विवरण सूचित करेंगे तो उसका उल्लेख आश्रम के सूचना पट्ट पर किया जा सकेगा।

यह अल्प राशि आप दैनिक संचय घट में जमा भी कर सकते हैं, वर्ष में लोग अरबों रुपए आग में पटाके फोड़कर जलाते हैं असावधानी से बिजली जलती छोड़ इसे गंवा देते हैं आदि ऐसी छोटी–छोटी असावधानियों को रोक कर हम उसकी बचत राशि इस पावन कृत्य हेतु सभा को वर्ष में आसानी से दे सकते हैं।

सभा शिविरों के आयोजन द्वारा जन सामान्य को ऋषियों की जीवन प्रणाली सिखा रही है। आप इस योजना में स्थायी सदस्य बनकर ऋषि का संकल्प *संसार का उपकार* की पूर्ति में एक स्तम्भ बनकर सभा को सम्बल प्रदान कर सकते हैं।

यदि अपने सामर्थ्य के अनुसार राशि को न्यूनाधिक करना चाहें तो आपकी स्वतन्त्रता है अधिक से अधिक लोग परोपकारिणी सभा से जुड़ सकें, आप ऐसा करके ऋषि दयानन्द के कार्यों को आगे बढ़ाने में सहायक होंगे इसलिए ऐसी राशि निश्चित की है। आप से प्रार्थना है अपना नाम पता और संकल्प लिखकर अवगत करायें और अतिथि यज्ञ के होता बनें। अपनी राशि प्रतिमाह अथवा सुविधानुसार मनीआर्डर/डीडी/चैक द्वारा अथवा स्वयं उपस्थिति होकर कार्यालय में जमा करा सकते हैं। आपका दान ८०जी (आयकर की धारा) के अंतर्गत कर मुक्त होगा।

अतः आपसे निवेदन है कि आप भी अतिथि यज्ञ के होता बनिये। जिन महानुभावों ने हमारा निवेदन स्वीकार कर यज्ञ में अपनी आहुति दी है, उनके नाम यहाँ प्रकाशित किये जा रहे हैं।

अतिथि यज्ञ के होता

(१ से १५ मई २०१४ तक)

१. श्री देवमुनि, अजमेर २. श्रीमती उर्मिला उपाध्याय, अजमेर ३. श्री देवेन्द्र अरोड़ा, नई दिल्ली ४. श्री हीरालाल चाँवला, नई दिल्ली ५. श्रीमती अल्पना कपूर, दिल्ली ६. श्री रजनीश कपूर, दिल्ली ७. श्री सुरेन्द्र मोहन विकल, लुधियाना, पंजाब ८. श्री एम.एल. गोयल, अजमेर ९. श्री डॉ. धनलाल सेन्द्रे, नागपुर, महाराष्ट्र १०. श्रीमती कमला देवी पँचोली, अजमेर ११. श्री मुमुक्षु मुनि, अजमेर १२. श्री मुरलीधर छापरवाल, अजमेर १३. श्री अशोक आर्य, खलिलाबाद, उ.प्र. १४. श्री वाजिद अली, खलिलाबाद, उ.प्र. १५. श्री आफताब आलम, खलिलाबाद, उ.प्र. १६. श्रीमती सुशीला आर्या, अजमेर १७. श्री धनराज प्रेम, विजयनगर, राजस्थान १८. श्री अजीत ममता, विजयनगर, राज. १९. महन्त शंकर राम, अजमेर २०. स्वामी देवेन्द्रानन्द, अजमेर २१. श्री करणसिंह, मुजफ्फरनगर, उ.प्र.।

–परोपकारिणी सभा, अजमेर।

गौभक्तों से निवेदन

ऋषि उद्यान में परमार्थ हेतु गौशाला संचालित है। गौशाला में उत्पादित गौवों के दूध का वितरण सभी गुरुकुलवासियों, संन्यासियों एवं आगन्तुक अतिथियों को नि:शुल्क दिया जाता है। आप सभी गौ–भक्तों एवं उदारमना दानदाताओं से सभा का निवेदन है कि गौओं को उत्तम चारा मिले इसके लिए जो भी सज्जन चारा दान देना चाहें, उनका स्वागत है। यदि आप दूरस्थ प्रदेश के हैं तो कृपया चारे हेतु अनुमानित राशि सभा को ड्राफ्ट/चेक/नगद भेज सकते हैं। यशस्वी दानदाताओं के नाम परोपकारी पत्रिका में प्रकाशित किए जाएंगे। आपका दान गौवों के संवर्धन में सहायक होगा।

ऋषि उद्यान में संचालित गौशाला के दानदाता

(१ से १५ मई २०१४ तक)

१. श्री अनिल शर्मा, अजमेर २. श्रीमती उर्मिला उपाध्याय, अजमेर ३. श्रीमती सरला गम्भीर, नई दिल्ली ४. श्री अनिरुद्ध पुरोहित, अजमेर ५. श्री राधेश्याम महेश्वरी, अजमेर ६. श्री बिरदीचन्द गुप्ता, जयपुर, राज. ७. श्री शान्तिस्वरूप, जयपुर, राज. ८. श्री अक्षय अवस्थी, ओरईया, उ.प्र. ९. श्री गगन आहुजा, रोहितक, हरियाणा १०. श्री राजेश, अजमेर ११. श्री शिवपाल सिंह राठौड़, अजमेर १२. श्री जगदीश शर्मा, अजमेर १३. श्री डॉ. धनलाल सेन्द्रे, नागपुर, महाराष्ट्र १४. श्री हेमचन्द सोनगरा, अजमेर १५. श्रीमती रेखा गौड़, जयपुर, राज. १६. श्री शिवांश कडेल, गुड़गाँव, हरि. १७. श्रीमती कमला देवी पँचोली, अजमेर १८. श्री अभिषेक शुक्ला, अजमेर १९. श्री सुभाष मित्तल, बरनावा, पंजाब २०. श्री राजेश त्यागी, अजमेर २१. राजपुताना म्युजिक हाऊस, अजमेर २२. श्री मुमुक्षु मुनि, अजमेर २३. श्री दिनेश मित्तल, अजमेर।

–परोपकारिणी सभा, अजमेर।

परोपकारी के सुधी पाठकों के लिए

आवश्यक सूचना

परोपकारी शुल्क भेजते समय नये या पुराने ग्राहक के उल्लेख के साथ–साथ ग्राहक संख्या अवश्य लिखें अन्यथा व्यक्ति के नाम से शुल्क जमा करने में कठिनाई आती है। फलस्वरूप पाठकों के पास पत्रिका नहीं पहुँच पाती है। ऐसे ही अपना नाम हटवाते व जुड़वाते समय दूरभाष संख्या सहित अपना पूरा विवरण लिखकर भेजें। ई.एम.ओ. के द्वारा शुल्क भेजने वाले ग्राहक भी सन्देश के साथ अपनी ग्राहक संख्या सहित पूरा विवरण भेजें। परोपकारिणी सभा आप सभी का सहयोग चाहती है।

सम्बन्ध-कितने आत्मीय, कितने गहरे?

- सुकामा आर्या

हमारे सम्बन्ध कई प्रकार के होते हैं। बचपन से लेकर आज तक हम सम्बन्धों के सहारे ही जी रहे हैं। माँ-बाप से, भाई-बहन से, सहपाठियों से, मित्रों से, सगे सम्बन्धियों से, विभिन्न स्तर के सम्बन्ध हमारे जीवन को चलाने में सहायक होते हैं। ईश्वर ने बड़ी अच्छी व्यवस्था कर रखी है कि समयानुसार परिस्थिति अनुसार हमारे सम्बन्ध बदलते रहते हैं या यूँ कहें कि इनका स्वरूप बदल जाता है। बचपन में जिस माँ के बिना जीवन सम्भव नहीं होता है- थोड़ा सम्भलते ही उसकी आवश्यकता कम होने लगती है। यौवन आते-आते वह लगभग समाप्त ही हो जाती है। फिर नए सम्बन्ध बनते हैं- मित्रों के, सहयोगियों के, अध्यापकों के- ये हमारे ध्यान का केन्द्र बन जाते हैं।

हम एक समय में, एक काल में जिस सम्बन्ध को पूरी निष्ठा से निभाते हैं, कालान्तर में उसे उतनी निष्ठा से नहीं निभा पाते हैं। क्योंकि परिस्थितियाँ बदल जाती हैं। जैसे विवाह के बाद व्यक्ति के जीवन मे माँ-बाप, भाई-बहन के साथ-साथ पत्नी, बच्चों का भी दायित्व आ जाता है। उसे दोनों में सामञ्जस्य बिठाना होता है। अगर विवाहोपरान्त भी वह उसी प्रकार से माँ-बाप, भाई-बहनों से सम्बन्ध, घनिष्ठता रखे और पत्नी व बच्चों की उपेक्षा करे तो ये न्याय संगत नहीं होगा। जो व्यक्ति समय व परिस्थितियों के अनुसार बदलते नहीं हैं- वे जीवन की दौड़ में पिछड़ जाते हैं।

अगर उबलते हुए पानी के बर्तन पर ढीले ढक्कन को जोर से दबाएंगे तो विभिन्न दिशाओं से भाप बाहर निकलेगी ही, दबाव से किसी परिस्थिति को हम केवल कुछ समय के लिए रोक सकते हैं, हमेशा के लिए नहीं। ऐसे ही अवांछित अधिकार व दबाव से हम सम्बन्धों में स्वयं जहर घोल लेते हैं। उचित दूरी व घनिष्ठता में सामञ्जस्य बिठाना होता है।

सम्बन्ध बनाए रखने के लिए दो मूलभूत आवश्यकताएँ हैं- संवाद व संवेदनशीलता। बुजुर्ग कहते हैं-

दिल मिले न मिले, हाथ मिलाते रहिए।

यानि बातचीत करनी नहीं छोड़नी चाहिए, या यूँ कहें कि अभिव्यक्ति नहीं छोड़नी चाहिए।

क्योंकि अगर जीवन में संवाद हट गया तो यकीनन वहाँ विवाद आ जाएगा जो हम किसी भी सम्बन्ध में नहीं चाहते हैं।

दूसरा पहलू है- संवेदनशीलता। हम अपने प्रति, अपने परिवार के प्रति, अपने पड़ोसी के प्रति, समाज के प्रति, राष्ट्र के प्रति, मानव मात्र, प्राणि मात्र के प्रति कितने संवेदनशील हैं यह हमारी सम्बन्धों की आत्मीयता का द्योतक है। यह हमारी संवेदनशीलता, हमें किसी भी परिस्थिति में मधुर सम्बन्ध बनाने में सहयोगी होती है। यह पंक्तियाँ संवेदनशीलता को ही चरितार्थ करती हैं-

दु:खिया पास पड़ा है तेरे, तूने मौज उड़ाई तो क्या?
भूखा प्यासा पड़ा पड़ोसी, तूने रोटी खाई तो क्या?

आज के वातावरण में हम संकुचित होते जा रहे हैं, मैं, मेरा परिवार और बस। बाकी सबसे हमने दूरियाँ बना ली हैं, जो मुख्यत: वैचारिक व भावनात्मक स्तर पर हैं।

यूँ तो हम फास्ट टेक्नोलॉजी से चन्द्रमा तक जुड़ गए हैं, उपग्रहों से जुड़ गए हैं पर हम स्वयं से, अपने परिजनों से, मित्रों से दूर होते जा रहे हैं।

एक विशेष सम्बन्ध सबका होता है, निर्बाध रूप से, ईश्वर के साथ। ध्यान रहे, भले ही सारे सम्बन्ध छूट जाएँ, टूट जाएँ, विच्छेद हो जाएँ, ईश्वर के साथ सदा बना रहता है और बनाएँ रखना चाहिए। क्योंकि बाकी सम्बन्ध तो अल्पकालिक होते हैं, परिस्थिति वशात् होते हैं।

ये एक सम्बन्ध है जो बिना किन्हीं शर्तों के है। ईश्वर यह नहीं कहता कि क्योंकि तुम मेरी उपासना नहीं करते हो, मैं तुम्हें सांस लेने के लिए वायु नहीं दूँगा या तुम्हारे घर के अन्दर सूर्य का प्रकाश बाधित कर दूँगा। वह तो देवता है- सदा से देता आ रहा है, हमारे साथ अपनेपन का निर्वाह अनादिकाल से कर रहा है। हमारे में ही उस तड़प की कमी है जिसके अभाव में हम उससे सीधे सम्पर्क, सम्बन्ध नहीं बना पाए हैं।

कभी ए हकीकत-ए-मुंतजिर, नज़र आ मिज़ाज ए लिबास में,
कि हज़ारों सजदे तड़ रहे हैं, तेरे इक ज़बीने नियाज़ में।

हमें इस सम्बन्ध को दृढ़ व सुमधुर बनाने के लिए सतत प्रयास करना चाहिए। जैसे घर में एक मेहमान के बैठे होने पर, दूसरा कोई उससे विशिष्ट व्यक्ति आ जाता है तो तुरन्त हमारा ध्यान उस तरफ चला जाता है, क्यों? क्योंकि वह व्यक्ति विशेष है, उसकी महत्ता ज्यादा है। इसी

तरह ईश्वर भी पुरुष विशेष है। उसका महत्त्व दुनिया की प्रत्येक वस्तु से अधिक है, तो हमें उसको अपना बनाने के लिए तीव्र प्रेम व उत्साह से उपासना करनी चाहिए। यूँ भी

एक के साधे, सब सधे।

यह बात पूर्णतया ईश्वर पर चरितार्थ होती है। जब किसी देश के राष्ट्रपति के साथ समझौता हो जाता है तो उस जनता का स्वयमेव ही हो जाता है। जिसका ईश्वर से सम्बन्ध बन गया है। मुख्य को जिसने साध लिया है तो उसके गौण सम्बन्ध स्वत: ही सुधर जाएंगे। जितनी-जितनी ईश्वर से घनिष्ठता बढ़ेगी उतनी-उतनी जीवन में शान्ति, सौम्यता, सरलता आती जाएगी। ईश्वर के साथ जब सम्बन्ध को दृढ़ता से समझेंगे तब कई दुविधाओं के, आक्रोश के, द्वेष के बादल स्वयं छट जाएंगे। मन शान्त होगा, स्थिरता आएगी।

और यूँ भी ईश्वर से तो हम कोई भी सम्बन्ध बना सकते हैं, माता का, पिता का, बन्धु का, गुरु का, किसी भी रूप में ईश्वर को ले सकते हैं। जिस सम्बन्ध को दुनिया में अत्यन्त प्रेम से निभाया हो, वह सम्बन्ध ईश्वर के साथ सहजता से बनाया जा सकता है। हम अपनी सारी भावनाएँ, हृदय के उद्‌गार उसे बता सकते हैं। दुनिया के सम्बन्ध तो एक बड़ी सी कोष्ठक में बंधे हुए मिलते हैं। समय की, समाज की, स्थान की सीमाओं ने सम्बन्धों को बांध दिया है। पर ईश्वर तो सर्वव्यापक है, अनन्त है।

वह उस शीतल, शान्त, सौम्य जल की तरह है जिसे जिस मर्ज़ी बर्तन में, सांचे में ढाल लो। इतनी स्वतन्त्रता, कोई भी दुनिया में सम्बन्धी नहीं देता है।

सो ईश्वर से ही प्रार्थना है कि प्रभु मैं तेरे साथ सम्बन्धित हो जाऊँ, तेरा हो जाऊँ, तू तो हमेशा से मेरे साथ है, मेरे अन्दर है। कमी तो मेरे पक्ष में है, आँख मून्द कर अपने हृदय कोश में मैं तुम्हें पा लूँ यही तड़प है, यही इच्छा है, मेरा यह प्रेम सार्थक हो जाए, मेरा यह जीवन सफल हो जाए, दुनिया से वैराग्य ले के तेरे साथ मेरा विशेष राग हो जाए।

उल्टी ही चाल चलते हैं, आबार गाने इश्क
आँखों को बन्द करते हैं, दीदार के लिए।

- ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर।

किशोरियों के संस्कार निर्माण का सुनहरा अवसर

०१ से ८ जून २०१४

स्थान–ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर।

आपको सूचित करते हुए हर्ष हो रहा है कि परोपकारिणी सभा एवं आर्यवीर–दल, अजमेर सम्भाग द्वारा जूडो–कराटे, योग–प्राणायाम, संस्कार निर्माण, लाठी, भाला, तलवार, छुरिका, दण्ड–बैठक, सूर्य–नमस्कार, यौगिक क्रियाएँ एवं व्यायाम प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है। जिसमें उच्च कोटि के विद्वानों द्वारा नैतिक, चारित्रिक व बौद्धिक प्रशिक्षण भी दिया जायेगा। शिविर शुल्क – ४०० रु. प्रति व्यक्ति।

अपील एवं निवेदन – इस विशाल शिविर के प्रबन्ध, भोजन, आवास, मानदेय, प्रचार आदि पर काफी खर्चा होता है, जिसकी पूर्ति आप और हम सबको मिलकर करनी है। अत: आप सभी दान प्रेमी सज्जनों, संस्थाओं व आर्यसमाज से निवेदन है कि अपनी सहायता राशि नकद, चैक, ड्राफ्ट अथवा धनादेश आदि द्वारा मन्त्री परोपकारिणी सभा, अजमेर के पते पर भेजें।

सम्पर्क :– ९४१४४३६०३१, ९४६८६९७४२३, ९७८५१२६८६८,

९४१४६६७३८१, ०१४५–२४६०१६४ (सभा)

यतीन्द्र शास्त्री, व्यायामाचार्य, अजमेर संभाग– संचालक, आर्यवीर–दल, राज.।

मनुष्यों को चाहिये कि दिन-रात उत्तम सज्जनों के संग से धर्म्मार्थ काम और मोक्ष की सिद्धि करते रहें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.१६

हर्षिता और उसकी प्यारी नानी

उपासना सियांग

हर्षिता धीरे-धीरे चलती हुई अपने सुख-दु:ख करने की जगह आ बैठी, उसका मानना है कि घर में एक जगह ऐसी भी होनी चाहिए जहाँ इंसान अपना सुख-दु:ख करके अपने आप से बतिया सके, इस बात पर उसके पति हँसे कि लो भला कोई अपने आप से भी बतियाता है क्या। तो वह मन ही मन हँस पड़ी आप क्या जानो औरतों का मन... जब से माँ-पिता जी साथ रहने लगे हैं तो स्टोर को भी एक बेड़ रूम की शक्ल दे दी गयी है। क्योंकि छोटे घर में कोई आ भी जाय तो यह बेड-रूम का काम दे सके इसी स्टोर में एक अलमारी में उसका मंदिर है जहाँ वह अपनी देवी माँ से बातें भी करती है और अपना सुख-दु:ख भी। आज वह सुबह से ही अनमनी सी थी जब उसने अखबार में पढ़ा कि जीवन में कई बार ऐसा होता है जब हम किसी अपने से कुछ कहना चाहते हैं और वह हमारे पास नहीं होता, तो अचानक नानी की याद आ गयी और जब शाम को सुखजीत के साथ गुरुद्वारा साहिब गयी तो एक वृद्धा को देख कर ठिठक गयी और उसको देखने लगी अरे यह तो नानी जैसी ही लगती है पर उसके पास चाह कर भी नहीं जा पाई, पर दिल में हूक सी उठी और आँखों में पानी आ गया, नानी कितनी प्यारी थी, भोली सी एकदम शान्त सबको एक ही नजर से देखना ख्याल रखने वाली, समझदार पर थोड़ी सी दब्बू भी थी और हर्षिता की तो जान ही थी..... गर्मियों की छुट्टियों में जब ननिहाल में आते तो गाँव का शान्त वातावरण उसे बहुत अच्छा लगता, आँगन में मामा जी के छ: बच्चों और चार बहनें वह खुद और भी कई परिवार के सदस्यों के साथ रात को देर तक बातें, हँसी ठिठौली, कभी गीत-संगीत का कार्यक्रम चलता, थक कर वहीं लगी चारपाइयों पर सो जाते और सुबह नानी के दही बिलौने की घर्र-घर्र की आवाज से आँखें खुलती, वो घर्र-घर्र की मधुर आवाजें अब मशीनों की खुरदरी आवाजों में कहीं खो सी गयी है हाँ तो फिर नानी सभी बच्चों को आवाज लगा कर बुलाती और एक एक मक्खन की गोली सबको खिला देती फिर सभी बच्चे इधर-उधर व्यस्त हो जाते पर हर्षिता तो नानी के आस-पास ही रहती। कभी नानी चूल्हा जलाते हुए उसको आवाज देती जा थोड़ा कागज का टुकड़ा ला, आग जल नहीं रही धुंआ ही हो रहा है, वह भाग कर कागज तो उठा लाती पर अगर उस पर कुछ लिखा होता तो वह नानी की धुएँ से जलती आँखों को भुला कर उस पर लिखा क्या है, यह पढ़ने बैठ जाती और फिर नानी जल्दी से कागज छीन कर चूल्हे में डाल देती और आग जल जाती और एक आग उसके मन में कि क्या है पढ़ने भी नहीं दिया, नानी धुँए से निकले आँसू पोछ रही होती और वह नानी का भाषण सुन कर आँसू पोंछ रही होती, नानी शुरू हो जाती की ऐसी भी क्या पढ़ाई है, कुछ काम सीखो अगले घर जाना है और माँ को भी पाठ पढ़ाने लगती कि इसका क्या होने वाला है सारा दिन किताबों में आँखें फोड़ती रहती है या रेडियो कानों के लगा लिया, शादी के बाद कौन इसको गाने सुनने देगा और किताबें ला कर देगा, कुछ तो घर का काम आना चाहिए, तो माँ उसे खींच कर गोद में बिठा लेती और नानी को बहुत प्यार से समझाती कि माँ अभी छोटी है यह, सब सीख जाएगी। लेकिन नानी कि आखों में तो एक चिन्ता सी लहराती दिखती थी।

एक तरफ जहाँ बड़ी दीदी घर में बैठी चुनरी में सितारे टांक रही होती वहीं हर्षिता बाहर बैठक में नाना को सत्यार्थ प्रकाश सुना रही होती और नाना का स्नेह पा रही होती.....उसके नाना आर्य समाज के कट्टर समर्थक थे, घर में कोई पूजा-पाठ, भजन या सत्संग करना या कीर्तन आदि में जाने कि सख्त मनाही थी और नानी को व्रत भी नहीं करने देते थे। लेकिन धर्म भीरु नानी को करवा चौथ का व्रत करने को मना नहीं कर पाए, वो उस दिन सुबह ही नानी को कहते कि आज तो तुम मेरे साथ ही खाना खाओगी और नानी का जवाब हमेशा की तरह एक ही होता, आज मेरा पेट खराब है और आज मैंने कुछ भी नहीं खाना, तो वे कहते की हर साल इस व्रत के दिन ही तुम्हारा पेट क्यूँ खराब होता है और हँस कर चल देते। हाँ बात तो हर्षिता की नानी की हो रही थी, जब हर्षिता घर के अन्दर जाती तो नानी कह बैठती तुम भी कोई काम सीखो, नहीं तो सास चुटिया खींचेगी और वह दौड़ कर नानी के गले में बांहें डाल कर जोर से हिला देते अरे नानी आप चिन्ता ही मत करो मैं चुटिया कटवाकर बाल छोटे-छोटे करवा लूँगी फिर सास के हाथ कुछ भी नहीं आएगा और नानी पर बहुत लाड़ उड़ेल देती फिर नानी को भी बहुत प्यार आता और भगवान् से अच्छे घर-वर के साथ-साथ

अच्छी सास की भी दुआ मांगती। फिर जैसे-जैसे पढ़ाई का जोर बड़ता गया ननिहाल भी कम आना होता गया, पर माँ की होम-साइन्स की टीचर की तरह ट्रेनिंग चलती रही, और पढाई भी चलती रही। और फिर एक दिन हर्षिता की शादी तय हो गयी लेकिन अब हर्षिता को नानी याद आने लगी कि अब क्या होगा, नानी की सारी बातें याद आ रही थी अब तो किताबों की दुनिया से बाहर हकीकत की दुनिया से रूबरू होना होगा, वह मन ही मन डर गयी हर्षिता और ४-५ किलो वजन भी कम हो गया, रंग भी काला पड़ गया, डरने से भी क्या होना था शादी का दिन भी आया और विदा हो गयी।

पर शादी के बाद ये क्या हुआ, यहाँ तो नानी का डर नहीं दुआ ही काम आयी और जो उसने शादी से पहले किया चाहा वैसा ही ससुराल में भी करने को मिला, ना किताबों की मनाही, नहीं रेडियो सुनने की मनाही पति, सास, ससुर सब वैसे ही अच्छे जैसे कि कोई भी लड़की सपने देखती है, फिर बेटी का जन्म हुआ, नानी बहुत खुश हुई और ढेर सारी चिन्ता भी जता दी इससे ये सम्भल जाएगी क्या, और जब ननिहाल गयी तो बड़े ही प्यार से हाथ जोड़ कर बोली देवी, बेटी को भूखा ही मत मार देना थोड़े दिन किताबों और रेडियो को भूल जाना, और उसने हँस कर पर तनिक गुस्से का दिखावा करते हुए कहा, नानी जब आपकी शादी हुई तो आप सिर्फ तेरह साल की थी और मैं पूरे बीस की, तो मैं ज्यादा अच्छी तरह से सब कर सकती हूँ और एक दिन आपके ही मुँह से कहलवा कर रहूँगी कि मैंने सब ठीक तरह से संभाला है। और समय चक्र ऐसे ही घूमता रहा, हर्षिता अब एक बेटे की माँ भी बन गयी थी माँ की ट्रेनिंग और नानी की दुआएँ सब काम आ रही थी की एक दुखद समाचार आया, नानी अपनी याददाश्त खो बैठी, वह किसी को भी नहीं पहचान रही, वह भी गयी मिलने तो देख कर जी भर आया वही भोला सा, प्यारा सा चेहरा पर सबके लिए अजनबीपन लिए हुए। फिर धीरे-धीरे सब नानी की इस बीमारी के आदी हो गए, हर्षिता का ननिहाल, ससुराल ज्यादा दूर नहीं था वह अक्सर मिलने जाती थी अपनी नानी से। एक दिन वह नानी के साथ अकेले ही थी कमरे में, उसने नानी का हाथ अपने हाथ में ले रखा था और धीमे से सहला रही थी की नानी बोली तू कौन है? कहाँ रहती है यहाँ कितने दिनों बाद आयी है, हर्षिता जोर से रो पड़ी और बोली अरे नानी मैं वही तो हूँ तेरी सबसे प्यारी हर्षिता, देख आज मैंने सब कुछ संभाल लिया, बस एक बार तू मुझे तो पहचान ले बस एक बार नानी, पर नानी कि आँखों में वही स्नेह देख रुलाई रोक बड़ी मुश्किल से लाड़ जताते हुए बोली नानी मैं आती तो रहती हूँ यहीं पास ही तो हूँ तेरे। फिर जल्दी से बाहर आ गयी और अपनी मामी के गले लग कर रोती रही कई देर। वह अपनी मामी की भी बहुत लाड़ली थी, बस यही आखिरी मुलाकात थी उसकी अपनी नानी के साथ कुछ समय बाद वह इस दुनिया से चली गयी बिना कुछ कहे बताये बस सब कुछ अपने मन में लेकर। हर्षिता के पास बस नानी की दुआएँ और यादें ही रह गयी, ना जाने वह कितनी देर बैठी आंसू बहाती रही, पति की आवाज से चौंक उठी, आज क्या सुख-दु:ख कर के बतिया रही हो अपने आप से, और पास आकर आंसू पोछंते हुए बोले वह पास ही है कहीं नहीं गयी, चलो अब बहुत सुख-दु:ख हो लिया बाहर चलो।

गली नं. ७, न्यू सूरज नगरी, अबोहर
(दैनिक राष्ट्रीय छवी से साभार)

धनराशि भेजने हेतु सूचना

चैक, ड्राफ्ट, धनादेश (मनीआर्डर) द्वारा राशि भेजने वाले उस पर '**मन्त्री परोपकारिणी सभा**' अवश्य लिख दें। दानी महानुभाव ऑनलाइन भी राशि जमा करवा सकते हैं। भारतीय स्टेट बैंक में एक सहस्र तक की राशि जमा कराने वाले **२५ रु. बैंक सेवा शुल्क के रूप में अतिरिक्त** जमा करवाने की कृपा करें। कृपया राशि निम्नांकित बैंकों में ऑनलाइन भिजवाकर, जमा कराई गई स्लिप के साथ उद्देश्य लिखकर सभा कार्यालय को सूचित करवाने का कष्ट करें।

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर

१. बैंक खाता संख्या-091104000057530 बैंक का नाम-आई.डी.बी.आई. बैंक, पावरहाउस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर।

IFSC - IBKL0000091

२. बैंक खाता संख्या -10158172715 बैंक का नाम - भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।

IFSC - SBIN0007959

आस्था भजन (चैनल) पर प्रवचन

स्वामी रामदेव जी ने वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए अपने चैनल पर दो घण्टे का समय देकर वैदिक विद्वानों के प्रवचन की शृंखला प्रारम्भ की है। उसी क्रम में परोपकारिणी सभा द्वारा भी वैदिक विद्वानों के प्रवचन के प्रसारण की योजना बनाई गई। इस हेतु विगत ८-१० माह से ऋषि उद्यान परिसर में विडियो रिकॉर्डिंग का कार्य चल रहा है।

अब स्वामी रामदेव जी द्वारा इन प्रवचनों का 'आस्था-भजन' चैनल पर प्रतिदिन सायं ७ से ८ बजे तक प्रसारण प्रारम्भ कर दिया गया है। जिसके अन्तर्गत **७.०० से ७.२०** तक **डॉ. धर्मवीर जी** के वेद-प्रवचन तथा **७.३० से ७.५०** तक **स्वामी विष्वङ् जी** के योगदर्शन विषयक प्रवचन सुने जा सकते हैं।

इस कार्य के लिए सभा और समस्त आर्यजगत् की ओर से स्वामी रामदेव जी का धन्यवाद करते हैं और आभार मानते हुए प्रभु से उनके इस सामर्थ्य और भावना को बनाये रखने की कामना करते हैं तथा उनके दीर्घायुष्य व उत्तम स्वास्थ्य की प्रभु से प्रार्थना करते हैं।

सभी धर्मप्रेमी जन इन प्रवचनों का अधिकाधिक लाभ उठाएँ और अन्यों को भी अधिकाधिक सूचित करें।

गुरुकुल सलखिया का संचालक नियुक्त

परोपकारी के गत अङ्कों में स्वामी रामानन्द को अनुचित व अनुशासनहीनता पूर्ण गतिविधियों के लिए समस्त दायित्व से मुक्त करने की सूचना सभा द्वारा प्रकाशित की गई थी। इसी मध्य समाचार पत्र एवं दूरभाष द्वारा स्वामी रामानन्द के विरुद्ध गुरुकुल के छात्रों द्वारा बालकों के साथ यौन शोषण की शिकायत पुलिस में की जाने की सूचना सभा को प्राप्त हुई।

सूचना मिलने पर सभा के कार्यकारी प्रधान एवं मन्त्री गुरुकुल आश्रम सलखिया, छत्तीसगढ़ पहुँचे। घटना की जाँच करने पर ज्ञात हुआ, छात्रों व उनके अभिभावकों द्वारा स्वामी रामानन्द के विरुद्ध लिखित शिकायत दी गई है। इसी के आधार पर पुलिस ने प्रथम सूचना लिखकर कार्यवाही प्रारम्भ कर दी है। साथ ही सरकार के अन्य अनेक विभागों द्वारा भी जाँच की जा रही है। पुलिस में शिकायत होने पर स्वामी रामानन्द गिरफ्तार कर लिया गया।

ऐसी स्थिति में वहाँ के प्रतिष्ठित व्यक्तियों से तथा गुरुकुल समिति के सदस्यों से विचार विमर्श करके सभा के द्वारा स्वामी रामानन्द के स्थान पर श्री जोगीराम आर्य को संस्था के प्रबन्ध का दायित्व सौंपा गया है तथा अगले आदेश तक संस्था के समस्त प्रबन्ध कार्य करने के लिए अधिकृत किया है।

- मन्त्री, परोकारिणी सभा, अजमेर

भूत फैशन का

– रमेश मुनि

क्या समाज नकल करने वालों को अच्छा समझता है? यदि हम स्वार्थ को दूर करके न्यायपूर्वक निर्णय करना चाहेंगे तो सभी का उत्तर होगा नहीं। फिर भी हम नकल करने में माहिर होने में जीवन की कुशलता समझते हैं। वास्तव में नकलची सदा दूसरों के पीछे चलने वाला ही रहता है कभी नेता नहीं बन सकता, अगुवा नहीं हो सकता।

हम भारतीय नकल कर बुद्धि का प्रयोग न करते हुए अपने आप को रसातल में पहुँचाने के लिए उद्यत हो रहे हैं। विशेष रूप से वस्त्र या पहिनावा, खाने-पीने की वस्तुओं का प्रयोग करने में और अपने सांस्कृतिक व्यवहार का प्रयोग करने में –

१. वस्त्र या पहनने के कपड़ों का प्रयोग फैशन देख कर करना –

आज दिन भर दूरदर्शन पर फैशन शो दिखाए जाते हैं। फैशन शो में भाग लेने वाले युवक-युवतियाँ मॉडल कहलाते हैं। इनका चयन बहुत से युवक-युवतियों की कई प्रकार से परीक्षा करके किया जाता है। प्रत्येक युवक या युवती मॉडल नहीं बन सकते। ये मॉडल शो में भाग लेने के लिए लाखों रुपया पारिश्रमिक लेते हैं, कपड़े शो करने वाली कम्पनी के होते हैं, उन पर इनका कोई व्यय नहीं हुआ होता, इन वस्त्रों को केवल शो के समय एक प्रकार के वस्त्र १०-१५ सैंकिड़ के लिए पहन कर, कैमरे के सामने चक्कर लगा, पर्दे के पीछे चले जाते हैं। आवश्यक नहीं ये घर पर या शहरों की सड़कों पर भी ऐसे वस्त्र पहनते हों। यदि पहन भी लें तो इनके साथ इनकी रक्षा के लिए रक्षक रहते हैं। इस प्रकार के शो देखकर पूरा परिवार चकाचौंध में आ जाता है, जिसे बच्चे, युवक-युवतियाँ इनके माता-पिता प्रभावित हो जाते हैं। जब भी बाजार कपड़े लेने जाते हैं तो वैसे ही कपड़े पसन्द करके खरीदते हैं, पहनते हैं। जो प्राय: शरीर के उन भागों को दर्शनीय बनाते हैं जो युवकों और युवतियों में उन्माद की स्थिति पैदा करते हैं। वस्त्रों का कुछ भाग पारदर्शी सिन्थेटिक कपड़े का बना होता है। ऐसी अवस्था ही युवतियों के साथ बलात्कार होने के लिए कारण बनती हैं क्योंकि इन युवतियों के लिए इनके साथ रक्षक नहीं होता।

शरीर के अधिक भागों को खुला दिखाने वाले वस्त्र केवल युवतियाँ या बच्चे ही पहनते हैं ऐसा नहीं बहुत-सी प्रौढ़ और वृद्धावस्था को प्राप्त होने जा रही धनाढ्य परिवारों की महिलाएँ भी इस शो में पीछे नहीं हैं। इन परिवारों को बहुत अधिक धन व्यय करके कपड़े खरीदने होते हैं और इसी कारण कई प्रकार की अनचाही स्थितियों में फंस जाते हैं।

यह फैशन प्रारम्भ होता है यूरोपियन देशों से, जो शीत प्रदेश हैं। ईश्वर ने जो छ: ऋतुएँ बनाई हैं वे केवल भारत या आस-पास के कुछ देशों में ही मिलती है। अन्य देश प्राय: शीत ऋतु और वर्षा ऋतु दो ही ऋतुएँ देख पाते हैं। वर्ष के अधिक महिनों में तापमान बहुत कम रहने से सूर्य की धूप न मिलने से भारी-भारी कपड़ों का बोझ झेलना पड़ता है। जब कुछ दिनों के लिए धूप निकलती है तो छुट्टी वाले दिन वे धूप का आनन्द लेने के लिए पागल हो जाते हैं और नग्नावस्था में धूप में पार्कों आदि में या समुद्र के किनारे जमीन पर उल्टे लेटे रहते हैं। इसमें वे किसी प्रकार की शर्म अनुभव नहीं करते –

केनडा में रहने वाले एक भारतीय ने मुझे बताया कि हमारे सम्बन्धी भारत से केनडा घूमने के लिए गए। मेरे बेटे को कहने लगे हमें समुद्र का किनारा (बीच) दिखा कर लाओ। बेटे ने कहा- वह स्थान हमारे देखने का नहीं लेकिन वे नहीं माने, वे पति पत्नी और उनकी तीन बेटियाँ थीं जो १८-१५-१२ वर्ष की क्रमश: थी। बेटा उन्हें ले गया वहाँ थोड़ी-थोड़ी दूर पर परिवारों के सदस्य नग्नावस्था में उल्टा मुँह करके लेटे हुए थे। उनमें भी पति, पत्नी, युवा पुत्र, युवती पुत्री। उनको देखते निकलते लड़कियाँ अपने मुँह पर हाथ रखकर अपनी हंसी को दबाने का प्रयास कर रहीं थी।

इसका कारण उन देशों में धूप न के बराबर निकलने से उनमें विटामिन डी की कमी होती है जिसलिए उन्हें औषध रूप में विटामिन डी लेनी पड़ती है। उसके विपरीत भारत में प्राय: धूप अधिक रहती है तापमान अधिक रहता है। वहाँ धूप के दिन युवतियाँ बहुत छोटी निक्कर और बिना बाजू का कुर्ता जो लम्बाई में भी बहुत छोटा होता है, पहन कर बेझिझक बाजारों में मिल जाती हैं। भारत वर्ष में अप्रैल से नवम्बर तक चमड़ी को धूप से बचाने की आवश्यकता पड़ती है।

वैज्ञानिक तरीके से सूर्य किरणों में अल्ट्रा वॉइलेट रेज

(पराबैंगनी किरणें) तथा इंफ्रारेड रेज (अवरक्त किरणें) होती हैं। ईश्वर ने हमारी रक्षा के लिए वायुमण्डल के बाहरी स्तर पर ओजोन गैस की परत फिल्टर के रूप में लगाई है। अल्ट्रा वॉइलेट रेज हमारी चमड़ी के लिए हानिकारक है जिस लिए ओजोन इन किरणों को पृथिवी पर आने से रोकती है किन्तु अपने आप को गर्मी से बचाने के लिए पदार्थों को शीत रखने के लिए रेफ्रिजरेटर का प्रयोग अन्धाधुन्ध बढ़ता जा रहा है। यह ग्लोबल वार्मिंग का एक बड़ा कारण है साथ में ओजोन की परत में छिद्र उत्पन्न करता है जिस कारण थोड़ी-थोड़ी अल्ट्रा वॉइलेट रेज पृथिवी पर आने लगी है। इनका सम्बन्ध हमारी चमड़ी के साथ होने पर अनेक प्रकार की चमड़ी की बिमारियाँ उत्पन्न हो जाती हैं। शरीर की जितनी अधिक चमड़ी वस्त्र से रहित होगी उतनी अधिक रेज का सम्बन्ध चमड़ी से होगा और अनेक प्रकार की खुजली, दाद .....आदि चमड़ी के रोग हो सकते हैं, हो रहे हैं, बढ़ रहे हैं।

इसी प्रकार विदेशों में सर्दी से बचने के लिए पुरुष, महिलाएँ, युवक, युवतियाँ, बालक, बालिकाएँ जीन्स पहनते हैं। उनकी नकल से हमारे भारत में भी लोग जीन्स का ही अधिक प्रयोग करने लगे हैं। भारत में तापमान की अधिकता के कारण जीन्स पहनना उपयोगी नहीं है। इससे भी अधिक पसीना आने से खुजली आदि चमड़ी के रोग हो जाया करते हैं। गर्भावस्था में बालक की अण्डग्रन्थियाँ उदर में बनती हैं प्राय: ८ मास का गर्भ हो जाने के बाद में उदर से बाहर अण्डकोषों में आ जाया करती हैं किन्तु हजारों में एक बालक की ये ग्रन्थियाँ उदर में ही रह जाती है, नीचे नहीं उतरतीं। पता चलने पर थोड़ी उमर बढ़ने पर ऑपरेशन करके इन्हें नीचे लाया जाता है। यदि न लाया जाए तो वह व्यक्ति सन्तानोत्पत्ति करने में असमर्थ होगा अर्थात् वे ग्रन्थियाँ शुक्रकीट बनाने में असमर्थ रहती हैं। इन ग्रन्थियों में ठीक शक्ति वाले शुक्र कीट बनाने के लिए इनका तापमान कुछ कम रहना चाहिए। इसीलिए दयालु ईश्वर ने उन्हें शरीर से बाहर अण्डकोषों में रखा है जिसका तापमान शरीर के तापमान से एक डिग्री कम रहता है। उदर में तापमान अधिक होने के कारण इनमें शुक्रकीट नहीं बन पाते जिससे व्यक्ति सन्तानोत्पत्ति नहीं कर सकता था।

जीन्स का कपड़ा मोटा होता है इसमें से वायु शरीर के अंगों में नहीं जा पाती। जीन्स की अधिक टाइट पहनने के कारण अन्दर वायु के लिए स्थान भी नहीं होता अर्थात् अण्डकोषों का ताप अधिक रहने की सम्भावना से शुक्र की निर्माण और उनके पकने में कुछ कमी रहने की सम्भावना हो सकती है। जिससे सन्तानोत्पत्ति न होना या उत्पन्न सन्तान की मानसिक शक्ति कुछ कम होने की सम्भावनाएँ बढ जाती हैं। यदि जन्म लिए बच्चे की मानसिक शक्ति इस कारण से ही कम हो जाती है तो इसलिए वह बालक आयु भर इस अपंगता का दु:ख झेलेगा और माता पिता भी दु:खी अनुभव होते रहेंगे। किन्तु इसका मुख्य कारण तो माता-पिता की नासमझी के कारण फैशन की नकल करने के कारण इस विकृति का होना है। इसके लिए उसके माता-पिता ही इसके लिए उत्तरदायी है अर्थात् भूत फैशन का परिवार के लिए दु:ख का कारण बन सकता है।

इसलिए सभी पढ़ने वालों से नम्र निवेदन है कि आने वाली इन भयानक अवस्थाओं को उत्पन्न होने से स्वयं के लिए रोकने का प्रयास करें और मिलने-जुलने वालों को भी सावधान करें। **क्रमश:.....**

- ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

ई-मेल द्वारा परोपकारी नि:शुल्क

परोपकारी के पाठकों को प्रसन्नता होगी कि अब परोपकारी ई-मेल द्वारा भी भेजी जा रही है। परोपकारिणी सभा की वेब-साइट पर तो परोपकारी पहले से ही नि:शुल्क उपलब्ध है। विश्व में कहीं भी कोई भी इसे वेब-साइट पर पढ़ सकता है। इसके साथ ही अब यह सुविधा भी उपलब्ध कराई गई है कि परोपकारी आपके पास ई-मेल द्वारा पहुँच जाये। इससे यह पत्रिका शीघ्र व अधिक सुन्दर रूप में आप तक पहुँच सकेगी। आप जहां भी रहें, कभी भी पढ़ना चाहें, यह आपके पास रहेगी। डाक की अव्यवस्था से छुटकारा मिल सकेगा। यह आपको नियमित मिलती रहेगी। इससे रासायनिक रंगों व कागज का उपयोग भी कम होगा, खर्च भी घटेगा। अत: पाठकों से अनुरोध है कि **कृपया अपना ई-मेल पता सभा को ई-मेल से भिजवा देवें।** आप जिन इष्ट-मित्रों, परिजनों व संस्थाओं को परोपकारी भिजवाना चाहते हैं, उनके ई-मेल पते भी भिजवा देवें, उन्हें भी यह नि:शुल्क भेज दी जायेगी। ई-मेल- psabhaa@gmail.com

-व्यवस्थापक

वैदिक पुस्तकालय के प्रकाशन

महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत

वेदभाष्य, वेदभाषाभाष्य, मूलवेद, वेदांगप्रकाश और वैदिक साहित्य

क्रमांक	नाम पुस्तक	मूल्य
	वेद संहिताएँ– (केवल मन्त्र)	
१.	ऋग्वेद संहिता (मूल) मन्त्र–	रु.
	वर्णानुक्रमणिका सहित सजिल्द (बढ़िया)	५००.००
२.	"यजुर्वेद संहिता"(मूल) मन्त्र	
	वर्णानुक्रमणिका सहित सजिल्द (बढ़िया)	१८०.००
३.	यजुर्वेद संहिता (मूल) सजिल्द (साधारण)	१००.००
४.	सामवेद संहिता (मूल) मन्त्र	
	वर्णानुक्रमणिका सहित सजिल्द (बढ़िया)	८०.००
५.	अथर्ववेद संहिता (मूल) मन्त्र–	
	वर्णानुक्रमणिका सहित सजिल्द (बढ़िया)	३५०.००
६.	चतुर्वेद विषय सूची	४०.००
७.	सामवेद के मन्त्रों की वर्णानुक्रमणिका	२.००
८.	ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका सजिल्द	१००.००
९.	ऋग्वेद के प्रथम बाईस मन्त्रों का भाष्य	५.००
	वेद भाष्य–(संस्कृत एवं हिन्दी, दोनों में भाष्य)	
१०.	ऋग्वेदभाष्य पहला भाग (सजिल्द)	१५०.००
११.	ऋग्वेदभाष्य दूसरा भाग (सजिल्द)	२००.००
१२.	ऋग्वेदभाष्य तीसरा भाग (सजिल्द)	२००.००
१३.	ऋग्वेदभाष्य चौथा भाग (सजिल्द)	१५०.००
१४.	ऋग्वेदभाष्य पांचवां भाग (सजिल्द)	२५०.००
१५.	ऋग्वेदभाष्य छठा भाग (सजिल्द)	६०.००
१६.	ऋग्वेदभाष्य सातवाँ भाग (सजिल्द)	२००.००
१७.	ऋग्वेदभाष्य आठवाँ भाग (सजिल्द)	२००.००
१८.	ऋग्वेदभाष्य सप्तम मंडल	
	प्रथम भाग सजिल्द	७०.००
१९.	ऋग्वेदभाष्य सप्तम मंडल	
	द्वितीय भाग सजिल्द (पं. आर्यमुनि)	६०.००
२०.	ऋग्वेदभाष्य अष्टम मण्डल	
	पहला भाग सजिल्द	
२१.	ऋग्वेदभाष्य अष्टम मण्डल	
	दूसरा भाग सजिल्द	
२२.	ऋग्वेदभाष्य नवम मण्डल	
	प्रथम भाग सजिल्द (पं. आर्यमुनि)	१५०.००
२३.	ऋग्वेदभाष्य नवम मण्डल द्वितीय भाग सजिल्द	
२४.	ऋग्वेदभाष्य दसवां मण्डल प्रथम भाग	
	सजिल्द (स्वामी ब्रह्ममुनि)	२००.००
२५.	ऋग्वेदभाष्य दसवाँ मण्डल द्वितीय भाग	
	सजिल्द (स्वामी ब्रह्ममुनि)	९०.००
२६.	यजुर्वेदभाष्य पहला भाग (सजिल्द)	२००.००
२७.	यजुर्वेदभाष्य दूसरा भाग (सजिल्द)	३५०.००
२८.	यजुर्वेदभाष्य तीसरा भाग (सजिल्द)	२५०.००
२९.	यजुर्वेदभाष्य चौथा भाग (सजिल्द)	१५०.००
	वेद भाषाभाष्य – (केवल हिन्दी भाष्य)	
३०.	ऋग्वेदभाषाभाष्य का नमूना	५.००
३१.	ऋग्वेदभाषाभाष्य पहला भाग (सजिल्द)	२००.००
३२.	ऋग्वेदभाषाभाष्य दूसरा भाग (सजिल्द)	३५.००
३३.	ऋग्वेदभाषाभाष्य तीसरा भाग (सजिल्द)	३५.००
३४.	ऋग्वेदभाषाभाष्य चौथा भाग (सजिल्द)	२५.००
३५.	ऋग्वेदभाषाभाष्य पांचवां भाग (सजिल्द)	३०.००
३६.	ऋग्वेदभाषाभाष्य छठा भाग (सजिल्द)	३०.००
३७.	ऋग्वेदभाषाभाष्य सातवाँ भाग (सजिल्द)	५०.००
३८.	ऋग्वेदभाषाभाष्य आठवाँ भाग (सजिल्द)	५०.००
३९.	ऋग्वेदभाषाभाष्य (नवाँ भाग)	
	सप्तम मण्डल पहला भाग (सजिल्द)	२५.००

क्रमांक	नाम पुस्तक	मूल्य
४०.	ऋग्वेदभाषाभाष्य सप्तम मण्डल द्वितीय भाग सजिल्द (पं. आर्यमुनि)	३५.००
४१.	ऋग्वेदभाषाभाष्य अष्टम मण्डल (सजिल्द)	
४२.	ऋग्वेदभाषाभाष्य नवम मण्डल (सजिल्द)	
४३.	ऋग्वेदभाषाभाष्य दसवां मण्डल प्रथम भाग सजिल्द (स्वा. ब्रह्ममुनि)	४५.००
४४.	ऋग्वेदभाषाभाष्य दसवां मण्डल द्वितीय भाग सजिल्द (स्वा. ब्रह्ममुनि)	४५.००
४५.	यजुर्वेदभाषाभाष्य पहला भाग (सजिल्द)	१००.००
४६.	यजुर्वेदभाषाभाष्य दूसरा भाग (सजिल्द)	३७५.००

स्वामी ब्रह्ममुनि परिव्राजक विद्यामार्तण्ड

४७.	सामवेद अध्यात्मिक मुनिभाष्य (पूर्वार्चिक)	
४८.	सामवेद अध्यात्मिक मुनिभाष्य (उत्तरार्चिक) (दोनो खण्डों का सम्मिलित मूल्य)	४००.००
४९.	अथर्ववेदभाष्य – (काण्ड १ से २०) तीन भाग का एक सेट	

विविध

५०.	गोकरुणानिधि (बढ़िया)	५.००
५१.	स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश	५.००
५२.	स्वीकारपत्र	३.००
५३.	आर्योद्देश्यरत्नमाला (हिन्दी)	५.००

सिद्धान्त ग्रन्थ

५४.	सत्यार्थप्रकाश (सजिल्द बढ़िया)	१२०.००
५५.	आर्याभिविनय (बड़ा आकार सजिल्द)	१०.००
५६.	आर्याभिविनय (बड़ा आकार अजिल्द)	७.००
५७.	आर्याभिविनय (गुटका अजिल्द)	७.००

कर्मकाण्डीय

५८.	वैदिक नित्यकर्मविधि	२५.००
५९.	पञ्चमहायज्ञविधि	१२.००
६०.	विवाह–पद्धति	२०.००
६१.	संस्कारविधि (सजिल्द)	७०.००
६२.	हवनमन्त्राः (बड़ा आकार)	५.००

पाखण्ड–खण्डन और शंका–समाधान ग्रन्थ

६३.	अनुभ्रमोच्छेदन	
६४.	भ्रमोच्छेदन (साधारण)	४.००
६५.	भ्रमोच्छेदन (बढ़िया)	१०.००
६६.	भ्रान्तिनिवारण	
६७.	शिक्षापत्रीध्वान्त–निवारण (स्वामीनारायण मतखण्डन)	२.००
६८.	वेदविरुद्धमत–खण्डन	१०.००
६९.	वेदान्तिध्वान्तनिवारण	२.००
७०.	शास्त्रार्थ काशी	८.००
७१.	शास्त्रार्थ हुगली (प्रतिमा–पूजन विचार)	६.००
७२.	सत्यधर्म विचार (मेला चान्दापुर)	७.००
७३.	शास्त्रार्थ जालंधर	३.००
७४.	शास्त्रार्थ अजमेर	३.००
७५.	शास्त्रार्थ बरेली (सत्यासत्य विवेक)	८.००
७६.	शास्त्रार्थ मसूदा	५.००
७७.	शास्त्रार्थ उदयपुर	४.००
७८.	शास्त्रार्थ फिरोजाबाद	१०.००
७९.	महर्षि दयानन्द के शास्त्रार्थ (सजिल्द)	४०.००

शिक्षा व व्याकरण ग्रन्थ (वेदाङ्ग प्रकाश)

८०.	वर्णोच्चारण शिक्षा	१५.००
८१.	सन्धिविषय	
८२.	नामिक	
८३.	कारकीय	१०.००
८४.	सामासिक	
८५.	स्त्रैणताद्धित	
८६.	अव्ययार्थ	५.००
८७.	आख्यातिक (अजिल्द)	१५०.००

शेष भाग अगले अंक में.....

जिज्ञासा समाधान – ६४

– आचार्य सोमदेव

जिज्ञासा– आचार्य जी! सादर वन्दन

आप जैसे विद्वानों से सुना है कि जीवन में व्यवहार कुशलता का बहुत महत्व है। इसके बिगड़ने से ही मनुष्य दु:ख बढ़ा लेता है। व्यवहार के लिए अर्थात् व्यवहार सिखाने के लिए आजकल के आधुनिक लेखकों ने प्रकाश डाला है। अनेकों लोग इनकी पुस्तकों को पढ़ते भी हैं और इस विषय में हमारे ऋषियों ने भी अपने ग्रन्थों में उपदेश किया है।

मेरी जिज्ञासा यह है कि व्यक्ति अधिक व्यवहार कुशल, धार्मिक, उत्साही, शान्त इन आधुनिक लेखकों की पुस्तकें पढ़कर हो सकता है या ऋषियों की। कृपया यह भी बतायें कि ऋषियों ने व्यवहार कुशलता के लिए क्या-क्या लिखा है। परोपकारी के माध्यम से उत्तर मिलेगा, ऐसी आशा है।

– संदीप आर्य, आट्टा, हरियाणा

समाधान– आपने ठीक सुना है , जीवन में सद्व्यवहार का बहुत बड़ा महत्व है। आज सामाजिक व्यवहार सिखाने वाले बहुत हैं। इन व्यवहार शिक्षकों में अधिकतर विदेशी और कुछ देशी हैं। ये दूसरों के जीवन को व्यवहार कुशल व सुखी उत्साही बनाने की गारंटी लेते हैं। कुछ तो मंचों पर जाकर सभा-सेमिनार करके इस प्रकार की शिक्षा देते हैं। इनके सभा-सेमिनार में व्याख्यान देने की फीस ही ६०-७० हजार रु. होती है। इन व्यवहार शिक्षकों ने अपने-अपने नाम से अनेकों पुस्तकें भी लिख रखी हैं।

इनकी पुस्तकों, व्याख्यानों से कितने लोग व्यवहार कुशल, सुखी, उत्साही हुए यह बात तो ये ही जानें। यहाँ हम तो यह कहना चाहते हैं कि जो लोग नेम एण्ड फेम के चक्कर में हो, हजारों रु. की फीस के चक्कर में हो, जिसका विचार केवल लोक तक सीमित हो, वह स्वयं पूरी तरह व्यवहार कुशल, सुखी, उत्साही हो और दूसरों को भी इस प्रकार का बना सके, ऐसा लगता नहीं। किन्तु हमारे सामने ऐसे भी व्यक्तित्व हैं जिनको नेम एण्ड फेम की कोई चिन्ता नहीं, रुपये-पैसे से कोई लेना-देना नहीं (अर्थात् सांसारिक एषणाओं से रहित) जो प्राणी मात्र के प्रति दया का भाव रखते हैं, जिनका उद्देश्य केवल सांसारिक सुख नहीं होता, जिनकी दृष्टि लोक और परलोक दोनों पर होती है। ये लोग स्वयं व्यवहार कुशल, सुखी, उत्साही हैं और जो इनके सम्पर्क में आते हैं वे भी ऐसे बन जाते हैं। वे हैं हमारे समस्त ऋषि-महर्षि। जो आपने पूछा है कि किनकी शिक्षा से व्यवहार कुशल आदि व्यक्ति बन सकता है अर्थात् इन आधुनिकों से ऋषियों से तो हमारा मत है ऋषियों से किन्तु ये आधुनिक भी सर्वथा त्याज्य नहीं है।

आपने कहा ऋषियों ने इस विषय में कहाँ क्या लिखा है? सो हमें उसको यहाँ कुछ विस्तार से लिखते हैं। हम छोटे-बड़ों से किस प्रकार वर्तें, बड़ों का छोटों के प्रति और छोटों का बड़ों के प्रति कैसे व्यवहार करें, पति-पत्नी का व्यवहार, माता-पिता, भाई, बन्धु आदि का व्यवहार क्या है, कैसे करना चाहिए, सभा में जाकर हम कैसा आचरण करें आदि-आदि बातें महर्षि मनु ने अपने धर्म ग्रन्थ मनुस्मृति में बताया है।

जब कोई वृद्ध व्यक्ति हमारे पास आये तो हम उसका किस प्रकार सत्कार करें, उदाहरण के लिए यहाँ मनु का श्लोक लिखते हैं।

अभिवादयेद् वृद्धांश्च दद्याच्चैवासनं स्वकम्।
कृताञ्जलिरुपासीत गच्छतः पृष्ठतोऽन्वियात्।।

– मनु. ४.१५४

सदा विद्या वृद्धों और वयोवृद्धों को नमस्ते अर्थात् उनका मान्य किया करे। जब वे अपने समीप आवें तब उठकर मान्य पूर्वक ले अपने आसन पर बैठावे और हाथ जोड़ के आप समीप बैठे, पूछे, वे उत्तर देवें और जब जाने लगें तब थोड़ी दूर पीछे-पीछे जाकर नमस्ते कर विदा किया करे।

अपने बड़ों से वार्तालाप का शिष्टाचार क्या हो, इस विषय में महर्षि मनु कहते हैं-

प्रतिश्रवणसम्भाषे शयानो न समाचरेत्।
नासीनो न च भुञ्जानो न तिष्ठन्न पराङ्मुखः।।

– मनु. २.१९५

प्रतिश्रवण अर्थात् गुरु=बड़ों की बात या आज्ञा का उत्तर देना या स्वीकृति देना और बातचीत, ये सब लेटे हुए न करे, न बैठे-बैठे, न कुछ खाते हुए, न दूर खड़े होकर और न मुँह फेर कर बातें करें। इत्यादि बहुत सी व्यवहार की बातें महर्षि मनु ने कही हैं, जिनसे व्यक्ति व्यवहार

कुशल, सुखी, धार्मिक आदि बनता है। महर्षि मनु के पश्चात् महर्षि पतञ्जली अपने योग दर्शन में किस प्रकार व्यक्ति लोक में व्यवहार करे यह अपने एक सूत्र के द्वारा बता रहे हैं-

मैत्रीकरुणामुदितोपेक्षाणां सुखदुःखपुण्यापुण्य-विषयाणां भावनातश्चित्तप्रसादनम्। -योगदर्शन १.३३

संसार में चार प्रकार के व्यक्ति मिलते हैं, सुखी, दुःखी, पुण्यात्मा और पापात्मा। इन सभी से यथायोग्य व्यवहार अर्थात् सुखी व्यक्तियों से मित्रता का भाव रखना, न कि द्वेष, शत्रुता का भाव। दुखियों के प्रति दया, करुणा करनी, घृणा न करनी। पुण्यात्माओं को देखकर उनसे मिलकर हर्षित होना, खिन्न न होना। पापात्मा, दुर्जन व्यक्तियों के प्रति उपेक्षा अर्थात् न उनसे मित्रता और न ही शत्रुता रखना। ऐसा करने से व्यक्ति का मन प्रसन्न रहता है, वह दुःखी नहीं होता। धर्म और अपने कर्त्तव्य के प्रति अधिक अग्रसर होता है।

अब महर्षि कणाद को देखिये, वे अपने वैशेषिक दर्शन में पदार्थ विद्या सिखाने के साथ-साथ व्यवहार विद्या सिखा रहे हैं। हमें किससे लेना चाहिए, किसको देना चाहिए, कैसे लेना चाहिए, कैसे देना चाहिए, विपत्ति में छोटे-बड़े को क्या सहयोग करे, बराबर वाले परस्पर क्या करें, हमारे सामने कोई हीन है, छोटा है, योग्यता में कम है तो विपत्ति में हम उसके साथ कैसे वर्तें वा वह कैसा बर्ताव करे आदि अनेक बातें वैशेषिक दर्शन के छठे अध्याय में हैं।

और देखिये आयुर्वेद के ऋषि आयुर्वेद में औषध विज्ञान, शरीर विज्ञान बताने, सिखाने से पहले व्यवहार विज्ञान बता-सिखा रहे हैं। वे अपने चरक शास्त्र में सद्वृत्त नाम का प्रकरण लिखकर उत्कृष्ट मानव बनाना चाहते हैं। हम कैसे वस्त्र धारण करें, केश विन्यास कैसा हो। कैसे बैठना-चलना हो। क्या खावें, कैसे खावें, कितना खावें, कब कैसा खावें। सभा में बैठकर नखों को न चटकावें, उनको दातों से न काटें। व्यर्थ बैठकर लोष्ठमर्दन न करें। उत्तमों की निन्दा न करें, हीन व्यक्तियों का संग न करें, उनके पास न बैठें इत्यादि बातें महर्षि चरक हमारे जीवन को सरल बनाने के लिए बता रहे हैं।

अन्त में हम आर्यों के प्राण महर्षि दयानन्द का उदाहरण देते हैं। वैसे तो महर्षि के सभी ग्रन्थों में उत्तम व्यवहार की बातें मिलती हैं। इतना सब होते हुए भी महर्षि दयानन्द ने हमें व्यवहार को सिखाने के लिए **'व्यवहार भानु'** नामक ग्रन्थ लिखकर दिया है। इस ग्रन्थ की भूमिका में ही बता दिया कि मनुष्य को सुख लाभ कैसे होता है और किस आचरण से व्यक्ति दुःखी होकर अपनी हानि कर लेता है। व्यक्ति का सम्मान सत्कार कैसे होता है और किन कारणों से तिरस्कृत हो जाता है। किस मनुष्य का विश्वास और मान्य शत्रु भी करते हैं और कौन है वह कि जिसका विश्वास और मान्य मित्र भी नहीं करते। किस व्यक्ति का कार्य नहीं बिगड़ता और कौन अपना कार्य बिगाड़ बैठता है।

इस लघु ग्रन्थ में महर्षि ने बालक से लेकर वृद्धपर्यन्त और राजा से लेकर प्रजा तक सबका व्यवहार लिखा है और ग्रन्थ के अन्त में तो महर्षि जैसे प्रतिज्ञा कर रहे हों कि ''जो मनुष्य विद्या कम भी जानता हो परन्तु पूर्वोक्त दुष्ट व्यवहारों को छोड़कर धार्मिक होके खाने-पीने, बोलने-सुनने, बैठने-उठने, लेने-देने आदि व्यवहार सत्य से युक्त यथायोग्य करता है वह कहीं कभी दुःख को प्राप्त नहीं होता और जो सम्पूर्ण विद्या पढ़ के पूर्वोक्त उत्तम व्यवहारों को छोड़ के दुष्ट कर्मों को करता है, वह कहीं कभी सुख को प्राप्त नहीं हो सकता।'' उत्तम व्यवहार करने वाला ही सुखी हो सकता है अन्य नहीं ऐसा महर्षि का निश्चय है।

सभी ऋषियों ने अपने ग्रन्थों में मनुष्य मात्र को व्यवहार कुशल, धार्मिक, उत्साही, सुख, आस्तिक बनाने के लिए लिखा है। इन आधुनिक व्यवहार सिखाने वालों से व्यक्ति कुछ व्यवहार कुशल हुए हों, यह मान सकते हैं किन्तु इनसे कितने मनुष्य आस्तिक-धार्मिक बनते हैं, बने हैं, यह विचारणीय है।

यह हमने ऋषियों का दिग्दर्शन मात्र करवाया है। इसी में स्थिर बुद्धि होकर स्वयं विवेचना करें कि श्रेष्ठ-उत्तम व्यवहार शिक्षक ऋषि है अथवा ये आधुनिक सभा-सेमिनार करने वाले। - **ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर**

पतों में नवीनीकरण व संशोधन की प्रक्रिया

सभी विद्वानों व परोपकारी के सुधी पाठकों से निवेदन है कि अपना नाम, पत्र व्यवहार का पूरा पता (पिन कोड सहित), दूरभाष संख्या और ई-मेल किसी भी माध्यम से भिजवाने का कष्ट करें जिससे कि परोपकारिणी सभा के वर्तमान के पतों में नवीनीकरण व संशोधन की प्रक्रिया में सहयोग मिल सके।

पुस्तक समीक्षा

१. पुस्तक का नाम – अमोघ धन की कुञ्जी, **लेखक** – ओममुनि वानप्रस्थी, **सम्पादिका** – आचार्या सूर्या देवी चतुर्वेदा, **प्रकाशक** – ओममुनि वानप्रस्थी, **मूल्य** – १५/– रु. **पृष्ठ संख्या** – ४२

पुस्तक बड़े परिश्रम से तैयार की गई है। धन से सम्बन्धित सभी पहलुओं पर इसमें विचार किया गया है। इसके धन के सम्बन्ध में कुछ प्रमुख शीर्षक इस प्रकार हैं–

धन के गुण एवं धन प्राप्ति के उपाय, धन प्रशंसा, धन के साथ त्याग भाव, धन संरक्षण के उपाय, अधर्म से धनोपार्जन अनुचित, धन का सदुपयोग, धन की तीन गतियाँ, निर्धनता की निन्दा इत्यादि।

पुस्तक में वेद, नीति शा., पञ्चतन्त्र, नीति संग्रह, रामायण, महाभारत, सुभाषित संग्रह, पुराण, भर्तृहरि वैराग्य शतक, योग वसिष्ठ, हितोपदेश से विविध उद्धरण प्रस्तुत किये गये हैं। कुछ उद्धरण नीचे प्रस्तुत हैं–

स नो वसून्या भर। – अथर्ववेद ६/६३/४

हे प्रभो! हमें अपार सम्पत्ति प्राप्त कराइये।

शतहस्त समाहर सहस्रहस्त संकिर। –

अथर्ववेद ३/२४/५

सौ हाथों से कमा हजार हाथों से दान कर।

तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा। – यजु. ४०/१

वेद का संदेश है संसार के धन ऐश्वर्य त्याग पूर्वक उपभोग करो।

धन की तीन गतियाँ–

दानं भोगो नाशस्तिस्रो गतयो भवन्ति वित्तस्य।
यो न ददाति न भुङ्क्ते, तस्य तृतीया गतिर्भवति।।

– पच. मित्र. सं. १५४

दान, भोग और नष्ट हो जाना, ये तीन गतियाँ हैं। जो धन का न दान करता है और न उसे खाने पीने आदि में खर्च करता है, उसके धन की तीसरी गति=नाश होती है।

धन की गति तो तीन हैं, दान, भोग और नाश। उत्तम गति तो दान है, अधम गति है नाश।

अन्यायेनोपार्जितं द्रव्यं दशवर्षाणि तिष्ठति।
प्राप्ते चैकादेशे वर्षे समूलं च विनश्यति।।

– महा सुभाषित संग्रह १८०४

अन्याय से कमाया धन १० वर्ष तक रहता है। जहाँ ११वाँ वर्ष लगा कि मूल को भी साथ लेकर नष्ट हो जाता है।

पुस्तक के अन्त में 'मानने योग्य बातें' नामक शीर्षक से १०१ सुभाषित का भी संग्रह है जो बहुत उपयोगी है।

वैसे पुस्तक का मूल्य १५/– रुपये है किन्तु वर्तमान में यह परोपकारिणी सभा से नि:शुल्क प्राप्त की जा सकती है। डाक से पुस्तक मंगाने पर डाक शुल्क रु. ७/– मन्त्री, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर के नाम प्रेषित करना होगा।

मोहनचन्द, ५, हरि ओम मार्ग, भजनगंज, अजमेर
मो. ९४६८६९५७९०

२. पुस्तक– तड़प वाले: तड़पाती जिनकी कहानी, **लेखक**– राजेन्द्र जिज्ञासु, **प्रकाशक**– पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय प्रकाशन मन्दिर, अबोहर, पंजाब, **मूल्य**– २००/– रु. **पृष्ठ संख्या**– २६३

जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी। भारत के कर्णधारों, महान् विभूतियों ने भारत भूमि पर अपने प्राणों की आहुति दी। उनके तप, त्याग, स्वाभिमान का गौरव विद्यमान है। भारत भूमि को ही धर्म व कर्म स्थली माना। ऐसे ही महान् आत्माओं के प्रेरक प्रसङ्ग लेखक ने अपनी कृति 'तड़प वाले तड़पाती जिनकी कहानी' में उद्धृत किए हैं। प्रेरक प्रसङ्ग कहानी रूप में हो तो पाठक शीघ्र उसे अङ्गीकार कर लेता है।

कहानी सभी वर्ग को अतीव प्रिय लगती है, इसी कड़ी में लेखक ने अपनी पुस्तिका में १४ अध्यायों में शीर्षक देकर सामग्री दी है जो वास्तव में हृदयङ्गम की बात स्वत: बनती है। अध्याय १. वीरों की शान निराली २. वैदिक धर्म की जय ३. महापुरुषों की महिमा ४. तप से बहती निर्मल धारा ५. ऋषि मिशन का युग ६. श्रद्धा व सेवा का आर्यसमाज ७. प्रचार में दिन देखा न रात ८. बड़ों की बड़ी बात ९. जीवन बदलते प्रेरक–प्रसङ्ग १०. वेद–धर्म के रक्षक दीवाने ११. आर्यों की शौर्य–गाथा १२. आर्यों के बलिदान व संघर्ष १३. नव निर्माण की राहों में १४. विविध संस्मरण। शीर्षक अपने आप में आकर्षक हैं। लेखक ने कई भाग कर लघु कहानी रूप में प्रेरक प्रसङ्ग को प्रेषित किया है। पण्डित आर्य मुनि, पण्डित जगदेवसिंह–स्वामी सर्वानन्द जी, स्वामी रुद्रानन्द जी, आनन्द मुनि जी, पण्डित श्री गणपति जी शर्मा, मुंशी इन्द्रमणि जी, प्राचार्य भगवानदास जी, पण्डित नरेन्द्र जी, पं. लेखराम जी आदि के प्रसङ्ग हमारे हृदय में वीरता, बल, लेखनी, भाषा आदि के प्रति भाव विभोर करता है। लेखक का शोध उत्तम है। अत: पाठक प्रेरित होंगे तथा प्रसङ्गों से अवगत होंगे। भाषा, पुस्तक का सम्पूर्ण कलेवर प्रेरणादायी, जिज्ञासा पूर्ण है। आभार।

– देवमुनि, ऋषि उद्यान, अजमेर

वैशेषिक-दर्शन का अध्यापन

महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल ऋषि उद्यान, में अध्ययन-अध्यापन का कार्य सुचारू रूप से चल रहा है। उसी क्रम में वैशेषिक दर्शन **(स्वामी ब्रह्ममुनि भाष्य सहित)** का **स्वामी विष्वङ् परिव्राजक** द्वारा श्रावण कृष्ण चतुर्थी २०७१ वि. (तदनुसार १५ जुलाई २०१४ ई.) से विधिवत् नियमित सम्पूर्ण अध्यापन कराया जायेगा।

वैशेषिक दर्शन महर्षि कणाद के द्वारा रचित ग्रन्थ है जो कि दस अध्यायों में विभक्त है। प्रत्येक अध्याय में दो आह्निक हैं। इस दर्शन का विषय द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय, इन छह पदार्थों के धर्म के तत्त्वज्ञान से अभ्युदय और निःश्रेयस की प्राप्ति कहा है। यह द्रव्य के गुण, कर्मादि के लक्षण सहित किसी कार्य द्रव्य के कारणों का विशद् विवेचन प्रस्तुत करता है।

यह दर्शन ५-६ महिनों में पूर्ण होगा।

इस काल में प्रातः व सायं उपदेश भी सुनने को मिलेगा। बीच-बीच में विभिन्न विद्वानों द्वारा अन्य विविध विषयों पर भी कक्षा एवं उपदेश होते रहेंगे। ब्रह्मचारियों, संन्यासियों व अन्य असमर्थों हेतु निवास व भोजन व्यवस्था निःशुल्क है। समर्थ प्रतिभागी इच्छानुसार सहयोग कर सकते हैं। माताओं-बहनों के लिए निवास की पृथक् व्यवस्था रहेगी। **सम्पर्क**-९४१४००३७५६ (स्वामी विष्वङ्) **सायं ५.३० से ६.००**। **पता**-ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर-३०५००१ (राज.), ईमेल-psabhaa@gmail.com

दयानन्द धर्मार्थ चिकित्सालय

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि उद्यान में पिछले लगभग एक वर्ष से आयुर्वेदिक चिकित्सालय चल रहा है। चिकित्सालय में उपलब्ध सभी औषधियाँ निःशुल्क दी जाती हैं। ऋषि उद्यान में रह रहे डॉ. रमेश मुनि जी चिकित्सक के रूप में इस चिकित्सालय का कुशलतापूर्वक कार्यभार सम्भाल रहे हैं।

दानी महानुभावों से सहयोग की भी अपेक्षा है।

१. बैंक का नाम-**भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।**

बैंक खाता संख्या-**10158172715**

IFSC-SBIN0007959

२. बैंक का नाम-**आई.डी.बी.आई**, पावर हाऊस के सामने, जयपुर रोड़, अजमेर।

बैंक खाता संख्या-**091104000057530**

IFSC-IBKL0000091

email : psabhaa@gmail.com

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, अजमेर

नवीन प्रकाशन का परिचय

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित वैदिक पुस्तकालय के द्वारा प्रेरणास्पद व भक्त्योत्पादक **कैलेण्डरों** व **स्टीकरों** का नवीन प्रकाशन किया गया है।

कैलेण्डर - (क) महर्षि दयानन्द की शिक्षाएँ- इसमें महर्षि दयानन्द जी द्वारा रचित धार्मिक-व्यवहार से लेकर ईश्वर-भक्ति तक ले जाने वाले प्रेरक-वाक्यों का संग्रह किया गया है।

(ख) सन्ध्या सुरभि- इसमें महर्षि दयानन्द जी की भक्त्योपादक वाक्य-रचना का आधार लेकर वैदिक सन्ध्या के भावों को सुरभित किया गया है।

(ग) गायत्री मन्त्र- इसमें गायत्री मन्त्र के अनेक विशेष अर्थों के द्वारा ईश्वर के गुणों के प्रति प्रेरित किया गया है। साथ में मन्त्र का भाव कविता रस में भी बाँधा गया है।

स्टीकर- इसमें परमात्मा के मुख्य नाम **ओ३म्** व महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के चित्र को विशेषतः प्रकाशित किया गया है।

सभी आर्यजनों को ये नवीन प्रकाशन अवश्य ही लाभदायक सिद्ध होंगे।

संस्था - समाचार

१ से १५ मई २०१४

१. यज्ञ एवं प्रवचन- ईश्वर की कृपा से तथा सभा कार्यकर्त्ताओं के सहयोग व पुरुषार्थ से ऋषि उद्यान परिसर में विगत दिनों भी दोनों समय अग्निहोत्र व प्रवचन-स्वाध्याय का क्रम निर्विघ्नता से चला।

१ से १५ मई तक प्रातः यज्ञोपरान्त प्रवचन के क्रम में स्वामी विष्वङ् जी ने योगदर्शन की सरल व्याख्या प्रस्तुत की। आपने बताया कि मन में जो भी विचार आता है उसे योग की भाषा में 'वृत्ति' कहा जाता है। मन की वृत्तियाँ अनन्त हैं। लेकिन इन वृत्तियों को प्रमाण, विपर्यय, विकल्प, निद्रा और स्मृति इन पाँच प्रकारों में बाँटा जा सकता है। ये पाँचों वृत्तियाँ हमारे लिए क्लिष्ट (दुःख देने वाली) और अक्लिष्ट (सुख देने वाली) दोनों प्रकार की हो सकती हैं। प्रमाण वृत्ति की चर्चा करते हुए महर्षि पतञ्जलि योगसूत्र (१/७) में कहते हैं कि - **'प्रत्यक्षानुमानागमाः प्रमाणानि'** अर्थात् प्रमाण वृत्ति तीन प्रकार की होती है- प्रत्यक्ष, अनुमान और आगम। प्रमाणों की महर्षि गौतम प्रणीत न्याय शास्त्र में भी विस्तृत चर्चा है। प्रत्यक्ष की परिभाषा में वहाँ कहा गया- **'इन्द्रियार्थसन्निकर्षोत्पन्नं ज्ञानं प्रत्यक्षम्'** अर्थात् इन्द्रियों का जब उनके अर्थ के साथ सन्निकर्ष (संयोग) होता है, तब उस स्थिति में उत्पन्न ज्ञान को प्रत्यक्ष कहा जाता है। उदाहरणार्थ नेत्रेन्द्रिय द्वारा रूप का ज्ञान, श्रोत्रेन्द्रिय द्वारा शब्द का ज्ञान, रसना-इन्द्रिय के द्वारा रस का ज्ञान, घ्राणेन्द्रिय द्वारा गन्ध का ज्ञान, त्वगेन्द्रि द्वारा स्पर्श का ज्ञान, प्रत्यक्ष प्रमाण से होता है।

अनुमान दो पदों अनु (पश्चाद्)+मान (ज्ञान) से मिलकर बना हुआ है अर्थात् जब प्रत्यक्ष के माध्यम से दो पदार्थों के मध्य होने वाले नित्य सम्बन्ध को जानकर के एक पदार्थ के ज्ञान से दूसरे का ज्ञान होना अनुमान कहलाता है। किसी के पुत्र को देखने से ज्ञान होता है कि इसके माता-पिता आदि है या अवश्य थे, ये इसके उदाहरण हैं।

आप्तपुरुषों द्वारा प्रत्यक्ष या अनुमान के द्वारा अर्जित ज्ञान को जब दूसरे पुरुषों में ज्ञान को प्रदान करने के लिए शब्दों से उपदेश किया जाता है, तब उन शब्दों को सुनने से उस पदार्थ विषयक श्रोता की जो चित्त वृत्ति बनती है वह आगम-वृत्ति होती है।

यहाँ हमें यह बात स्पष्ट समझनी चाहिए कि यद्यपि प्रत्यक्ष ज्ञान में ही हमारा सर्वाधिक विश्वास होता है और अनुमान और आगम का आधार भी प्रत्यक्ष है लेकिन प्रत्यक्ष की अपेक्षा अनुमान और शब्द का हम अधिक प्रयोग करते हैं। अनुमान और आगम का क्षेत्र प्रत्यक्ष की अपेक्षा बहुत अधिक विस्तृत है।

सायंकालीन प्रवचन के क्रम में महर्षि दयानन्द के क्रान्तिकारी, दार्शनिक ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश का स्वाध्याय किया गया। आचार्य कर्मवीर जी दर्शनाचार्य सत्यार्थप्रकाश की पंक्तियों को बड़े सरल व सूक्ष्म रूप से समझाते हैं और साथ ही विद्यार्थियों के मन में उठने वाली जिज्ञासाओं का तर्क व प्रमाणों से समाधान भी करते हैं। आपने तृतीय समुल्लास में षड्-पदार्थों (द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष व समवाय) की चर्चा के प्रसंग में गुणों की चर्चा करते हुए बताया कि 'जो द्रव्य के आश्रय में रहते हैं, अन्य गुणों का धारण नहीं करते, संयोग व विभाग में अनपेक्ष होते हैं उनको गुण कहा जाता है।' ये रूप, रस, गन्ध, स्पर्श, संख्या, परिमाण, पृथकत्व, संयोग, विभाग, परत्व, अपरत्व, बुद्धि, सुख, दुःख, द्वेष, प्रयत्न, गुरुत्व, द्रवत्व, स्नेह, संस्कार, धर्म, अधर्म व शब्द के रूप में चौबीस प्रकार के होते हैं।

धर्म के लिए पं. लेखराम का बलिदानः- ११ मई २०१४ को सायंकालीन प्रवचन के अन्तर्गत ब्र. सत्यवीर जी ने आर्यमुसाफिर, रक्तसाक्षी पण्डित जी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए बताया कि कैसे पण्डित लेखराम जी ने अपना सर्वस्व आर्यसमाज के लिए न्योछावर कर दिया। आपने पण्डित लेखराम जी के जन्म से लेकर मृत्यु तक का पूरा चित्र श्रोताओं के समक्ष खींच दिया। आपने बताया कि पण्डित जी का जन्म विक्रम संवत् १९१५ के चैत्र मास की अष्टमी (तदनुसार..... १८५८ ई.) को झेलम जिला के सैदपुर ग्राम (वर्तमान समय में पाकिस्तान स्थित) में महता तारासिंह के घर हुआ। महता तारासिंह, श्री नारायणसिंह जी के दो बेटों में बड़े पुत्र थे, छोटे पुत्र का नाम गण्डाराम था। इन्हीं तारासिंह जी की चार सन्तानों में पं. लेखराम सब से बड़ी सन्तान थे, लेखराम जी से छोटे दो भाई तोताराम जी व बालकराम जी तथा सब से छोटी एक बहन मायावती जी थी। लेखराम जी का अपने चाचा गण्डाराम जी से विशेष लगाव था, आपके बचपन का अधिकांश समय इनके साथ ही बीता। उस समय पंजाब प्रान्त में फारसी का ही बोल-बाला था, अतः आपकी प्रारम्भिक शिक्षा-दीक्षा

इसी भाषा में हुई।

लगभग १७ वर्ष की अवस्था में चाचा गण्डाराम की सहायता से आपने पुलिस में नौकरी प्राप्त की। उस समय के प्रचलित विचारों के अनुसार १७ वर्ष की आसपास की अवस्था वाला युवक कमाई करके माता-पिता को आर्थिक सहयोग करें, यह कर्त्तव्य समझा जाता था। अत: लेखराम जी ने भी परिवार में सबसे बड़े होने के नाते इसे अपना कर्त्तव्य समझा और २१ दिसम्बर १८७५ ई. में पेशावर पुलिस में भर्ती हो गए।

किन्तु धार्मिक संस्कारों वाले लेखराम जी के जीवन में, उनके ये धार्मिक संस्कार भी धीरे-धीरे अपना प्रभाव जमाने लगे थे। इस दौरान आप एक सिक्ख नवीन वेदान्ती के सम्पर्क में आए। इस वेदान्ती से प्रभावित होकर जो वैराग्य की लहर उठी, वह मुंशी कन्हैयालाल अलखधारी जैसे सन्तों के प्रभाव व प्रेरणा से आर्यसमाज की ओर मुड़ गई। पुन: तीव्र बुद्धि वाले लेखराम जी को ये वैदिक सिद्धान्त झट-पट बुद्धि में उतर गए। आपने पत्राचार के माध्यम से महर्षि का सम्पूर्ण साहित्य मंगवाकर उसका स्वाध्याय किया तथा १८८० ई. के आसपास पेशावर में आर्यसमाज की स्थापना की। इसके साथ-साथ लेखराम जी ने वैदिक धर्म पर व्याख्यान देने भी प्रारम्भ कर दिए। कभी-कभी मन में कुछ जिज्ञासाएँ जन्म लेती थी अत: निश्चय किया कि महर्षि दयानन्द से संशय निवृत्ति करने और उनसे आशीर्वाद लेने के लिए उनकी सेवा में अवश्य जाना चाहिए। अत: नौकरी से एक माह की छुट्टी लेकर १७ मई १८८० को अजमेर पधारे, जहाँ महर्षि के प्रथम व अन्तिम बार दर्शन किए। पण्डित जी ने स्वयं इस विषय में लिखा कि दर्शन से यात्रा के सब कष्ट विस्मृत हो गए और उनके सत्योपदेश से सर्वसंशय निवृत्त हो गए।

इस भेंट से व अपनी प्रखर बुद्धि से मानो लेखराम जी में नई प्रतिभा आ गई। निरन्तर शास्त्रार्थों व प्रचार कार्यक्रमों से १८८६ तक लेखराम जी की आर्यजगत् में धूम मच गई। आपको जगह-जगह शास्त्रार्थ के लिए बुलाया जाने लगा, कई पत्र-पत्रिकाओं का सम्पादन का कार्य आपको सौंपा गया और साथ ही साथ शुद्धिकरण का कार्य भी आपने चला रखा था।

यह आपकी कर्मठता और प्रखर बुद्धि का ही परिणाम था कि आर्यसमाज मुलतान के प्रस्ताव पर, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने १ जुलाई १८८८ को आपको स्वामी दयानन्द के जीवन सम्बन्धी वृत्तान्त इकट्ठा करने के लिए नियत किया। पुन: पण्डित जी ने महर्षि से जुड़े छोटे-छोटे कस्बों, नगरों से लेकर सभी प्रमुख स्थानों के कई-कई चक्कर लगाए तथा ऋषि जीवन की घटनाओं सम्बन्धी जानकारी एकत्रित की। इस दौरान उपदेश, शास्त्रार्थ, प्रचार व शुद्धिकार्य भी साथ-साथ चलता रहा।

पुन: ३६ वर्ष की अवस्था में पण्डित जी ने कुमारी लक्ष्मी देवी जी से विवाह किया, विवाहोपरान्त आपने अपनी धर्मपत्नी को पढ़ाना प्रारम्भ कर दिया। इस दौरान कुछ दिन घर में ठहर कर आप पुन: ऋषि-मिशन में निकल पड़े। कभी यहाँ तो कभी वहाँ। पण्डित जी की धर्म-धुन का पता इसी बात से लगाया जा सकता है कि जब जून १८९५ में पण्डित जी क्वेटाँ आर्यसमाज में थे, तब इनके छोटे भाई तोताराम जी की मृत्यु हो गई। घर वालों ने पण्डित लेखराम का अपनी धार्मिक संस्था से असीम प्रेम देखकर, उन्हें तंग करना ठीक नहीं समझा। क्योंकि यहाँ क्वेटे में व्याख्यान समाप्त कर उन्हें बलोचिस्तान का दौरा करना था। लेकिन चाचा गण्डाराम ने कुछ दिन पश्चात् इसकी सूचना पण्डित जी को दी। इस सूचना को पाकर पं. लेखराम ने सभा मन्त्री को पत्र लिखा, जिसमें उनकी भावुकता व धर्म धुन बड़ी स्पष्ट नजर आती है- ''मेरा छोटा भाई तोताराम १२ जून को मर गया परन्तु घरवालों ने मुझे कुछ समय तक सूचिन नहीं किया। कल पेशावर से मेरे चाचा का पत्र आया जिससे हाल मालूम हुआ। हैरान हूँ कि क्या करूँ। इधर समाज का काम-उधर गृह की आपत्ति-हैरानी पर हैरानी है। यदि यहाँ से काम छोड़कर चला जाता हूँ तो अपने समाज को हानि पहुँचती है और वहाँ भी बहुत सा हर्ज है। लाचार मैंने आज ही घर पत्र लिखा है कि यदि वे मुझे आज्ञा दें तो जुलाई के अन्त तक क्वेटे रहूँ, नहीं तो पत्र आने पर आप को सूचना दूँगा।'' पुन: घरवालों से अनुमति मिलने पर पण्डित जी अपने नियत कार्यक्रमानुसार प्रचार करते रहे। ठीक इसी प्रकार जब एकलौते सवा वर्षीय पुत्र का देहावसान हुआ तो घर जाकर आवश्यक कर्मों को कर पुन: आप बिना विचलित हुए धर्मप्रचार के लिए निकल पड़े।

इन प्रचार-शुद्धिकार्यों में आप धीरे-धीरे मुस्लिम मतानुयायियों की आँखों में चुभने लगे। चूँकि बाल्यकाल से ही आपकी फारसी भाषा में अच्छी गति थी, अत: उनका कोई भी बड़ा से बड़ा विद्वान् आपके समक्ष टिक ही नहीं पाता था। अत: विरोधियों ने पण्डित जी को विभिन्न मुकदमों में न्यायालयों में घसीटना चाहा- लेकिन न्यायाधीशों

ने पण्डित जी का पक्ष सही पाकर मुकदमें खारिज कर दिए। अत: बौखलाए मतान्ध विरोधियों ने पण्डित जी के प्राण लेने की योजना बना डाली। एक हत्यारे को जिज्ञासु बनाकर भेजा गया। 'शुद्धि के लिए आया हूँ' ऐसा कहने पर पण्डित जी ने उसे स्नेह से अपने समीप बैठा लिया। उसी मतान्ध व्यक्ति ने मौका पाकर ६ मार्च १८९७ की सन्ध्या को पण्डित जी के शरीर पर छुरे से कई वार किए, जिससे पण्डित जी ७ मार्च की रात को (लगभग २ बजे के आसपास) सदा की नींद में सो गए।

२. डॉ. धर्मवीर जी का प्रचार कार्यक्रम- सम्पन्न कार्यक्रम- (क) २१ से २७ अप्रैल २०१४- आर्यसमाज पश्चिम विहार दिल्ली में वेदकथा की।

(ख) २७ से २९ अप्रैल २०१४- आर्यसमाज हापुड़, गाजियाबाद के वार्षिकोत्सव में भाग लिया।

(ग) ४ मई २०१४- चन्द्रा स्टोर्स, अजमेर में मुण्डन संस्कार सम्पन्न कराया।

(घ) १६ से १८ मई २०१४- आर्यसमाज मण्डावली, दिल्ली के कार्यक्रम में भाग लिया।

आगामी कार्यक्रम- (क) ८ जून २०१४- जयपुर में श्री आशीष जी सुपुत्र श्री तपेन्द्र जी का विवाह संस्कार सम्पन्न करायेंगे।

(ख) १३ से १५ जून २०१४- कन्या गुरुकुल शिवगंज, राजस्थान के वार्षिकोत्सव में भाग लेंगे।

(ग) १६ से २२ जून २०१४- योग शिविर, ऋषि उद्यान में शिविरार्थियों को मार्गदर्शन प्रदान करेंगे।

(घ) २३ से २९ जून २०१४- आर्ष गुरुकुल, होशंगाबाद में उपनिषद् कथा करेंगे।

जीवन की ढलती शाम

- भीमाशंकर साखरे

ओ३म् इदमुच्छ्रेयोवसानमागां,
शिवे मे द्यावापृथिवी अभूताम्।
असपत्नाः प्रदिशो मे भवन्तु न वै त्वा
द्विष्मो अभयं नो अस्तु।।

(अथर्व.१९.१४..१)

अब तो जीव के सन्ध्याकाल में मेरे लिये यही श्रेयस्कर है कि मैं संसारी संघर्षों से अलग हो जाऊँ। पृथ्वी और अन्तरिक्ष की देवशक्तियाँ मेरा कल्याण करें। सब दिशाएँ मेरे लिये द्वेषमुक्त हो जायें और मेरा मन भी द्वेष रहित रहे, भयमुक्त रहे।

जीवन की है ढलती शाम, हे प्रभु अब दो यह वरदान।
संसारी संघर्ष न आये, राग द्वेष अब नहीं सताये,
धरती के या आसमान के, सभी देवता दया दिखाये,
वैर-विरोध मिटे सब के मन, मिले अभय अक्षर वरदान।।१।।

सभी स्नेह से भरे हृदय हो, सभी सुखद हो और सदय हो,
रहे नहीं मन में अभिमान, केवल भाव रहे कल्याण।।२।।

- आलन्द

वेदगोष्ठी का आयोजन

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष पर २७वीं वेदगोष्ठी का आयोजन ऋषि मेले के साथ ही दीपावली के पश्चात् ३१ अक्टूबर तथा १, २ नवम्बर २०१४, शुक्र, शनि, रविवार को किया गया है। इस वर्ष वेदगोष्ठी का विषय 'भारतीय मत सम्प्रदाय और वेद' रखा गया है। इससे पूर्व वर्ष में कुछ विचार ग्यारहवें समुल्लास के सम्बन्ध में विचार किया गया था। इस वर्ष की गोष्ठी में ऋषि दयानन्द के पश्चात् प्रचलित मत सम्प्रदायों के सिद्धान्त और उद्देश्यों पर विशेष चर्चा होगी। किन विशेष सम्प्रदायों को विचार के लिए लिया जायेगाा, इसकी सूचना आगे के अङ्क में दी जा सकेगी।

श्रेष्ठ निबन्ध के लिए प्रथम ६१००, द्वितीय ४१००, तृतीय पुरस्कार ३१०० रुपये रखे गये हैं। गत वर्ष के श्रेष्ठ निबन्धों को आगामी ऋषि मेले के अवसर पर पुरस्कृत किया जायेगा।

- संयोजक

आर्यजगत् के समाचार

१. स्मृति ग्रन्थ प्रकाशित- सभी आर्य महानुभावों से निवेदन है कि पण्डित रविदत्त वैद्य, ब्यावर, राजस्थान स्मृति ग्रन्थ प्रकाशित किया जा रहा है। पण्डित जी लाहौर के उपदेश विद्यालय के स्नातक, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कर्मठ सदस्य रहे। राजस्थान प्रदेश भारतीय जनसंघ के भी वे तीन बार अध्यक्ष रहे। उनके संस्मरण एवं चित्र जिनके पास हो निम्नलिखित पते पर सूचना पाने के १५ दिन के भीतर भेजने की कृपा करें।

सुनील आर्य, क्रॉकरी शोरूम, आर्यसमाज मार्ग, महर्षि दयानन्द कन्या महाविद्यालय व एस.बी.आई. सान्ध्य बैंक शाखा, ब्यावर, जि. अजमेर, राजस्थान

ई-मेल- manjulabisht08@gmail.com

२. वेबसाइट पर पुस्तकों की सुविधा- हमारी वेबसाइट pustakalya on our website पर पुस्तकालय नाम का एक नया लिन्क बनाया है, जिससे पाठक को उन सभी किताबों तक पहुँचने के लिए लिंक मिल जाता है। सभा ने अबतक जिनका कम्प्यूटरीकरण करवाया है। पाठक चाहे तो सीधे-सीधे वेबसाइट पर सभी पुस्तकों का पठन कर सकता है या फिर चाहे तो डाउनलोड करके अपने कम्प्यूटर पर हमेशा के लिए सुरक्षित कर सकता है, जिसे आवश्यकतानुसार छाप भी सकता है।

३. आवश्यकता- महर्षि दयानन्द बाल आश्रम मोहाली, चण्डीगढ़ में रहने वाले बच्चों को वैदिक संस्कार देने के लिये एक महिला व लड़की की आवश्यकता है, उनका रहने व खाने का प्रबन्ध आश्रम में होगा। **सम्पर्क**- नीरज कोड़ा, चलभाष- ०९४१७०४४४८१, ९५०१०८४६७१

४. प्रवेश परीक्षा- प्राचीन वैदिक आर्ष-परम्परा के संवाहक गुरुकुल प्रभात आश्रम, मेरठ, उ.प्र. में नवीन प्रवेशार्थी छात्रों की प्रवेश-परीक्षा पूर्व वर्षों की भाँति इस वर्ष भी २६ से ३० जून २०१४ तक सम्पन्न होगी। प्रवेशार्थी छात्र की अर्हता पञ्चम श्रेणी उत्तीर्ण, मेधावी, स्वस्थ, सुशील एवं १० वर्षीय होना चाहिए। प्रवेश-परीक्षा लिखित एवं मौखिक दो चरणों में एक दिन में ही होगी। लिखित-परीक्षा में ६० प्रतिशत अंक प्राप्त छात्र ही मौखिक परीक्षा का अधिकारी होगा। **सम्पर्क**- ०९७५८७४७९२०, ०९७१९३२५६७७

५. प्रवेश प्रारम्भ- अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम खेड़ा खुर्रमपुर रोड, फर्रुखनगर, जि. गुडगाँव, हरियाणा में स्वच्छ वातावरण से ओतप्रोत आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित गुरुकुल प्रारम्भ हो चुका है जिसमें छात्रों को वैदिक शिक्षा व संस्कार के साथ-साथ आधुनिक विषयों की शिक्षा भी दी जायेगी। इच्छुक विद्यार्थी शीघ्र सम्पर्क करें। **सम्पर्क**- ०९४१६०५४१९५, ०९८१३७५४०८४

आवश्यकता- एक सेवा निवृत्त मुख्य अध्यापक, अनुभवी कुशल वार्डनर संरक्षक तथा एक रसोईया की आवश्यकता है, जो गुरुकुल में छात्रों की सेवा करना चाहते हैं। भोजन, आवास गुरुकुल में ही रहेगा। **सम्पर्क**- ०९४१६०५४१९५, ०९८१३७५४०८४

६. प्रवेश सूचना- आर्ष कन्या गुरुकुल, दाधिया, जि. अलवर, राजस्थान के साबी नदी के किनारे स्थित एक रमणीक संस्था है। यह गुरुकुल दिल्ली से १०० किमी एवं जयपुर से १५० किमी की दूरी पर स्थित है तथा वर्तमान में कन्याओं की शिक्षा का सर्वोत्तम केन्द्र है। अतः आपसे निवेदन है कि आप गुरुकुल में अधिक से अधिक संख्या में कन्याओं को प्रवेश दिलाकर आर्ष सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार में योगदान दें। **सम्पर्क**- ०१४९५-२७०५०३, ०९४१६७४७३०८

७. प्रवेश सूचना- श्री गुरु विरजानन्द गुरुकुल महाविद्यालय करतापुर, जि. जालन्धर, पंजाब में सत्र २०१४-२०१५ के प्रवेश के लिये २० जून २०१४ की तिथि निश्चित की गई है।

१. प्रवेश केवल छठी कक्षा में ही दिया जाएगा अन्य किसी भी कक्षा में नए छात्रों को प्रवेश नहीं दिया जाएगा। **२.** प्रवेश परीक्षा प्रातः १० से १ बजे तक चलेगी। **३.** परीक्षा में भाग लेने के इच्छुक ब्रह्मचारी प्रातः ९ बजे तक अवश्य पहुँच जाएँ। **४.** केवल परीक्षा में उत्तीर्ण हुए ब्रह्मचारियों को प्रवेश दिया जाएगा।

परीक्षा में भाग लेने के लिए आने वाले छात्र अपनी चार पासपोर्ट साईज फोटो साथ लाएँ। पांचवी श्रेणी में उत्तीर्ण होने का प्रमाण-पत्र तथा स्थानान्तरण पत्र आदि साथ लाएँ। परीक्षार्थी सफेद कुर्ता पाजामा पहन कर ही परीक्षा में बैठ सकेंगे। शाकाहारी तथा संस्कारशील आर्य परिवारों के बच्चों को ही प्रवेश दिया जाएगा।

सम्पर्क- ०१८१-२७८२२५२, ०९८८८७६४३११

८. विचार टी.वी. निर्मित कार्यक्रम- आस्था चैनल

पर दैनिक रूप से हर रोज रात्रि ९.३० से १० बजे तक प्रसारित किए जाऐंगे। इन कार्यक्रमों के दैनिक प्रसारण का विवरण निम्न अनुसार हैं।

दिन	विषय (कार्यक्रमों का विवरण)	वक्ता
सोमवार	क्रियात्मक योगाभ्यास	आचार्य ज्ञानेश्वर आर्य
मंगलवार	ईशोपनिषद्	स्वा.विवेकानन्द परि.
बुधवार	मधुर सम्बन्धों के स्वर्णिम सूत्र	आचार्य आशीष आर्य
गुरुवार	व्यक्तित्व विकास	डॉ. विनय विद्यालंकार
शुक्रवार	पातञ्जल योग दर्शन	आचार्य सत्यप्रकाश
शनिवार	सोलह संस्कार	डॉ. वागीश आचार्य
रविवार	दस्तावेजी चलचित्र (डॉक्युमेण्ट्री)/ लघु चलचित्र (शॉर्ट फिल्म)	

९. वैदिक वीरांगना दल- इस दल के द्वारा ३० अप्रैल २०१४ को शाम ५ से ६ बजे तक बी-१२३, मालवीय नगर, जयपुर, राजस्थान पर एक वैदिक हवन का आयोजन किया गया जिसमें ४० के लगभग भाई-बहनों ने भाग लिया। इस हवन की विशेषता यह थी कि भाग लेने वाले भाई-बहन वैदिक धर्म से परिचित नहीं थे। कार्यक्रम के प्रारम्भ में दल की अध्यक्षा अनामिका शर्मा ने एक भजन प्रस्तुत किया। यज्ञ का प्रशिक्षण श्रीमती दुर्गा शर्मा ने दिया व सभी का आभार व्यक्त किया।

१० स्मृति में पुरस्कार- आर्यसमाज के उद्भट विद्वान्, प्रचारक एवं लेखक पं. गंगा प्रसाद उपाध्याय की स्मृति में समिति विगत लगभग ४० वर्षों से आर्यसमाज विचारधारा से सम्बन्धित ग्रन्थ पर पुरस्कार प्रदान कर रही है। इस पुरस्कार में रु. २१०००/- की धनराशि, प्रशस्तिपत्र एवं अंगवस्त्र प्रदान किया जाता है। विद्वान् सज्जनों से सादर अनुरोध है कि वे अपनी कृति की तीन प्रतियाँ कार्यालय संकेत पर १५ जून २०१४ तक प्रेषित करने की कृपा करें।

सम्पर्क- गंगा प्रसाद उपाध्याय पुरस्कार समिति, ८४३/१२४८, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद-२११००३

११. वेद प्रचार- आर्यसमाज बिगोद, जि. भीलवाड़ा द्वारा राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के भजनोपदेशक श्री भूपेन्द्रसिंह एवं पं. लेखराज शर्मा द्वारा दिनांक २८/४/२०१४ से बिगोद कस्बे में दिनांक १/५/२०१४ तक वेद प्रचार यज्ञ-भजनों के माध्यम से सम्पन्न कर कस्बे में जागृति पैदा कर दी। उपरोक्त कार्यक्रमों में जिला सभा के मन्त्री श्री रामकृष्ण छात एवं श्री कन्हैयालाल साहू डोहरिया उपस्थित रहे।

१२. वार्षिकोत्सव सम्पन्न- आर्यसमाज दूजार, लाडनू, जि. नागौर, राजस्थान का वार्षिक उत्सव दिनांक १ से ४ मई, २०१४ तक सम्पन्न हुआ जिसमें उत्तर भारत की प्रसिद्ध भजनोपदेशिका अंजली, करनाल हरियाणा, रामेश्वर मुनि, केथल हरियाणा, प्रधान श्री किशनराम आर्य, बीलू जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा नागौर ने भाग लिया। वेद प्रचार, सत्यार्थप्रकाश का प्रचार, गोरक्षा, पाखण्ड खण्डन, समाज सुधार, नशा मुक्ति आदि पर प्रवचन, भजन का कार्यक्रम करवाया।

१३. पक्षियों के लिए परिण्डे- प्राणीमात्र के कल्याण की कामना करते हुए जिला आर्य प्रतिनिधि सभा कोटा, राजस्थान की ओर से आर्यसमाज गायत्री विहार के तत्वाधान में बजरंग नगर कोटा में गायत्री मन्त्रोच्चारण पूर्वक तपती दुपहरी में प्यासे पक्षियों को राहत पहुँचाने के लिए परिण्डे बांधे गए। इस अवसर पर आर्यसमाज के अर्जुनदेव चड्ढा, अरविन्द पाण्डेय, मन्त्री उमेश कुर्मी उपस्थित थे।

१४. स्थापना समारोह- मसूरी की तलहटी में स्थित, प्राकृतिक सौन्दर्य का अनुपम स्थल गुरुकुल पौन्धा, देहरादून का वार्षिकोत्सव एवं स्थापना समारोह ३१ मई से १ जून, २०१४ तक भव्य सम्मेलनों के साथ मनाया गया। इसमें प्रसिद्ध वैदिक उपदेशक एवं भजनोपदेशक पधारे। इस अवसर पर गुरुकुल के ब्रह्मचारियों के भाषण, भजन, कविताओं को सुनने एवं शारीरिक प्रदर्शन देखने को मिला।

१५. वार्षिकोत्सव सम्पन्न- २१ से २३ मार्च २०१४ को ग्राम खड़खड़ी, जि. हापुड, उ.प्र. में वार्षिक उत्सव तथा त्रिदिवसीय वेद कथा का आयोजन किया गया। उत्साही महानुभाव श्री बृजभूषण त्यागी अपने मित्र रवीन्द्र त्यागी, सुभाष, संजीव, सोनाथसिंह व ग्रामवासियों के सहयोग से वेद प्रचार का यह प्रथम प्रयोग किया था जो पूर्ण रूपेण सफल रहा। दिन में तीन सत्र होते थे जिनमें भजनोपदेशक श्री संदीप वैदिक, मुजफ्फरनगर के मधुर भजनों के माध्यम से अपना उपदेश देते थे। होशंगाबाद के आचार्य श्री आनन्द पुरुषार्थी के उपदेश वैदिक व दार्शनिक मान्यताओं से सम्बन्धित रहे। पूर्णाहुति पर ३५ दम्पतियों ने ११ यज्ञ वेदियों पर आहुतियाँ प्रदान की। वर्तमान सांसद व भाजपा के उम्मीदवार श्री राजेन्द्र अग्रवाल पूर्णाहुति के समय कथा में आकर वैदिक धर्म व कार्यक्रम के प्रति कृतज्ञता व्यक्त किये। हापुड़ आर्यसमाज के मन्त्री राधारमन, पूर्व प्रधान आनन्द आर्य, महिला आर्यसमाजी की बहनों सहित सभी ने सहयोग दिया। मंच का संचालन मन्त्री राधारमण आर्य ने

किया।

१६. न्यायदर्शन अध्यापन समापन एवं दीक्षान्त समारोह- आर्यजगत् को सूचित करते हुए हर्ष हो रहा है कि वानप्रस्थ साधक आश्रम, आर्यवन, रोजड़ में गत वर्ष २८/८/२०१३ कृष्णजन्माष्टमी से आरम्भ किये गये न्यायदर्शन अध्यापन सत्र का समापन १५ जून २०१४ को होने जा रहा है। बीस प्रबुद्ध ब्रह्मचारियों व कुछ अन्य व्यक्तियों को आचार्य सत्यजित् जी दर्शनाचार्य द्वारा न्यायदर्शन का अध्यापन वात्स्यान भाष्य सहित कराया गया। बीच-बीच में उसकी नियमित लिखित परीक्षा भी ली गई।

रविवार, १५ जून, २०१४ को न्यायदर्शन पढ़ चुके छात्रों को उनकी उपलब्धि के अनुरूप 'न्यायाचार्य', 'न्याय-विशारद', 'न्याय-प्राज्ञ' की उपाधि-प्रमाण पत्र प्रदान किए जाएंगे।

इस अवसर पर पूज्य स्वामी सत्यपति परिव्राजक, आचार्य ज्ञानेश्वर, आचार्य आनन्दप्रकाश (अलियाबाद), स्वामी ऋतस्पति (होशंगाबाद), आचार्य सत्येन्द्र (अजमेर) आदि आर्य विद्वानों के साथ आर्यजगत् के अनेक अधिकारियों एवं कर्मठ कार्यकर्त्ताओं यथा वानप्रस्थी ओममुनि (मन्त्री, परोपकारिणी सभा, अजमेर), श्री सुरेशचन्द्र अग्रवाल (उपप्रधान- सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली), श्री रणजीतसिंह परमार (प्रधान- सौराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा), श्री सुरेश चावड़ा (वैदिक महासभा, राजकोट), श्री सत्यनारायण जुईवाला (सामाजिक कार्यकर्त्ता), श्री सुभाष नवाल (कोषाध्यक्ष, परोपकारिणी सभा, अजमेर), श्री मनसुखभाई वेलाणी (प्रधान, आर्यवन विकास फार्म ट्रस्ट) आदि महानुभावों की गरिमामय उपस्थिति रहेगी।

इस समारोह में अनेक प्रबुद्ध आर्यजन पधार रहे हैं। आपसे भी निवेदन है कि इसमें उपस्थित होकर ब्रह्मचारियों को प्रोत्साहन प्रदान करें और आर्यजगत् के भावी विद्वानों को देखकर उत्साह को प्राप्त करें।

इसी दिन प्रातः ७ बजे से दो स्नातकों ब्र. रणवीर आर्य व ब्र. आत्मवीर आर्य का समावर्तन संस्कार भी होगा।

वेदान्त दर्शन का अध्ययन- वानप्रस्थ साधक आश्रम, आर्यवन, रोजड़ में ग्यारह उपनिषद् एवं तत्पश्चात् सम्पूर्ण वेदान्तदर्शन (ब्रह्मसूत्र) का ऋषि पद्धति से वेदानुकूल व्याख्या सहित नियमित रूप से स्वामी मुक्तानन्द परिव्राजक (व्याकरणाचार्य, दर्शनाचार्य) द्वारा आगामी आषाढ़ पूर्णिमा (१२ जुलाई २०१४) से अध्यापन कराया जाएगा।

इन ११ उपनिषदों व वेदान्तदर्शन अध्ययन में लगभग ८-९ मास लगेंगे। अध्ययन में रुचि रखने वाले विद्यार्थी अपना पूर्ण परिचय, नाम, आयु, पता, दूरभाष संख्या, शैक्षणिक योग्यता आदि vaanaprastharojad@gmail.com पर ३० जून तक भेजें अथवा सायं ७.३० से ९.०० बजे तक ०९४२६४०८०२६ पर सम्पर्क करें।

१७. सम्मान- आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू व कश्मीर की पूर्व प्रधाना व जम्मू विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग की पूर्व अध्यक्षा डॉ. वेद कुमारी घई को उनकी समाज सेवा के लिये महामहिम राष्ट्रपति जी द्वारा ३१ मार्च २०१४ को 'पद्म श्री' से सम्मानित किया गया। जम्मू-कश्मीर में किसी आर्य को यह सम्मान प्राप्त करने का पहला अवसर है। यह न केवल आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू व कश्मीर अपितु सम्पूर्ण आर्य परिवार के लिये गौरव का विषय है। डॉ. घई को अन्य विभिन्न प्रान्तीय, राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कारों से भी सम्मानित किया गया है।

१८. दान- काश्यप वेद संस्थान, कालीकट के तत्वावधान में नववर्ष (विषु त्यौहार) के अवसर पर सहस्राधिक लोगों को चावल और अनुबन्ध व्यंजन दान के तौर पर वितरण की गई, संस्था के २२ से अधिक सत्संग समितियाँ प्रत्येक क्षेत्र में निर्धन लोगों को यह दान दिया। इसके साथ पाँच महायज्ञों की कक्षा अब दो जगहों पर शुरू की गई। प्रथम कण्णूर, जहाँ कम्युनिस्ट लोगों का राज चलता है और द्वितीय वयनाड, जो कालीकट क्षेत्र से करीब सौ किमी की दूरी पर है, उस जगह पर काफी संख्या में लोग दूसरा धर्म अपनाते हैं।

जो नित्य पदार्थों में नित्य और स्थिरों में भी स्थिर परमेश्वर है, उस समस्त जगत् के उत्पन्न करने वाले परमेश्वर की प्राप्ति और योगाभ्यास के अनुष्ठान से ही ठीक-ठीक ज्ञान हो सकता है, अन्यथा नहीं।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ७.२५

जिस यज्ञ से सब सुख होते हैं उसका अनुष्ठान सब मनुष्यों को क्यों न करना चाहिये।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.६०

ऋषि उद्यान,अजमेर में वर्तमान में न्याय दर्शन पढ़ रहे विद्यार्थीगण ।

आर जे/ए जे/80/2013-2014 तक प्रेषण : ३० मई, २०१४ ३९५९/५९

भारत के नवनिर्वाचित प्रधानमन्त्री

श्री नरेन्द्र मोदी जी

को समस्त आर्यजनों

की ओर से

हार्दिक बधाई

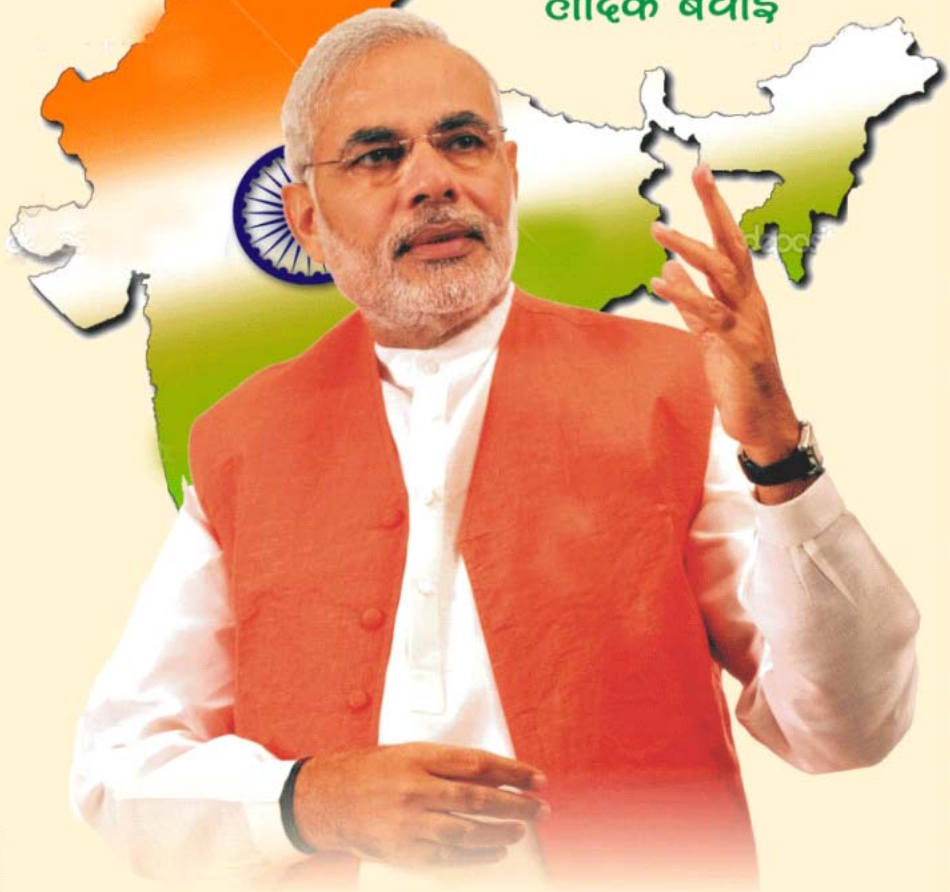

Design@ MITTAL 9829797513

प्रेषकः

परोपकारिणी सभा

दयानन्द आश्रम, केसरगंज, अजमेर

(राजस्थान) - ३०५००१

डाक टिकिट